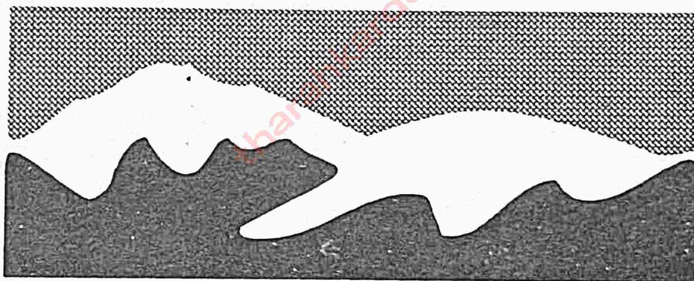
देव वाणी

(पहाड़ी भाषा कुलवी)



लेखक :

कमल कान्त शर्मा 'विद्रोही'

देव वाणी

[पहाड़ी भाषा-कुलवी]

लेखक

कमल कान्त शर्मा 'विद्रोही'

प्रकाशक :

कमलकान्त शर्मा 'विद्रोही'
जिला-कुल्लू (हि० प्र०)

卐

अधिकार :

सर्वाधिकारी प्रकाशक

卐

संस्करण :

प्रथम संस्करण—१९९५
१००० प्रतियां

卐

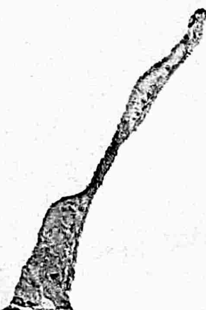
मुद्रक :

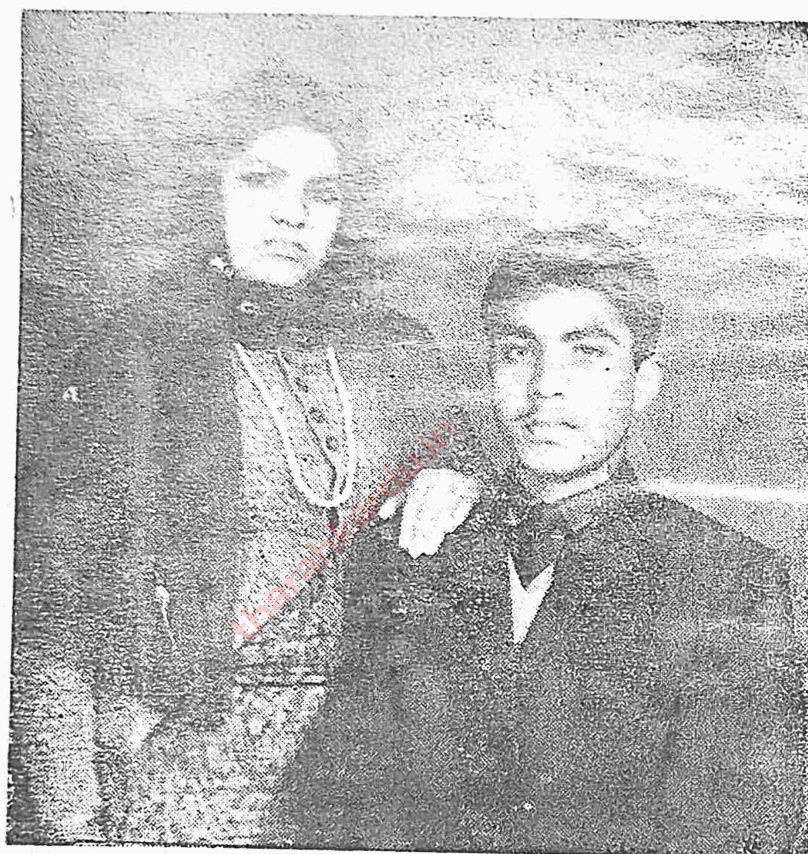
ब्रज बिहारीलाल शर्मा
बी. एस-सी., एल-एल. बी.
विद्यालय प्रेस केशीघाट,
वृन्दावन–२८११२१ (मथुरा)
☎ : (०५६५) ४४२ ५७१

卐

सम्पर्क सूत्र :

गांव चौकी (टापू)
अखाड़ा बाजार, कुल्लू,
जिला–कुल्लू (हि० प्र०)
पिन–१७५१०१
अथवा
गांव+डाकघर-शिरढ़
जिला–कुल्लू (हि० प्र०)





विद्रोही एवं प्रेरणास्रोत असीम
अर्द्धांगिनी असीमा शर्मा के साथ

सादर समर्पित

मां चामुण्डा

बाबा बालक रूपी,

तथा

प्रेरणा-स्रोत

पत्नी असीमा शर्मा

परिवार ।

(क) अगणित स्वतंन्त्रता सेनानी

(ख) परमगति प्राप्त युद्धवीर

(ग) मृत आत्माओं एवं दीन-विहीन

(घ) मातृभूमि

(ङ) ईशिता

(च) अठारह करड़ू

(देवघाटी, कुल्लू के ३६५ देवी-देवतागण)

सत्य प्रकाश ठाकुर

मुख्य संसदीय सचिव

हिमाचल प्रदेश,

शिमला-171 002.

"दो शब्द"

कमल कान्त शर्मा, विद्रोही, (वर्तमान प्रधान साहित्य कला परिषद, कुल्लू रजिस्टर्ड संख्या: १६५६-/८०), द्वारा रचित पुस्तक "देववाणी" जो कुलवी में लिपिबद्ध है, में ७२ कविताएँ १७० नए व पुराने लोक गीत, २५ प्रसिद्ध हिमाचली गीत तथा चार लघु एकांकी है। पाँच कहानियां यहाँ की सभ्यता और संस्कृति को अक्षुण्ण रखने में यह एक सराहनीय प्रयास है।

ह० सत्य प्रकाश

(सत्य प्रकाश ठाकुर)

प्राक्कथन

श्री कमल कान्त शर्मा 'विद्रोही' की पुस्तक 'देव-वाणी' को देख और पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हो रही है। यह इनका दूसरा काव्य-संग्रह है। पहला काव्य संग्रह हिन्दी में था और यह पहाड़ी में है। साहित्यकार को भाषा किसी तरह की बाधक नहीं होती। भाषा तो भावों की अभिव्यक्ति के लिए एक माध्यम है। साधक की साधना माध्यम की गुलाम नहीं होती। उसे तो वायु-वेग की तरह बाहर निकलने के लिए मार्ग चाहिए। वह किसी भी निर्गम से बाहर निकल सकती है।

परन्तु भावना का भी तो अपना क्षेत्र है। कितनी भी उड़ान भरी जाए वह किसी विशिष्ट परिप्रेक्ष्य से बाहर नहीं दौड़ सकती। अतः उस भावना की अभिव्यक्ति उस माध्यम से अधिक सबल होकर प्रसारित होती है जो माध्यम हमें माँ की गोद से मिला है। इस तरह जो भावना मैं मातृ-भाषा में बखूबी व्यक्त कर सकता हूँ वह मैं सीखी भाषा के माध्यम से सफलता से जाहिर नहीं कर सकता।

छौली खाई तेरे बांहरे-बांहरे, काऊणो खाई तेरे तोवे।
झ़ूरी छ़ूटी बोला पारलीधारेन, केण्डे हुए मेरे ते मौथे।।

अब चाहे पहाड़ी को छोड़कर कोई भी और भाषा हो यह भाव अथवा बात किसी भी अन्य भाषा से इस विशिष्टता से नहीं कहीं जा सकती।

पहाड़ी भाषा के साहित्य को दिन-प्रति-दिन उत्तरोत्तर समृद्धता मिल रही है, यह देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है। पहाड़ी साहित्य-रचना के आरम्भिक चरणों में इसके प्रति अनेक टीका-टिप्पणियों को देखते हुए लगता था कि सम्भवतः पहाड़ी-विकास यात्रा कहीं अवरुद्ध न हो जाए। परन्तु जो विद्वान् किसी उद्देश्य के प्रति सजग, कटिबद्ध और कृतसंकल्प हो वे इस तरह के अस्वाभाविक और पूर्वाग्रहों से भरे उपहासों की परवाह नहीं करते। पहाड़ी कवि और लेखक अपने उद्देश्य के प्रति वचनवद्ध थे और हैं। अतः उनका प्रयास हरदम अग्रसर रहा और आज पहाड़ी के आलोचकों को स्वयं आश्चर्य हो रहा है कि इस छोटी सी अवधि में पहाड़ी साहित्य-जगत का भण्डार खूब भर गया है और अभी साहित्य-समुद्र को आए-दिन अनेक सरिताएँ साहित्य-अमृत अर्पित कर रही हैं। भाषा या बोली किसी के बताने से नहीं बनती। सामाजिक आवश्यकता इसकी जननी होती है। परन्तु जहां भाषा या बोली को मानव स्वयं बनाता नहीं है वहां वह समृद्धता इसे अवश्य प्रदान करता है। और यदि बोली भाषा में कहीं कोई अपवाद है तो यही कि बोली का समृद्ध रूप भाषा है।

अतः भाषा के विकास में साहित्यकारों के योगदान को कौन ठुकरा सकता है? क्या यह ऐतिहासिक तथ्य नहीं है कि वाल्टयर तथा दान्ते की भाषा एक बार टिब्रिस के समीप पहाड़ियों पर झोंपड़ियों में रहने वाले कुछ किसानों द्वारा बोली जाती थी। दान्ते और वाल्टयर जैसे साहित्यकारों ने झोंपड़ियों की उस बोली को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की भाषा के रूप में ला खड़ा किया। ऐसे उदाहरणों के दृष्टिगत पहाड़ी का साहित्यकार कभी हतोत्साहित नहीं हो सकता है!

श्री विद्रोही का यह काव्य-संग्रह पहाड़ी साहित्य जगत के लिए अनूठी देन है। आशा है इसे साहित्य जगत में पूर्ण सम्मानित स्थान मिलेगा।

भवदीय

हस्ताक्षर

(एम. आर. ठाकुर)

दिनांक २२-७-९५ सेवा निवृत उप-निदेशक भाषा व संस्कृति,

देवप्रस्थ भवन, कुल्लू

卐卐

दूई-गला

卐

मेरा ऐ पहिला प्रयास सा।
पता नी ठठा सा, मज़ाक सा ।।
गौंई गौंई नौऊं वां विचार सा।
ऊंई केरिया विरोधाभास सा ।।

मूर्ति पूज़ा पांधै विद्रोह केरू।
'स्वामी'रा चित्र छापणा परिहास सा ।।
ख्यालाता रा हेरा शुणा केरू मैं।
विरोधाभास भौरुआ इतिहास सा ।।
ज़ी दोषा रा हाऊँ पुतला सा।
सलाह-सूत्र देलै विश्वास सा ।।
ज़गा, ज़गा बोली-भाषा बदला सा।
हरेकी निःश्वासान बुरी बास सा ।।
शास्त्री ज्ञानी ध्यानी वेद ज़े वी सी।
भ्रान्ति दूर केरलै मुँभै आश सा ।।
कताव मेरी एतरी घटिया निकली थी।
भाषा अकादमिए वापश केरिंदी सा ।।
'विद्रोही' री तैंईयें सृष्टि गुरु सा।
कणा,कणा न चिति शक्ति रा वास सा।।

तुकबन्दी 'विद्रोही' री ऐण्ढी लागा सा।
खरी, ता स्थिर बुद्धि, ख्यालाता रा ह्रास सा ।।



वाणी वे, ज़ाद ख्यालाता री तैंईऐं ।
छन्द, अलंकारा रा प्रयोग बेकार सा ।।
शुणा 'ज़ण्ढा राज़ा तण्ढी प्रजा' ।
नी सुधरैं समाज दोष कुणी रा ?

आसरी खोपड़िए ज़ब्रै खराब होआ सा ।
तवै अंगा बै दोष देणै रा की तुक सा ?
खोपड़ी ज़ैण्ढा, ज़ैण्ढा हुकम फरमाणा ।
अंगा ता सौए कौम केरदैं ज़ाणा ।।

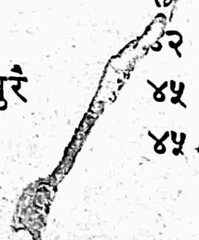
ज़ुणा लोका ज़बै प्रशासका वैं सही रस्ता दसा सी ।
हतैंदै प्रशासक तिन्हा वै तबै मकाई कौढा सी !!
जनता वै आपणी राय देणै रा अधिकार सा ।
भूल सुधार केरै ज़ुण सौ असली सरकार सा ।।
सोढ़ी-टोपी कुप्रशासना रा उका केरना आसा ।
तभै असली ज़ादी सा ऐहै 'विद्रोही री अर्ज़ सा ।।
झ़ै वौहरदै देऊ-देवी मुँभै इन्हा पेहरू चढ़ाइया ।
ता डांहदा हांऊ तिन्हा वै क़साई रै घौरा सज़ाइया ।।

कुल़वी रचना रा अंश समर्पित ।
भूल चूक, नीत हित क्षमा अर्थित ।।

हौछी नहिंदैवै ।
राह दसैई मां ।
'कमल' 'विद्रोही'वै ।
वौर देई मां ।।

स्थान : ठारा करड़ , (कुल्लू) कमलकान्त शर्मा 'विद्रोही'

ताली (सुची)



नये व पुराने लोकगीत



१. अर्ज (प्रार्थना)

श्रीगणेश महाराजै री जैकार हो।
किरपा केरा अन्ना-धना री फुहार हो।।

× × × ×

माँ सरसूती विद्या, ज्ञाना री भण्डार।
गरीबा-गुरबा संघै तेसा बै प्यार।।

× × × ×

लक्ष्मी री की केरनी गल।
सुर्ग बणाआ सा जल थल।।

× × × ×

शक्ति रा रूप सा ऐं काली माँ।
बैरी रा नी रौंहदा नाँ नशाँ।।

× × × ×

त्राई शौऊ शौठिया-पौज, देऊ देवी रा कुलू सा घौर।
ठारा करड़ू एक सा नाँ तिन्हा रा, देया सी सेभी बै बौर।।

× × × ×

बाबा बालक रूपी री को केरनी गल।
तेईरी किरपा रौहा सा सदा जल थल।।

× × × ×

माँ चामुण्डा सा चण्डी रा रूप।
कदी नीं औड़िदी तेसरी धूप।।

× × × ×

पित्तर परमेस्सरा।
चौहरा सी केसर।।

卐 'ॐ तत्सत्' 卐

२. ज़ब्बर राष्ट्र (मुल्ख) कुण

सुन्हा, रूपा नैंईं,
माँह्णू लोड़ी तूंईं री तैईं।
तौखलै लौका वै उत्थड़ा नैणै-
ता ताकती आला बणाणै-
बै सिहाँ सेंहीं ॥१॥

ते माह्णू सत्त तपारी तैइयैं,
ज़ब्बरा संघै मुकाबला केरा सी।
एक चूंज़ एक पाँख केरिया रौहा सी।
ता मौरणं ढौई विपता झेला सी।
हारदै-हैफ़दै नैंईं ॥२॥

भादर माँह्णू क़िर्श केरा सी।
ज़ैबै झ़ै हौरा नींजा न सोइया रौहा सी॥
ए गोली-बरूद छाती पाँधै सौहा सी।
ज़ैबै झ़ै हौरा जँगा न मौरने री डौरै-
लड़ाई हागै न भैंगदै हौआ सी ॥३॥

ऐंढै एऐ लोका आपणै मुल्खैं री नीऊँ
वोहू डुघी कोतिया भौरा सी
झ़ै चुटी नी लौड़ी ढौली नी लोड़ी सीऊँ
नेया सी सर्गा ढौई-
देश हुआ नी लोड़ी बर्बाद।
पीढ़ी बरशोड़ी बैं रौहली याद ॥४॥

३. परमेशरै री पूज़ा

भात होंदा उदास !
किबै डाहा सा पुआस ।
माहूँ कमोड़ी बै हेर ।
खाइया-पिइया किर्श केर ।।
करवा न लख बणा ।
आपु खा होरी बै खिया ।।१।।

ऑंख नी केरनी-भुखैनी रौहणा ।
एसा गरीबी रा दु:ख नी सौहणा ।।
ए सा सभीन बड़ा श्राप ।
उंई ढोई नी आथी पाप ।।
किर्षा ढोई नी आथी पुन दूजा ।
एहै सा परमेशरै री सच्ची पूजा ।।२।।



४. ओ ज़िमीदारा (गीत)

उठ ता उठ ओ ज़िमीदारा ।
देश सा शोभला म्हारा ।।........

घौणे ता घौणें पौए ज़ंगला ।
ए ता सी हिमाचलै रा सहारा ।।........

हेरा ता हेरा लोको नज़ारा ।
उत्थड़ी-निष्टी धारा ।।........

बेल्है ता नी बेशणा आसा ज़िमिदारा ।
ऐंढै ता ऐंढै लो होणा नी गुज़ारा ।।........



इन्हा वपारिऐ लोलुटु देश सारा ।
देशा बै ज़गाणैं रा लाआ तुसैं नारा ॥......
तुसा रा ता सा ऐबै ।
लो आसा बैं सहारा ॥........
ढोकण डाली सा तू ज़िमिदारा ।
फौज़ी की सा आसा रा सहारा ॥........
उठ ता उठ ओं ज़िमिदारा ।
देश सा शभला म्हारा ॥ ....



२. राष्ट्र गान

सभी मनुखैं रैं मना रा राज़ा ।
भारतै रैं भागा रा दाता ।
तेरी जैं जैं जैंकार हो ।
तौभैं फुलै री फुहार हो ॥१॥

जम्बूदीप, आर्यवर्त्त, भारतखण्ड ।
चार धाम, गंगा-यमुना गोदावरी ।
कैलाश कन्यकुँवारी तेरं अंग ।
शुचो लहर बहर धौंत माटी संग ।
शुभैं शघनै सभ सीं जागा ।
धन धन तेरैं-तेरैं भागा ॥२॥

तेरा शेष सिराला कलेश ।
हे या तेरी जैं जैंकार हो ।
हौथड़ू ज़ोड़िया बार-बार हो ।
कुंग-केसर धूपै बेठरै बाजैं-गाजैं ॥३॥

भाखै, शोंघै, नरशिघै करनाली संघै ।
नरेल, सोट, बोबरू सझिउटियाँ सूंघै ।
आसा सभी री मिलिया ऐ पूकार हो ।
ओ या तेरी जैकार हो! अणगिणत बार हो ।।४।।



६. कव्वाली (१)

देश रा म्हारा गुलाबा रा फूल ।
ओ ऊँई रा पौहरा पाणा आसा ।।
झीफ-झौंकहू पेचिया शेटणै ।
ठण्डड़ा पाणी दें दै जाणा आसा ।।
देश..

पेशणै नी देणै चौरा भीतरै ।
इन्ह री सूह आसा लाणी ज़रूर ।
पैहिलै बी लुट्ठु ऐ परदेशिए ।
थी आसा न आपणाए क़सूर ।।
देश..

हौसदा-खेलदाऐ रौहू लोड़ी ।
अरज़ सा म्हारी हौथड़ु जोड़ी ।
थोसणै नी देणी पाँखड़ी ऊँई री ।
दिहाड़ी राती पौहरा देणा आसा ।।
देश..

डुघै नालान तीतरू-चाकरू ।
पौधरी धारा न चुगदा मोर ।

छापुइया बेठैं दै सी ऊँईं बै।
बोहू राती दिहाड़ी रै अ चोर।।
देश.............................. ......

एकता केरी नी ज़ाणी थी आसै।
झगड़ने बै थी आसै मशहूर।
भगियालं री झीकै परदेशी शाधै।
आपणै-पराए सब केरै दूर-दूर।।
देश ....

मैसै-कैसै साज़ादी पाईं दी आसै।
मिलिया रौहा केरा करतूत।
पलफा नी ऊँईं बै पौड़ने देणा।
ओ हिकड़ू संघै लाँदै ज़ाणा ज़रूर।।
देश...

जुग जुग बौरझदा डाहणा आसा।
बौडंदै ज़ाशा सदा फूल पतासा।
देश सा म्हारा गुलाबा रा फूल।
ओ ऊँईं रा पौहरा पाणा आसा।।
देश.............................. ....



७. कव्वाली (२)

देश सा म्हारा गुलाबा रा फूल।
उँईं री शोभा वढाणी आस।।
आसै सी ऊँईं री पाँखड़ी, पाँखड़ी।
ऐ सुन्है-रुपै सज़ाणा आसा।।

थोसणै नी देणी पाँखड़ी ऊँईं री ।
पौह्पा ऊँईं रा केरना सा आसा ।।
सारी दुनिया रा राज़ा बणाणा ।
सेभी न आगै औढंणा आसा ।।
पल़फा नी ऊँईं बै पौड़ने देणा ।
ज़ानी बी ऊँईं बै देणी आसा ।।
जुग-जुग हौसदा-खेलदा रौहू लोड़ी ।
ऊँईं री अर्ज़ केरनी आसा ।।
मिलि जुलिया रोह्णा आरा ।
झ़िक-मिष नी डाह्णी आसा ।।



८. क़व्वाली (३) [गीत]

देश सा म्हारा सभीन शोभला ।
सेभी न उत्थड़ा सेभी न ज़ानी ओ।।
शोभलै आखलै मौशम मौशम ।
ठण्डड़ा सा ज़ायरू वाणी ओ ।।
नोखै, नोखै तीतरू-चाकरू ।
माह्णू सी सून्है री श्वानी ओ ।।
भान्त न, भान्तै लोका आखल़ै ।
देलै परदेशी बै वी ज़ानी ओ ।।
जुण वी परदेशी आए औखै ।
पाहुणै साही ते डाहै ओ ।
एबड़ा बशाह केरु तिन्हा पाँधै ।
कुन्ज़ी शहाणै वी धीनै ओ ।।

जुगा जुगा ढोई तिन्है लूटै आसै ।
फिरी वी हौथड़ू जोड़ी भगाए ओ ॥

ऋषि-मुनि रा देश सा म्हारा ।
सिभै मनुख सुखी बणाए ओ ॥

सुर्ग सा औखली धौर्त-माटी ।
परभेशरै जन्मभूमि ओ ॥

शेर सा म्हारी माँ रा बाहण ।
शेरा साही सब बणाणै ओ ॥

लागा थी ग्रौहण देशा बै म्हारै ।
ऐबै सदा, सदा बै भगाऊ ओ ॥

निहारी रात थी बिहाई नौठी ।
आई भ्याणू तारे री बारी ओ ॥

राहू राक्षा रा राज़ नशाऊ ।
एबै राम राज़ै री बारी ओ ॥

सेभी मिलिया किर्ष केरनी आसा ।
धियाड़ै नी बेशिया सकाणै ओ ॥

एकी बागै रै सी चीड़ पंखेरू ।
आसा सेभी मिली-मिलिया सजाणा ओ ॥

कमी बी आथी आसाबै कौसी गैलै री ।
एजा ढोल-ढमाकै नोचणा-गाणा ओ ॥

मेली संघै बोला नोचणा सेभिए ।
एकी शौंचै (भाखा) संघै-संघै गाणा ओ ॥

९. पिछैं ता नैंई रोहणा

(गीत तर्ज फुल्कै चाणै विरिए)

पिछैं ता नैंई रोहणा।
देशै रै भाइयो।
आगै औंढदै जाणा। पिछैं ता..........।।

बेल्है ता नैंई बेशणा।
देशै रै लोको।
भूड़ी कैंरिया खाणा। पिछैं ता..........।।

अनपौढ़ ता नैंई रोहणा।
मेरै भीण्ण ता भाइयो।
चौला पौढ़दै जाणा। पिछैं ता..........।।

झिगटा न ता नैंई रोहणा।
एई देशै रै लोको।
थोहड़ै शोहरू जीणा। पिछैं ता..........।।

भुखै ता नैंई रोणा।
मेरै देशै रै भाइयो।
बोहू चाज पुजाणा। पिछैं ता..........।।

१०. होछै २ पाणी रै टिपणू

होछै होछै पाणी रै टिपणू।
ला होछै २ रेती रै किशा।

बणा अ सी अथाह समुद्रा बै ।
ता भान्ति २ रै लुड़बड़ादैं प्रदेशा ॥१॥
होछै २ पुतै रै कौम ।
होछी-मिठड़ी झुरी री गैला ।

बणा अ सी धौर्त-मार्टी बैं सुर्ग ।
ज़ैण्ढा उझै सर्गा रा जुग ।
होछै २ मिठड़ै बोल बोलणैं आला ।
सभी रै मना बै भीतरै न मोही लैला ॥२॥

आसै पाथर मारा सी काऊड़ै बै सभै ।
शुणदै रौहा सी-कोयल बोलली कैंबै ॥
अर्ज़ केरा सा 'कमल' हौथ जोड़िया बार-बार ।
ढुणा-टुणा झुरी संघै-मोही लैया संसार ॥३॥

गोंठी न बौन्हणै रीतैइंयै तुसा सभी रा धन्यवाद ।
भारत देशै री जुग-जुग हुई लोड़ी सा जै जै कार ॥
झोंख झिक मिष केरा सा बरोबाद ।
झूरी न बड़ी नी आथी कोई सरकार ॥४॥



११. कुणी केरनी नगरानी ओ

ओ म्हारे देऊवा बोला शिवजिया ।
रखराहली हेरिया आऊ रोणा ओ ।
सिभै लोका बोला निकतै आगै ।
उझी रै झेचै हेरिया ज़ीणा ओ ॥

पिठी न पाऊँदा हेरू छिड़ी रा भरोट्टू ।
चामा संधै अप्ला-हिका न याणू ओ ॥
ओ म्हारै देऊवा ……………………

धाळी न छिड़ी रा भरोट्टू कछेऊ ।
बुन्है खाड़ै बज़ारा बै नेणा ओ ॥
ओ म्हारै देऊवा……………………

नाँगी टाँगै बोला ठुरदी लागी ।
पाथरू २ पाँधै जणा ओ ॥
ओ म्हारै देऊवा……………………

बौरदै हिऊंआन पेशदी लागी ।
घौरा नी आथी नाज़ै रै दाणै ओ ॥
ओ म्हारै देऊवा……………………

कैबै छिड़ी बिकणी सा तेरी बिन्द्रा सुतीं दी सा ।
कैबै तौ घौरा पुजणाँ कैबै खाणी क्वार-ब्याळी ओ॥
ओ म्हारै देऊवा……………………

शिवज़िया बिन्द्रा तेरी बिहणी टौल्है सा भुखी सा ।
ढौळदै घौरै री बिथा-कुणी केरनो नगरानी ओ ॥
ओ म्हारै देऊवा बोला शिवज़िया……………………

खराहली हेरिया आऊ रोणा ओ ।
सिभै लोका बोला निकतै आगै ।
ऊझी रै झेचै हेरिया ज़ीणा ओ ॥

○○

१२. सुन्हैरी खानी

(गीत)

सुन्है री खानी थी सेऊऐ रै बगिचड़ू ।

कुणी बमारिए ए नशाए ओ ।।........

स्कैब बोला सी बोला एसा बमारी बै ।
घुड़ी पाँधै जुण्एि बशाए ओ ।।........

सेऊ चोड़िया केरा 'युरियै' री स्प्रेया ।
पौचा दया फुकी-जाली ओ ।।........

कौहरू पाँधै केरा डायफलटाना बै ।
'वैवस्टिनै' लैया फूला बचाई ओ ।।........

हौरै फौला न छिड़का एमजैक्सटिना बै।
खानी लैया तुसै बचाई ओ ।।........

पन्द्राह २ रोज़ै केरा इन्हा स्प्रेया बै ।
फौला लैया तुसै खाई बकाई ओ ।।



१३. घौरा रा बज़ीर

शोभली बेटड़ी घौरा रा वज़ीर ।
ब्याहू बै फैंमड़ा-लिढा बै खीर ।।
खटदा-कमौंदा तौ ब्याहू लोड़ी ।
रात धियाढ़ खड़ा हौथड़ू जोड़ी ।।

लिढा डाही-डाहिया रौज़ी निःछी।
कौसी रैं निःछा तेरा चेकड़ू चोड़ी।।

रोज़ रोज़ जाचै री लोभण।
बिहा वौर्षा न हुई नी गौभण।।

सदा नी रोहणा जवानी रा ज़ोर।
फिरी २ नी मेलणैं लिण्ढ बी होर।।

धिख ज़ीणै रा केर किछ़की धोर।
जवानी बै हौआ सी निहरै चौ़र।



१४. बाँका सराज

बाँका म्हारा सराज़।
मौखरैं भौरुए बोल।
रौज़ी पुज़िया नाज़।
बाँका म्हारा सराज़।।

धारा धारा पाँधैं विज़ली।
गौऊँणी गौऊँणी उजली।
घौरा घौरा लुड़बड़ादीं नार।
बाँका म्हारा सराज।।

उझै घेरुवी-फेरुवी सड़का।
बुन्है ज़ुआना-ज़ुआनी री भड़का।
फेर फिरदी मोटर कार।
बाँका म्हारा सराज़।।

घौंणै घौंणै ज़ंगल ।
मिल्दी भिड़िदी धारा ।
देऊआ-देवी रा राज़ ।
बाँका म्हारा सराज़ ।।
दोतकी झुणा बार-बार ।

भेड़ा बौकरी चार दी ।
ऊना कौतदी नार ।
बाँका म्हारा सराज़ ।।
हौरैं-भौरैं जंगल पौज़णू माटी ।
उथड़ै-निष्टै घौर, मिठड़ी भाखी ।
बालु-ब्लाक चन्दरहार द्वार द्वार ।

हांइए झुरिए बाँका म्हारा सराज़ ।।
चेकैंन गौघरी शिरा न धाठू ।

छैली २ औंढदी उबार-पार ।
भली माँहणू री ज़ात ।
बाँका म्हारा सराज़ ।।



१५. आगैं पिछैं वी हेरा

सोची समझिया औंढा भाइयो ।
आगैं पिछैं वी हेरा ।।
सभै देश निकतै आगैं ।
तुसै दोहरै फेरा ।।

एक ता दाऊए मुकदमें री आज़त ।
दुजे लुगड़ी शराबा रा जोरा ।
किबै लाई ज़िमो बेचणी तुसै ?
किबै होदें लागै छड़कदे तुसै ?
होछी २ गला पाँधै–
किबै लागै भड़कदे तुसै ?
लिखे-पौढ़ें दे लोका वै वी किछ हेरा ।
तिन्हरी संगती रा वी किछ ता जतन केरा ।।
सोची समझिया औंढाड़ै भाइयो ।
समा सा बुरा-आगै पिछै वी हेरा ।।
लुटणै लाए परदेशी लोकें ।
बोहू ढैबुए देई देइया ।।
ज़िमी माँ बेचिया बसताण सा तुसा ।
घौरा न लाणै सी कौढ़ी-होणी सा आइया देइया ।।
बेंहदे किबै लागै इन्हा रे मुजारै तुसै ।
हाज़ी वी आपणी ज़िमी वापस फेरा ।।
चाहा सी तुसै अगर रकमें री ढेरी-
चुथै लाइया आपणै वीता हेरा ।।

छोड़ा इन्हा पुराणी चाला, लुगड़ी शराब ।
बुद्ध केरा-सुध्र फेरा किबै होआ सी खराब ।।
सोची समझिया औंढा हिमाचली भाइयो ।
समा सा बुरा आगै पिछै वी हेरा ।।
होछी उम्बरा न ब्याह केरिया ।
किबै शोहरू लाए नाला न पाणै ?
इन्हा उफशदी कौली मठेलिया ।
बासा आलै फूल कौखे न होणे ?

माता ज़ौणदै शोहरू री ढेरी ।
इन्हा कराणी सा तुसा न फेरी ॥

एक दूई शोहरू हौआ सी खरै बुढै ।
ज़ैण्ढै दूर २ लाए दें फुलै रै (पौधै)झुटै ॥

चोच नी मीचा न कतई खरै आथी ।
ज़ाजाता पिछ़ै पाआ सी धूमानाटी ॥
नुहशा बेटे बेशा सी सदाए जुदा होइया ।
सयाणिदी घेरै मीचाए केरा सी घासी पासी॥
चोच मीच होआ सी एकी कुछी रै ।
प्यारै-कप्यारै रा भेदु, माँ छुछी रै ॥

बोहू शोहरू हौआ सी ज़ानी बै दाँधै ।
एका झौटिदै ता एका धरकदै डाण्ढै ॥
ज़िमी नी आथी पौज़णू तुसरी ।
कौन देणै इन्हाबै नाज़ै दाणै ?
माता जोचदै इन्हाबै तुसै हेरा ।
इन्हा बोछू न ध्यादें माता लेरा ॥

हौरी एसा खुइदी पाँधै तुसै ।
माता गृहस्ती रै ज़ोला बै फेरा ॥
सोची समझिया औंढा ।
हिमाचली भाइयो ॥
समा सा कतई बुरा ।
धिख आगै पिछ़ै वी हेरा ॥
माता ढाबदै बोहू ज़ोई बै तुसै ।
हौरी री शोभली लाड़ी री रीशै ॥

माता ज्ञालदे जवानी रे भुज्ञा वे।
इन्हा पड़ेगी री रोज को झिके।।

शोभली जवानी सा दराले री ओग।
ऊँई बै छिपि या नोड़े वणदा किछे।।

बेटड़ी वणी ऐबै इन्दिरा गान्धी।
माता बुझदे इन्हा बै टाटी नाम्धी।।

बेटड़ी पीढ़ली टब्बर पीढ़ला सुर्ग बणांली हाँज्री।
बेटड़ी दुर्गा रा रूप, पढ़ा-लढ़ा, डाहा हौसदी-गाँदी।।

ठीक बोला सी सयाणे आसरे।
रोहणा नी बेटड़ी डै बासरे।।

"बोहू ज्रिमी हौआ सा हसला खाँदी।
ता बोहू जोई हौआ सी खसमा खाँदी।।"

"एकी बै सूट। होरी बै बूट।।
ऐसा बै देणी तुसा मृदड़ी।
ता मुँभै देया सोथैरी टिकड़ी।।"

जां खसम एको रे फेरा।
तां पोरिए दुजी री लेरा।।

नैई डै सवाहे नैई डै जाती तू राटू।
मनापे री नैई ऐं रुभ बी काटू फनाटू।।

औफख, चौण्ड सबेला कबेला।
बोहू जोई चौका सी सचिए घेरा।।

सोची समझिया औढा हिमाचली भाइयो।
समा सा बुरा जमाना नी खरा आयै पिछे वी हेरा।।

१६. देशा सौरदै ज़ाणा

(गीत)

ज़ाणा मास्टर कमल कान्ता ।
देशा सौरदै ज़ाणा ओ ।।
सेभै देश बोला निकतै आगै ।
आसा पिछैं नी रौहणा ओ ।। ज़ाणा.......
ज़ैंगा, ज़ैंगा खुलै स्कूल ता कालिज़ ।
आसा पौढ़दै ज़ाणा ओ ।। ज़ाणा.......
देश लुटु बोला नौकर शाहिए ।
ऐबै धोखा नी खाँणा ओ ।। ज़ाणा.......
पौढ़ी-लिखिया बडड़ै बैणा ।
केरा देशै री सेवा ओ ।। ज़ाणा.......
नाज़ हुआ माँहगा माँहगा ।
कशी कशी नाज़ पुज़ाणा ओ ।। ज़ाणा.......
लोहू पीऊ सेठै-शाहूकारै ।
घौणी निंद्रा छौड़ा ओ ।। ज़ाणा.......
पुराणी चाला छौड़दै ज़ाआ ।
नौंऊएं रैस्ते औंढा लो ।। ज़ाणा.......
देश खाऊ ऐसा सोढ़ी-टोपिए ।
पौढ़ी-लिखिया सधेरा ओ ।। ज़ाणा.......
बोहू चारा ज़ानी बै दाँधा ।
एक दुई शोहरू ज़ोणा लो ।। ज़ाणा.......

१७. सर्गा रा तारा

(गीत)

उझै ता चमकू सर्गा रा तारा ।
जुन्है हिमाचल सारा लो ।।........
डुघै नालान चीड़ू–चगारू ।
उझै छित्ती हिऊँए री धारा लो ।।........
घौणै विझू वौणा न वेशिया ।
झेरा सुर्गा रा बधिया नज़ारा लो।।........
ऐसा चलौणी न तीतरू-चाकरू ।
ओरली-पोरली धारान वीणा लो।।........
सीधै-साधै सी ओखरै लोका ।
कैण्ढा शोभला शोभला ज़ीणा लो ।।........
लोका बै दैया तुसै बगिचड़ू लाणै ।
आसा भाज़ी-शाग पज़ाणा लो ।।........
फौला खाइया डाण्ढ नी भौरिणै ।
बाह्हा नाज़े रै दाणै लो ।।........
भाव-भतै माँहगै केरने आलै ।
होलै दुही होछी रै काणै लो ।।........
आसानी बोला चाकरी केरनी ।
रलिया कारोबार चलाणै लो ।।........
पारटी बाज़िए देश नबाड़ू ।
संघनी इन्हारा डाहणा लो ।।........

१६. कुल़ॢ री शान

कैण्ढी शोभली सा कुल़ॢ रीं शान ओं ।।
देउबा-देवी रा केरा तुसें मान ओं ।।
जैंगा २ सी ऋषि मुनि रैं स्थान ओ ।।
कैण्ढी शोभली सा कुल़ॢ रीं शान ओ ।।
केरा तुसें सेभिए इन्हा रा ध्यान ओ ।
कैण्ढी शोभली सा कुल़ॢ रीं शान ओ ।।
रामचन्द्र सी ठारा करड़ॢ रैं राज़ैं ।
मौथा टेका सी सेभै तिन्हा हागै ।।
विदा दअमी बै बढ़ासी इन्हारा मान ओं ।।
सीखा लोको देऊवा-देवी रा ज्ञान ओ ।।
फुलै फौलैं अना-धनैं नाज़ैं ।
बाज़ै-गाज़ैं सेभी सहाज़-बाज़ैं ।।
फुला रा डोल्हरू सा कुल़ॢ महान ओं ।।
कैण्ढी शोभली सा कुल़ॢ री शान ओ ।।
पेशिया औखें कोई नी नौंशदा ।
करिश्में हुई दुनिया हैरान ओं ।।
कैण्ढी शोभली सा कुल़ॢ री शान ओ ।।
दऊआ देवी रा केरा तुसैं मान ओं ।।
देश सा हीरा-भौरा, चोखा-चारा कुल़ॢ म्हारा ।
अमृत सा जम्रू-पाणी गाथा गान्दी व्यासा ओं ।।
प्रदेशी री हिका जोल्दी लागो शुणी आखली भाखी ।।
देऊआ देवी रा पौहरा म्हारा हारे कोई नी आथी ।।
माता वेचदें ज़िमी जैंगा तुसैं कुल़ॢ रैं भाइयो ।
औज़नी शुहई लागणै सी तुसाबै बसतावै ओं ।।

कैंढी शोभली सा कुलू री शान ओ।
दैऊआ देवी रा केरा तुसै मान ओ॥
कुलू रा सेर पाणी खाणे आलै ओ।
माता छौड़ै ! कुलू री बोली बै बोला॥
'जैण्ढा देश तैण्ढा वेष' ऊँई बै तोला।
पिछली घेरा बसताइणा-होणी सा बोली ठोला॥
कुलू धौरे रै पौढ़े लिखैं दे लोके।
छौड़नी लाई आपणी कुलू री बोली॥
आपणी सभ्यता संस्कृति छौड़िय औखे।
कुल घौरै तरक्की कौखेन होली ?
बाहरलै लोकैं नी छोड़दै आपणी बोली।
आसै बोला सी तिन्हरी धौरै री बोली॥
पौढ़े लिखैं दै आपणी बोली बोलणै री।
बड़िए औहुज़ लौज़ बुझणी लाई॥
जुणी लिपड़ी-शिपड़ी याए होछै न बैडै केरै यारो।
औज़ सौए जन्मज़ाई घौरान तुसै खौलहणी लाई॥
कुलू रै लोको केरा आपणी सभ्यता संस्कृति रा मान ओ।

बिसरदै माता आपणी पछियाणा-ड़ाहा कुलू री शान ओ॥



१६. महात्मा गाँधी री आत्मा

(गीत)

रौंदी लागो महात्मा गांधी री आत्मा।
हेरी इन्हा लोकैरी हेरा-फेरी ॥ रौंदी……

एकता भाव भत्ते चढ़दे लागे ।
दुजे इन्हा लोके री हेरा-फेरी ।। रोंदी·······
ओ गरीब लोका ता पिशिदे लागे ।
माँहगे माँहगे नाज़ा हेरी ।। रोंदी·······
ओ घिऊवा तेलान चर्वी आलू ।
शोभले नाज़ान माटे री ढेरी ।।
ओ पापा-पुने रै रैस्तै खोऊए ।
हेरी लोकैरी रिश्वत्ता खोरी ।। रोंदी·······
रोंदी लागी महात्मा गांधी री आत्मा ।
हेरी इन्हा लोके री हेरा-फेरी ।।



२०. विदाई गीत

खुशी खुशीए विदा होआड़े भाइयो ।
खुशी खुशिए विदा ।। खुशी·······
तुसै ता चौले पौढ़ी ता लिखिया ।
माँहणू ता बैणिया·················
ओ भाइयो आसा बै रस्ता दसा ।। खुशी·······
पौढ़ी लिखिया बैडड़े बैणा ।
केरा देशा रा भैला ।
ओ भाइयो केरा देशा रा भैला ।
खुशी ·································
क्रिषे केरिया ज़ियाड़े भाइयो ।
देश उत्थाड़ा नेहा ।
ओ भाइयो देश उत्थाड़ा नेहा ।
खुशी ·································

आपणै होथा रा कौतुआ लाणा ।
आपणै छेता रा खाणा ।
ओ भाइयो एई हुन्दरै ज़ीणा ।।
खुशी ....
पौढ़ी-लिखिया शोभलै वैणा ।।
होला शोभला ज़ीणा ।
ओ भाइयो देऊवा देवी रा ज़ीणा।
खुशी..................................



२१. देश बणाणा

देश बणाणा ओ मेरै सैंथियो ।
देश आपणा बणाणा ओ ।
देश ....
झूठ नी बोलणा ओ मेरै सज़ना ।
देश आपणा बणाणा ओ ।
देश..................................
सेभै देश बोला निकतै आगै ।
माता ज़ीन्दै बोला आपणै भागै ।
आसा पिछ़ै नी रोहणा....... ।।
लुगड़ी शराबा न डुबदै लागै ।
मोंझ़-नौई न रूढ़दै लागै ।
विष आसा नी पीणा .... ।।



२२. समाजवाद

कैंढा हुआ ए म्हारा समाज़वाद ।
तौपणै लाए ईश्वरीय अधिकार ।
नेतैरी मौड़धूड़ चोल्ही पांधे ।
गरीबै रै शोहरू भुखै डाँढै ।
खर बा रा खर्च शमथानी पांधै ।
खुर्सी पांधै बशाए ज़ानी खांदै ।।
बोटै री तैंइयैं पाआ री लड़ाई ।
लोहू रै नालै बगा सो हे महामायी।।
करिवए न लखिए, निपट झूठै वचन ।

डिण्ढ स्वाँग, फुकि ज़ालिया 'भारत रतन'।।
देशान बेनामी ज़ाज़ात विदेशा न धन, धना धन ।
एका होरी बै बोदी लाआसो झूठै इन्क्वारी कमीशन।।

लीडर म्हारै परमेशरान बधै ।
माँहणू रा रूप भिजू रै गधै ।।
निष्टै उत्थड़ै केरै उत्थड़ै निष्टै ।
देश नवाड़ू वोटै री किश्तै किश्तै।
लीडर-प्लीडर अफसर हार्टी-आलै ।
सब सी पौंएदै जनतै रै द्वालै ।।
चोर लफंगै बणांएदै ज़ानी न प्यारै।
भूड़ी केरने अम्लै दियाऊंणै गोस ग्वालै ।।
एकी देशान सी ज़ुदा ज़ुदा कनून ।
वोटा पिछै केरा सी भाई रा खून ।।

गिरजे मन्दर मस्जिद गुरुद्वारे।
सब सी लोकावै ठगणै आले ॥

जादी न ओरू जनता पांधै कर्ज़ा चढ़ाऊ।
सौड़ी सौढ़िया आपणाए डाण्ढ बढ़ाऊ॥
औठ बिहा दूई हंज़ार करोड़ रा कर्ज़ा पाऊ।
एंदी पीढ़ी बै नी डाहू उठणै रावी यहाऊ॥
टिक्सै, टिक्सै चोड़ी कियाड़ी।
धर्मा पिछै खोपड़ी फाड़ी॥
खुर्सी पिछै बोहू रा खून–
'थोड़े री यारी' ऐ गप सा माड़ी।
एकी देशान दूई कनून–
हाज़ी वी नी तुसै बल फियाड़ी॥
आपणी पारटी रै राज़ा न–
खाई पिया कधी धुम मचाणी।
ता होरी पारटी रै राज़ा न–
लोहू रै नालै गरत दियाणी।
मारी कुटिया, डराइया धमकाइया तुबकी संघै–
धाँबड़-धुसड़ी पाइया नोटा संघै वोट कमौणै।
खून खराबा चिकड़-चाभड़ पाइया ज़ानीन सकाइदा–
दारू सतांवा लाइया प्रतिद्वन्दी रै घौर उजाड़दे॥
पारटी आलै सीता सेभै चोर।
भाइयो पौंज़ा पौंज़ा वौर्षा वै।
ऐबै देया तुसै इन्हा बै वोट॥
इतौंदी पारटी बै।
तभैतर एणी सा होश।
ताँ घटी नी होणा सन्तोष॥

उठा मेरै देशै रै लोको ।
ऐबै आपणै चेकै बै बोन्हा ।
होश केरा, इन्हा परास्ती री मुक्ति केरा ।
की दोती की सोन्हा ।।
आपणा सत्ता तपा रा राज़ चलाआ ।
एकी देशा न एक कनून दर्शाआ ।
लैंभ-वैंभ, धोखा-धड़ी बै मिटाआ ।
पापा छौड़िया पुनै रै रैस्तै ज़ाआ ।
भिछा मौंगणै री रीत हटाआ ।
दीन-दु:खी बै सुखान डाहा ।
सोढ़ी-टोपी री वी मुक्ति केरा ।
नाक-कौन काटिया लहिदा डाहा ।।
ताँ ढोई नी मुकणा देशान भ्रष्टाचार ।
जाँ ढोई नी बगाड़ै इन्हरैं नुहार ।।
समाज बादा न हौआ सी सब एक बराबर ।
लुटणै आलै लोकै री लैया राम्बड़ी खबर ।।
उदघाटन-उचाटन माँहगी रीत मिटाआ ।
देशैरै इन्हा गद्दारैं रा उका केरा ।।
नेतै रै रूपान राज़ै रै ठाठ बाठ हटाआ ।
स्वार्थी नेतै बै टटकदै २ टांगिआ डाहा ।।
नाकटी फिल्मा बै बन्द केरा ।
मा बेटी री ता डाहा लौज़ ।
शुणाज़ी ! माता बुहार खुसरैं रा केरा ।
माता ढालदै टी.वी. न मर्यादा री धौज़ ।।
विदेशै रै कर्ज़े देणै री तैंइयैं एक मुहिम चलाआ ।
से भी न मरज़ी री रक़म मौंगिया इज़्ज़त डाहा ।।

ओहू रक़म देणै आलै री तैंइयें ।
राष्ट्रीय पुरस्कारै री एक स्कीम चलाअ ।।

किबै नी डोला भलाकार ।
ठारा करड़ू री जयकार ।।



२३. पिशणा पिशदा

राज़ की मेलू धुसड़ी पाई ।
खुर्सी पिछै बौण्डै ड़ै भाई ।।

खुर्सी खिचिया घुमू दमाग़ ।
देऊ बैंणिया उघड़ै भाग ।।

छुड़की नी लोड़ी खुर्सी ऐबै ।
झीं-झापड़ी पाणी छुड़की जैबै ।।

ओघ, जैंइण्ड, डफ जफड़ लीडर बैणै ।
'पौढे लिखैंदै सर सर केरदै डाहणै' ।।

निष्ठा उत्थड़ा केरू, उत्थड़ा निष्ठा ।
जेठा बशाऊ धौणी रा पिशणा पिशदा ।।

नपौढ राज़ा न, कनून सा खस्ता ।
नाज़ सा मौंहगा खून सा सस्ता ।।



२४. कौरवै थी आसै कौरवै पुजै

कौरवै थी आसै कौरवै पुजै ।
देश चढ़दा लागा ऊझै, ऊझै ।।
सन् छियाटान ओरू इन्द्रा बैणी भारतै री ढोहा ।
तोखै न ओरू शुणा तुसै ऐबै इन्द्रै री बरशोहा ।।
देश थी गरीब मँहगाई थी बोहू, दुःखा रा नी थी थौंहा ।
गरीब, गुर्व हरिजन साँठिणैन नी थी ऐंदै, मुजारै थी रोआ ।।
बिह्णी छापरै नागै-धड़ागै कई रोजै रै,
भुखै डाण्ढै रोज़ थी हाल इन्हरै होआ ।
"बाबुआ रोटी दै । याजुआ रोटी दै ।।"
मौगदै रौंदैया शोहरू थी राती वै इन्हरै सोआ ।।
"कमौंदै-बर्तौंदै, झिझै बागरीन ज़िमी बौहदै होआ थी आसै ।
जेठा शाढ़ान रुह्णी केरदै नाज़ा मौण्डदै होआ थी आसै ।।
सोन्ह नी हेरनी दोत नी हेरनी कौम पौड़ा थी दोहरा ।
हेरलै कैण्ढी किशमिती हुई म्हारी घाड़ी भौरदै होरा ।।
पीठी रा जा थी लोखड़ा म्हारै-जैण्ढै गैधै रै तवारै ।
बगारी देदै देंदैया हौंछू थी आसै आपणै भौरा ।।
समै ऐण्ढा पल्टा खाऊ लागी मीरा बै गरीबै री हाय ।
उत्थड़ै निष्टै हुए निष्टै उत्थड़ै केरा इन्द्रै री जय जय ।।
मुजारै मालक बैणै खाणै बै मेलै सभी बै नाजै रै दाणै ।
जुणा इन्द्रा रा सान नी बुझलै ते सी तबै दुई होछी रै काणै ।।
हरिजना बै नौतोड़ा जिमी नैंहीं दै बै ज़िमी मेली ।
चोर बज़ारी खत्म केरी, सस्ती चोज़ा मेली ।।
शाहूकारै रै कर्जे खत्म केरै ज़िमी रै कर्जे माफ ।
सोढ़ी टोपी रा उका केरू निभू देशान उल्कापात ।।

टैक्सै री चोरी रोकिया छौड़ो ।
काली माइया खोलिया छौड़ी ।।

स्वांग, ठग, पोक़ तस्करी निभी ।
तस्करै री ज़ाज़ात नौठी बिकी ।।

बैंका रा राष्ट्रीयकरण केरू ।
तूँईं रा धन जनता बै फेरू ।।
बंगलादेश आज़ाद केरिया ।
पाकिस्ताना रा मुंह सधेरू ।।

ज़ैबै गरीबी हटाणै रा हेसरू लाऊ ।
सेठै शाहूकारै तूँईं न विघ्न पाऊ ।।

भाव-भत्तै माँहगै केरै नाज़ ओबरी न डाहू ।
मिलि इन्द्रा हटाणै रा रोज़ रफड़ा पाऊ ।।

इन्द्रै देशै रै बैरी तैबै आन्धर केरै ।
भलेखैन एमरजैन्सी रा डण्डा चलाऊ ।।

सन् पझतरान आर्यभट् मर्गा बै भेजू ।
ए थी म्हारै देशै रा तरक्की रा नेजू ।

एसाए वौर्षान ऐटमी धमाका कराऊ ।
सारी दुनियान आपणै देशा रा नाँ दर्शाऊ ।।

चीना पाकै री आईथी होश ठकाणै ।
ऐटमी शक्ति न हुए थी आसै वी सियाणै ।।
वैणी थी पंच वर्षी योजना गरीबै री तैंइयैं ।
पर बोहू ज़ैह फ़ायदा चै क़ू साहूकारै सैंइयैं ।।
नैंहिदा नैंईं तरक्की ता हुई थी देशा न बोहू ।
ज़माखोरी ता चोरबज़ारी वी हुई थी देशा न बोहू ।।

रोकणै री तैंइयैं तूंईं बै इन्द्रै केरू थी बड़ाए यहाऊ।
सोची समझिया ज़मूती संघै बीह सूत्री कार्यक्रम थी चलाऊ ॥
हौल्काअ शाह लैऊ थी सारे लोकै सेभै निकतै थी उझै उझै।
फूलै लोड़ी फौल़ै लोड़ी आसै भारत मां रै सुहज़ै।
ज़ादीन पेहिल ड़ै गाज़ी कौखै थी आसै कौखै पुजै ॥
हेरा ड़ै लोको भारत देश चढ़दा लागा थी उझै उझै॥
देश लाऊँदा थी डुघै नाल़ान पाणा इम्हा उल्कापातिए।
हड़ताला खून खराबा केरना लाऊँदा थी वैरी नातिए ॥
देशान गड़बड़, लोहू रा हौढ़ पाणा लाँऊदा थी वैरी साथिए।
भ्रष्टाचार केरा थी आपु बौदी सरकारा बै,
बेहा थी चो़र घातिए ॥
सारै लोका भघाइया चलाणा लाँऊदा थी,
आपणै राज़ा रा दाऊ।
इन्द्रै एमरज़ैन्सी लाइया शाहाउणै रै हौड़ा न देश बचाऊ ॥
कौखै थी आसै। कौखै पुजै।
देश चढ़दा लागा थी उझै उझै ॥
थी ता सेभ गला ठीक।
कौढणी नी थी झ़ीक ॥
मिकमसिन्धिए डिकटेटर शिपा रा नी थी केरना चा़ला।
हांज़ी खुर्सी पांधै बेशणै रा हक़ सा सेभी बै भाल़ा ॥

शुणा ! लोक राज़ान खुर्सी पांधै आपणैए,
खानदाना रा हक़ नी थी ज़माणा।

ऐ, सा जनता रा 'बांधा जेऊर' औलादी,
पिछै हौआ सा नेता वी काणा ॥

२५. लोकतन्त्र

हिन्दुस्ताना रा लोकतन्त्र ।
भेड़ा ढाञी पौची पाई ।
मुण्डी काटी पेटा आंधर ।
नपौढ़ जनता छेलू साही ।।

नपौढ़ नी ज़ाणदै लोकतन्त्र ।
वोट पाइया ज़ान बचाई ।
लिखै पौढ़ै केरै आंधर ।
लिण्ढै-ठुण्ढै खुर्सी पाई ।।

खरै-माड़ै री पछियाणा सा लोकतन्त्र ।
सभी री तैंईऐ एक कनून भाई ।
विरोधी पार्टी, धड़ा नी केरना आंधर ।
वोटै री तैंईऐ नी बोंड़णै भाई ।।



२६. कमौणै आलै़ सी थौड़ै

हाँड़ै बाहिड़ा शुण ता शुण । कमौणै आलै़ सी थोड़ै ता,
खाणै आलै़ बोहू ।
किबै भारत देशा पांधै औठ बिहा,
द्वई हज़ार करोड़ा रा कर्ज़ा पौऊ ।
ऐंदी की उठी ऐंढा की गोऊ ।।
हाँड़ै बाहिड़ा शुण ता शुण ! कमौणै आलै़ सी,
थोड़ै ता खाणै आलै़ बोहू ।।

पेंहिठी बेठी ब्याह न बे सा भी,
छौंदै आलै रा सहाब नी रोहू ।
बोटी थी थोड़ै, राशन नौहड़ू ,
उठी बेशिया मण्डारी बी रोऊ ।
द्वाला निकता ! पर ढोबण ढोऊ !!
हाँड़ै बाहिड़ा शुण ता शुण कमौणै ,
आलै सी थोड़ै ता खाणै आलै बोहू ।।

जबै बोला भारत आज़ाद हुआ ता नेतै रा ,
थौह टकाणा नी रौहू ।
खुर्सी खिचणै री तैंईयैं इन्हा सेभिए ,
जनता रा पीऊड़ै लौहू ।
बोटर सी थोड़ै । लीडर बोहू ।
हाँड़ै बाहिड़ा शुण ता शुण कमौणै ,
आलै सी थोड़ै ता खाणै आलै बोहू ।।

गरीबी दूर केरदै लागै सेभ भुखै बंगाली ,
नौचण नौचू बोहू ।
इन्है गरीबी दूर केरदै केरदैया ,
डाण्ढ आपणा भौरिया डहू ।
"हां ! कुणिऐ खाऊ ? हाँ. कुणिऐ नेऊ ?" ।
हाँड़ै बाहिड़ा शुण ता शुण ! कमौणै आलै सी ,
थोड़ै ता खाणै आलै बोहू ।।

बेनामी ज़ाज़ात पझांई समुन्द्रा पार ,
दैब्रुआ बैंकान डाहू ।
हेरा-फेरी रिश्वता री देया सा कुण रसीद ?
किबै भरमाऊ ?

"ज़ेबै सहाब-कताव सा ठीक !
दसा तुसै कुणिए खाऊ ?"
हाँड़ बाहिड़ा शुण ता शुण ! कमौणै आलै सी,
थोड़ै ना खाणै आलै बोहू ।।

ईमानदारी सा पुराणी बीमारी,
किबै तू ऊँई रै फेरा न पौऊ !
ईमानदारी रै कागद (फरदा) ग़लत,
छाऊका नी आथी ज़ेबी कौंम कमौऊ ।
ढिलै ढौंसिए—देऊ नी आऊ ।
हाँड़ै बारिड़ा शुण ता शुण ! कमौणै आल सी,
थोड़ै ता खाणै खालै बोहू ।।

पापी, पराधी, डिण्ढी-स्वाँगीन सदा घौर नियाऊ,
पर खाणा नी आऊ ।
पक्का पिढाए केरू, पीढ़ी बर शोढी,
न ओरू मन नी पतियाऊ ।
हाजम केरनै रा ज़िगरा-खाणैरा लौड़ी यहाऊ ।
हाड़ै वाहिड़ा शुण ता शुण ! कमौणै आलै सी,
थोड़ै ता खाणै आलै बोहू ।।



२७. पहाड़ी भाषा रा जन्मदाता

(स्व० श्रीलालचन्द प्रार्थी हौरै रै निमित्त-श्रद्धान्जलि)

पहाड़ी भाषा रै जन्मदाता ।
सभी संघै थी तसरा नाता ।।

सभ्यता संस्कृति ता देऊ-देवी री गाथा ।
पहाड़ी गीत संगीत चित्रकला रा थाता ।।

औज़ बुझ़णा लाऊ कविऐ लेखकै ।
जनतै प्रदेशा बै तुसरा घाटा ।।
पंज़ाबा संघै थी सन् छियाटान पेहिल आसै ।
पुछ़णै ता दूर-ज़्रैबै तैबै मेला थी आसाबै झांसै।।

सभ्यता संस्कृति थी कुल् कांगड़े री धौनी ।
शुणी नी आसरी पंजाबिए आपणिऐ फौनी ।।
कांगड़ा कुल् सन् छियाटान ,
ओरू हिमाचला न आऊ ।
लालचन्द 'प्रार्थी' होरै प्रदेशा ज़गाणै रा ,
हेसरू.......लाऊ ।।

आपणी भाषा, आपणा खाणा-लाणा ।
सनाई नोपती संघै नोच्णा गाणा ।।
'प्रार्थी' होरै की केरी नी ज़ाणू ।
देऊ बणाऊ हिऊँआ रा माँहणू ।।

जाचा जणीचा शोभली बणाई ।
देऊआ डेवी री थी शान बढ़ाई ।।
ज़्रैगा ज़्रैगा ढोल ढमाकै बाज़दै लागै ।
सेभ देशी ताणै बाणै न नोच्दै लागै ।।

हौसदै गाँदै लाल ओठड़ू ता लाल थोथरू लागै ।
पहाड़िऐ हेरा आपणै मिठड़ै बोल बोलदै लागै ।।
चौल़ै टोपै ता कलग़ी हार ।
हौथा न लैया तीर तलवार ।।

लाल थिपू लैंगरी चूड़ी मृदड़ी झुमकू चन्द्रहार।
हेरी हेरिया लोकै रै दिलड़ू,
धड़कदै लागै बार-बार ।।
बणाऊ म्हाराऐ हिमाचल सभी प्रदेशा रा मानी।
हेरा ड़ै लोको आणो हिमाचलान नौंऊवीं जवानी ।।

प्रदेशै रै कवि लेखका न एक नोऊंवीं लहर चलाई।
ठिमचू पांधै बेठिंदी छोकरी नौऊंवी लाड़ी बणाई ।।
चमकू हिमाचल देशान नोरवा नियारा।
ज़ैण्ढै निहारी रातीन भ्याणसरू तारा ।।

तुसरै गुणा रा केरा नो सकदै आसै बखान।
म्हारै प्रदेशै री थीज़ी तुसै सुन्है री खान ।।
ज़ाआ थी ज़ोखै पाआ थी लोकान ज़ान।
मुर्दै वी औण्ढा थी शुणिया तुसर बख़ान ।।

थी कलमै रै पक्कै-शास्त्रा रा ज्ञान।
की नोचणा गाणा, संगीतै री तान ।।
कला रा लोभी ठारा करड़ू रा गूर।
कांगड़ा कुलू हिमाचलै री ज़ान ।।

औज़ तुसा नी रोहिया हुई बोहु वौर्षा पूरी।
कवि लेखकै कलाकेन्द्रान बुझी तुसरी दूरी ।।
प्रर्णी ज़ी झूठ नी बोलणा तुसै थी महान्।
औज़ प्रार्थी सा हाऊँ आत्मा तुसरी हागै ।।

हां ! औढू लोड़ी थी तुसरै रस्तै पांधै आगै न आगै।
दैया वरदान ! केरा कल्याण प्रदेशै री,
रौहली शान ।।

अर्ज़ सा म्हारो परमेशरा हागै हौथड़ू ज़ोड़ी।
तुसरी आतमा जुग जुग शान्ति संघै रौही लोड़ी॥



२८. कैन्ढा छ़ेका लाऊ ओ

(गीत—श्रद्धाञ्जलि-२)

तर्ज़—देवी रेणुका

कैण्ढा छ़ेका लाऊ ओ ! म्हारै नेता प्राथिया !!....
प्रदेश रोंदा लागा ओ ! म्हारै नेता प्राथिया !!....
कैण्ढा छ़ेका लाऊ ओ ! कुलू घौरै कृतार्थिया !!....

कैण्ढा छ़ेका लाऊ ओ ! म्हारैं मन्त्री प्राथिया !!....
कुणी कुणिए नी जाणू ओ ! म्हारै नेता प्राथिया !!....
कैण्ढा छ़ेका लाऊ ओ ! म्हारै प्रदेशै रै साथिया !!....
पहाड़ी भाषा रा दाता ओ! म्हारै मन्त्री प्राथिया!!....
ठारा करड़ू रा प्यारा ओ !
म्हारै गूरा परमार्थिया !! ...
कैण्ठा छ़ेका लाऊ ओ ! म्हारै शेरा प्राथिया !! ...



२९. नी आथी ढौकण डाली

नी आथी ऐबैं कोई ढौकण डाली।
टुकड़ा वी नैंहदी लागी भुखी बराली॥

मारुथी, सुहज़ुकी, सराजमज़ेदारै री तैंईयें ।
ज़िमी ज़ैगा बेची वेचिया डाही पै डाही ।।
सराबड़ा मारिया आऊ आदानी लोकान पड़याई ।
बैंका रा कर्ज़ा बधदा लागा केरू खर्चा शाही ।।
जेऊर, घौरै री ज़ाज़ात वी सेभै मैं बेचिया डाही ।
खौल्हड़ू आँधरै रौंहदा गाज़ी रोंदा किबै कमाई ।।
बैना जिपसी जोई वी लोकान मरियाई ।
कौखै बै ज़ानू आए बैंके रै कागद भाई ।।
नी आथी ऐबै कोई ढौकण डाली ।
टुकड़ा वी नहेंदी लागी भुखी बराली ।।



३०. कुलू घौरा रा मशहूर नाँ

कुलू घौरा रा मशहूर ना । पोहुता घौर घौर ग्रा, ग्रां ।

सोमसो ज़ाइया जुणिए बसाऊ आपणा धाम ।
तिन्हा रा शुचा नाँ थी ठाकुर वेदराम ।।
शाला टोपी बणाइया केरू कमाल ।
भुठ्ठी वीवरैरा की पुछणा हाल ।।
शाला टोपो री केरी मशहूरी ।
बुनकरा संघै थी तिन्हा बै झुरी ।।

तिन्है री भलै री तैंइयैं सोसायटी बणाई ।
टिकड़ छड़ाइया दुधा-घिऊआ संघै रोटी खियाई।।
कुलू घौरा रा नाँ केरू मशहूर ।

तिन्हरै रैस्तै आसा औंढ़णा ज़रूर ।।

भुट्टी क्लोनी सा तिन्हरी यादग़ार ।
बुणदै सी ज़ौखै बुनकर हज़ार ॥
सभी सोसायटी री एक युनियन बणाई ।
सुतींदी सरकारै री छ़ेकै रात बिहाई ॥
औज़ कुलू रा बज़ार भोरुआ शाला ता टोपी संघ़ै ।
शाला घौरा घौरा-टोपी परदेशी री च़ोल्ही पांधै ॥



३१. विद्रोही री अर्ज़

(म्हारी संस्कृति)

चाधरू थिपू चोला टोपा ।
लटाकर शूड़ गरी रा खोपा ॥
काल नी लाणा ।
काल नी खाणा ॥
स्वादा बै स्वाद ।
बोला बै बोल ॥
हांईयैं बाहिड़िए !
हाँडै मेरे बाहिड़ा !
गोंठी न सी ढैबुए ।
आण औझ़ैं औज़ ॥
गोखड़ू डुल्कणू ।
कनबिच़ैं क्रनवालै ॥
बालू ब्लाक मलोरी ।
फुल्ली लौंग नथ नन्ती ।

लाइया समझाइया झलकाइया ।
काली क्लैठ बी लागा सा बसन्ती ।।

नार की कटार, लोमै शराल, लाइया फ्ला गाची ।
मौंझ सेरी न धाना ढालदी हौथा न कणसी दाची ।।

चूड़ी बाँगा मृदड़ी ।
टोकं काङणू मुँदड़ी ।

तरमणिए छाटै कण्ठो ।
शुचै मोती, लौक्ट चन्द्रहार ।
ता लरज़ा मुण्ढै मालादार ।
बिन्दी जोत्थी हार श्रृगार ।
तिल्ही, झुमकू वोणी चैंक ।

खुण्डू बुमणी चैका चैक ।।
बिछुए लैंगरी चैना, पंज़ेबा ।
लुहानी थिपू जुटु वी घुँघरू आला ।।
काँटे बेसरू बाज़ूबन्द आर्शू ।
काज़ल सिन्धूर छित्तै दौंदड़ू ।
दंदासै री बीड़ी, लाल २ ओठड़ू ।
पौडर क्रीम, पिढी सुँथण चितरा चाधरू ।
मौखरा साही बोल रूप निराला ।
मधरा डाल किहां नो मन मोहला भाला ।।

काठू कोदरा काऊणी चीणी ।
चिहुडी मटणका ज़ाटू जलधरा ।
दाणै गाङघड़ी शौठू छौली ।
देवल मताली जौ, वित्थू सारा ।

माह मूंग भौठं बाली रौंग ।
मौसर ता कौहलनी आथी ढौंग ।।
फागड़ा फौफरा लिंगड़ी ।
कनिफड़ू कियाऊँ रियाची ।
हां भला मटोशै बुक्कै, छोछी ।
पता नी ऐबै कुणिए त्रिगड़ी ।
छुँछरू गुलबाँस शुका शहाग ।

इन्हरी वी ऐबै निभदी आश ।।
सिल्हरी आलु, जंगली आलु ।

आरू पटकारू शाहड़ै ।
वरजाई शंहेगल शियारै ।
खोड़ घियाँथीं डाभ चाऊँश ।
आञ्छै विल्ली आञ्छै फागड़ै ।
वौरा फौकड़ नवाड़ै खाए भाज़ड़ ।।
क्लार ब्याली नुहारी दपौहरी ।
सीता सी, पर रौहै नी गौहरी ।
फैंभड़ा खिचड़ी (सियार प्यारी)भान्ति-२ री बाड़ी ।
चिल्हड़ै आक्सलू गिचै बोवरू रोट ।
लपेही पत्तोड़ू बै वी हुई सा होट ।
मौखर दाणै सिहड्ड दाली सिहडड़ी।।
शौइरू वास्ता मौखर बेड़वी रोटी ।
बौड़ै दहीं आलै बौड़ै,बौड़ी को नौठी ।
मधरा पौहल्दा, दहीं आला राइटा ।
खटी छाही आलै आलू तौलवी रोटी ।

ग़ुगर शहोटरै, मंगोहलू लूण, गल़चोपा ।
न रौहै ते स्वाद न रौहैते बोटी ।।
रौहली ज़िमी हाज़ी वी खालै सहौत आधाणा ।
माता बेच़दै ज़िमी कुलू छौड़िया सा कौखै वै ज़ाणा।।
शिघ - शियाल।
हिऊँद, नी भरयाल ।
विसरू हेसरू वेसरू ।
'हा लामा लोरा ।
घौठै फसू टौरा ।"
शाह फिरू कोहुरा ।।
न पौघा मिहनै री दयाली ।
न रौहै ते बौण-बिल्लै ।
न रौही ते बौण बराल़ी ।
झिहरू-शोहरू जाचा भागल़ी।
न रौहै ते काठ कुणिए घौर ।
न रौही ते सहौंगड़ी द्वारै री आगल़ी।
मुशै-टिशै बणै (बड़े) रा ।
बात करनी ता बाहरै आ ।
हेरा याजू - बाबू छौड़िया ।
बणै सम्मो डैडी आल़ै ।
जुणिए पराणी रीता छौड़ी ।
ते बणै बैना गाड़ी आल़ै ।।
सनहाई नोपती छौड़ी ।
छोड़ै भाणै वाम ।
देऊ देवो ढफाल छौड़े ।
ढौकै सेभिए जाम ।

जाल्फ़ू झाँफी रै बदलै नाँ ।
बदलै सौहर बदलै ग्राँ ग्राँ ।।
सेभ बौते कुलू ऐज़ी ऐज़िआ ।

तिन्है छौड़ी नी आपणी रीत ।
आसै सभ्यता छौड़ी संस्कृति छौड़ीं।
छौड़ी आपणी बोली – संगीत ।।
अर्ज़ सा एई 'विद्रोही' री नीत ।
केरा ठारा करड़ू संघै प्रीत ।
चाऊल माह टालिणैं री हेरित ।
संस्कृति बै झुरा माता बणदै ढीठ।।



३२. देऊ वाणी

पाँध पाँध बोला गूर पटिकू ।
टिणकी टिणकी टाँगै ।
लोहू री नौर्दी बौगदी लागी ।
चाकरो! घौरान लागणै शहाणै ।।
उठाड़ै मनुखो !
चेकै बै बौन्हा !
की दोती —
की सोन्हा !! पांध........................
नचक भरोटू ।
घिरदा रेटू ।
तरफैणै मठेलणै लाए ।
मौलिदी लागीड़ै कौन्हा ।। पांध....................

ओ तुबका ठौणकी ।
दिहाड़ी - दपौहरै ।
सत्ता - तपा री -
मुकदी लागी ज़ोना ।। पांध ....

इन्हा परास्ती री मुक्ति केरा ।
शुड़क बेशी नी रोहणा ।। पांध ....

आबादी रोकणै री ।
चाली नौउँवीं-२ चीज़ा।
नौऊँएँ ज़माने रै शोहरू ।
शोहरी रा की सा धीज़ा ।।
टिणकी टिणकी टाँगै ।
पांध पांध पटिकू ।
देवा रा गूर ।
शुणाड़ै हारियो ।
होरिदा लागा —
होरका होर !!
आपणी ज़ोई ठींगा न नियाणी ।
ठींगै री ज़ो आपणी बणाणी ।
आपणी ज़िमी परदेशी न नियाणी ।
बिथू चिणी काऊणी कोदरा शहागै री भाज़ी ।
अपने न नैंईंड़ै हारियो तुसा सुपने न खाणी ।
बैधू बैधू गला केरदै माता हारनी बाज़ी !!
चोख ज़ुठ फ़िज़ा न डाही केरी नौऊँवीं कमाई ।
एशकी रोटी भौत ता चोकण चैटणी भाज़ी ।
आगलिए खाई फिरी वी रौही सहाज़ी री सहाज़ी ।
नेतैरी मौड़धूड़ चोल्ही पांधै आई ऐबै भूतै री बाज़ी।।

सिहडङ्ग फैंभड़ा चोलै-टोपै थिपू मृदड़ी छौंड़िया ।
रगेज़ा रा केरना लाऊ चा़ला़ सहौड़ी सहौंड़िया ।।
किछ़की माड़ा माड़ा लागा हेरिदा मनुखा ।
नज़ाणैं रै सुखा ता ज़ाणकारै रै दु:ख ।।
उठी उठिया सी बी० डी० ओ० भालणैं ।
हौछी वी केरनी सीड़ै काणी ।
सुथणी छौंड़िया कमाण्डो पैंटा लाणी ।
घौरान भुखैं मारने सिहाणै सिहाणी ।।
देऊ देवतै छौंड़िया हीरो ता ।
हीरोइनी री हौंणी सा पूज़ा ।
शर्म लौज़ शौहली पांधै जर्सी -
ब्रीडा व्याह केरना दूजा न दूजा ।।
भैंईंठी केरदै हौंणा सा हाली -
मज़दूरा, मौथा टेकणा गूरा ।
सत्ती होणा सा लीहरै झलाँदी ।
बदमाशा बेटड़ी लाणी सौ हूरा ।।
ज़ेठू ज़ल्फू बणने लवली-बबलो ता फ़िट्टू-बिट्टू ।
झीशा उठिया सेभी री खाखी न गड़िलणिए बिट्टू ।
उड़िका बैंणिया औण्ढण घौरैं रैं चोचा ।
झ़ाँबड़ी डाहिया औण्ढण सा मीचा ।
कात नी लाँदै थी शीहरा न ।
पुज़णैं री वस्तु थीड़ै मीचा ।
बीऊटी पारलरा न माँ-बेटी ज़ाइया ।
ऐबै मारदै ज़ाणा सा ज़ुँआ-लिहछा ।।
पांध पांध बोला गूर पटिक्कू ।
टिणकी टिणकी टाँगै ।

लोहू री नौदी वोगदी लागी।
धौरा न तुसरै लागणै शहाणै ।।
जय ठारा करड़ू री।
जय धौरत माटी री !!



३३. नशै सेभ सी बुरै

किबै मुकदै लागै पिया सर चाकटी।
किबै पाणी लाई कुलूरी (प्रदेशै)नाकटी ।।

बाहरै झीं-झापड़ी आन्धरै झीं-झापड़ी।
ज़िमी बेची बेचिया पाई आपड़ी धापड़ी।।

लुगड़ी शराब केरा सा खराब।
हुक्का तमाकू नशीला वर्ताव ।।
नशै सेभ सी बुरै –
डाहणा की हिसाब।
मुण्ड सा घुमा –
सुथणी न हौआ सी जलाब ।।

लड़ाई झगड़ै मारकूट दाउए मकदमैं।
घौर वार बेचिया दिला बै पौड़ासी सदमैं ।।



३४. शरहाबी

मेरै देशै रै पिछड़ै भाइयो सूर चाकटी छौड़ा।
स्कूलान शोहरू बै पढ़ात ता घौरा आपु वी पौढ़ा ।।

शराब केरा सा ख़राब सी उत्थड़ै ढौशान झ़ौड़ा ।
ज़ौखै नशा जु़आ, घौर कौखै न हुआ दुहरू सी लौड़ा।।
झ़ीं-झ़ापड़ी ढिस-पटाक निकम सिधिए हौरा बै तौड़ा।
हौआ सी हाल बेहाल ता छ़ेकै निकला सा मौड़ा ।।
पूरा नी पौड़दा ज़िमी बेचि़या बुरी आज़त छौड़ा ।
दाउए मकदमें, ऋण-धौंण, चो़ल्ही पांधै सी पौड़ा ।।
गरीबी री निशानी ज़िमी नियाणी नशा जु़आ शराब ।
कतई सुध बुध नी रौंहदी सुथणी न छ़ुटा सा पशाब ।।

थूक शिमा शड़ैन्ह(वास)गाल-दोपड़ मौंझ़ रैस्तै न ज़लाब ।
धाकै-मुकै संघै सी नालीन पौड़ा, की दसणा हिसाब ।।
पिछ़ड़ै भाइयो झ़ै हाज़ी वी नी तुसै ए ग़ल फियाड़ी ।
एसा आज़ती सा ऐबै आसरी चोड़नी कियाड़ी ।।
विमारी-शुमारी ऊँई सँवै सा की दसणी नाड़ी ।
शुणा नी घौढ़ने शोहरू-शौरतू नो घोढ़नी लाड़ी ।।
तमाकू बीड़ी सग्रीट ज़ोई ढाव्रणै रा नशा वी सा बुरा ।
होछ़ी उम्बरान शोहरू रा फोण धिख बेटड़ी बैता झ़ुरा ।।

दूई शोहरू देशै री मांग-किवै चै़कलै ते आपुन डांग ।
सुखै सन्तोखै ज़िउँदड़ी निभेरा किवै ढौका सी चाँघ ।।
सेभ सी शराबी न औगख केरा नाता नी बुझ़दा सौहरा ।
मोंगी, मोंगिया शराब सा ढिमा लोका वी मारा सी ठौरा।।
इज्ज़त-आवरू तेई री नी रौंहदी टब्बर वी सी डौरा ।
वेची-भुनिया धुड़पै होइया कुत्तै री मौतिया सा मौरा ।।

३५. भारतमाता बै सेभ सी प्यारे

(गीत)

शुणा मेरै देशै रै भाइयो गोरै ता कालै ।
हिन्दु सिख पार्सी मुस्लिम इसाई आपुन सौहरै भाई ।
देश छौड़िया कौखै बै ज़ालै ।
शुणा .... ।।
देश भारत सा बोला आसा सेभी रा साँझा ।
आसै एक धौर्त माटी रै पालै ।
शुणा .... ।।
बैर वरोध केरना किबै बपड़ी ज़िमै वैरी सिभै ।
परदेशिए सदा भौटिदै भालै ।
शुणा .... ।।
फौंऊंशा मारी बोला बरखोड़ी न ओरू ।
प्राधीन परदेशी किज़बै रौहै ।
शुणा .... ।।
झिक-मिष आसा नी केरनी एकी या रै ज़ाए ।
धिख धोरै रौहा गोरै की कालै ।
शुणा .... ।।
आसा भारतवासी री बोला एकै जन्म ज़ाई ।
मुस्लिम इसाई कौखै बै ज़ालै ।
शुणा .... ।।
छोत-छात जाति-पन्थी री बोला गला पराणी ।
ओ घुआड़ा दिला मना रै तालै ।
शुणा .... ।।
आसा कालै बोला आपुन झौटिदै रौहै ।

गोरै लुटदै रौहै सदा पाल़ै, पाल़ै ।
शुणा .... ।।
मारकाट खून खराबा सा बोला बैरी ढाबा ।
सेभ हिन्दी हिन्दु गोरू नी ग्वाल़ै ।
शुणा................................ ।।
मिलि जुलि बोला सेभिऐ किर्ष केरा देश बणाआ।
भारत माता बै सेभ सो प्यारै ।
शुणा................................ ।।



३६. लोक राज़ा रा सहाज़ा

औज़ सा लोक राज़ा रा सहाज़ा ।
नोचा गाआ ता बज़ाआ बाज़ा ।।

ऐ भारत देशै रै वासियो ! समा शोभला सा ख़ासा ।
औज़क़ै दिहाड़ै बै मौथा टेकणा बार बार आसा ।
फेटै केरिया राज़ै(एकी)रा राज़ छब्त्री जनवरी सन् पज़ाहन।
आसै सेभिए मिलिया जनतै रै राज़ा रा पल्टू थी पासा ।।
सदा हौरा भौरा रौहू लोड़ी ऐ आसा रा देश ।
सभी फूलै री कौल़ी रा वी सा ऐहै सन्देश ।
"सुर्ग बणाआ ! सुर्ग बणाआ ! आपणै देशा बै" ।
भान्त न भान्तै फूला रा वी सा ऐहै सन्देश ।।
एई दिहाड़ै री तैइंयें देशै रै नौजवानै ।
पता नी केतरी सूल़ी पाँधै प्राण थी ओ रहाए ।
हेरा ड़ै भाइयो ! तैवै ज़ाइया कौहींचै आसै ।
एई शुचै नौंवें सम्बता रै दर्शण थी ओ पाए ।।

ऋषि मुनि रा तपा रा देश सा म्हारा ।
झूठ नी बोलदे पापान नी जाँदे ।

हेरा ! सभी न उत्थड़ा सभी न छित्ता
मुकुट सा ऐवरैस्ट ऊँईरा ।
सादा हौरा भौरा सा जूबा रा देश भरपूर फूलै री वासै ॥
डाली, डाली न पौचा पौचा न सभी फूलै रै झारा न ।
चार बिहा छौ: करोड़ हारी रै भान्त न, भान्तै शोघै न ।
सभी री अर्ज़ा न हौथ जोड़िया ज्ञानै-ध्यानै हौछी मिटिया ।
निकलदी लागीं दी सा ज़ी तैबै ऐहै भाख "भौकदी डाहा ।
सदा एसा आज़ादी री रीझउटी री लुपी बै लैपा-लैप" ।
बागै रै कूज़ै री सेभी भौरै रा वी सा ऐहै आलाप ॥
हिमालय रै ज़ोता न उझै ऐवरैस्ट मुकुटा साही सैजूँदा सा ।
रंग वरंगै टौल्है लाइया सज़ी सजिया खड़ी भारत मां भी सा।
दाहिणी ता बाउँई धिरै शुचै समुद्र कलश सजैंदै सी ।
चरणा हागै अचछत फूल बेठर लैइया सा कन्या कुँआरी ।
भलै घौरै री एकी मनै पूजा राझणा केरदी लागींदी सा ।
शंकर कैलाशपत्ति महादेउए री, सभी रा ज़ुग परमेश्वर सा ॥
शुणा बाजदे लागैंदै सी सभी ज़गा ढोल-नगारे ।
नौचणै बै थरथरांदे लगैं दै सी ज़ोंघड़ू म्हारै ।

सुर्गै रा मस्त ताल देंदा लागाँ दा सा
बसन्तारा रा मौशम म्हारा ।
छौ: मोंशमें री माला पाइया चमकी
उठूँ दा सा ऐ भारत सारा ॥
सोइया नी रौहणा नज़र ऊँईं बै
म्हारै दुश्मणैं री लागी नी लोड़ी ।

"सम्भालि़या डाहा ! सम्भालि़या डाहा।"

ऐसा आसा रा ज़ानी न प्यारा।

ऐ म्हारै भारत वासियो! सैमा शोभला लागा !

औज़कै दिहाड़ै बै बार बार मौथा टेकणा आसा ।।

ज़य ज़य भारत देश।

ज़य ज़य ऐ भारत या।

समी न उत्थड़ा या तेरा ऐ मुकुट सा।

चिड़ू चगारू भलै माँहणू रा देश ।। जय·······

ज़य ज़य शंकर ! ज़य ज़य ऐ ऋषि मुनि रै देश।

पौए नी लोड़ी तौभै कोई वी क्लेश।

सारा संसारै रा शिहरा रा शेष।

देया सा सेभी वै शान्ति रा सन्देश ।। ज़य······

गुजराता न लैइया अरुणाचला तंगा रा प्रदेश।

गोआ न ओरू अरब सागरै रै होछै टापुन लैइया।

खाड़ी बंगाल ता अन्डेमान निकोबारा रै टापू मिलाइया।

कशमीरान लैइया कन्याकुँआरी ढोई सा भारत ।।ज़य···

उत्तरखण्डा॑न सी हि़मालय रै ज़ोतै री उत्थड़ी जेठी धारा।

रंग-बरंगै प्रदेशै रै चोहू पासै हौरै भौरै ज़ंगलै री माला़।

वेद-शास्त्रा रा घौर,शोभला वौर,रामा रा देश,कृष्ण रा प्यारा।

बुन्है भारत या रै चरण कमल

धोंदी सा समुद्रै री छित्ती धारा ।।ज़य···

औज़ सा लोक राज़ा रा सहाज़ा।

नौचा़ गाआ ता बज़ाआ बाज़ा ।। ज़य·······

ज़य भारत या !



३७. कुणी रा कसूर

थोड़ा किछ़ केरू हाज़ी बोहू किछ़ केरना सा।
थोड़ा किछ़ हेरू हाज़ो बोहू किछ़ हेरना सा।
धूप ता ज़ालू हाज़ी शहाई ता ज़ापणी सा।
त्रकाल हुई ता की हुआ रात ता आपणी सा।

हां राती री दिहाड़ केरा मात पौड़दे फेरा।
माता कमौड़ी बै वी चिल्हदे औंढदैया वी हेरा॥
भूड़ी केरी बोहू गरीबिए चंकू नी हेरा।
राम राज़ एला ज़ैबै तैभै लागणा सेहरा॥

विपता ता ऐं-दिहै रौहा सी घरमाईणा क्बिै।
मेलणा की ! भौनिया आपणै हाण्डू डिब्बै।
सोठी सम्भालिया तुसै आगै आगै निकसा।
कमी नी कोई माटी न म्हारै बोहू किछ़सा॥

डण्डी-पखण्डी बै बाहर कौढा ता शोभलै बै भेज़ा।
चाक्टी पिछ़ै वोट ग्वाणै पौंज़ा वौर्षा बै खेज़ा।
खाई खाइया नी रौज़ै ज़ुणा ते मित्र कुणा ?
देशै रै वैरी ! उका केरा मेरी वी शुणा॥

सोढो-टोपी खाणै आलै बै सौंघै न ढोका।
ता तिन्हरै नाक कौन काटिया ठाणै न ठोका।
तां घटि नी ओ सुधरना इन्हा देशद्रोही लोका।
ऊँईं लैणै-दैणै आलै दुहै सी या बै ज़ोका॥

हां तरक्की ता हुई लोको देशान म्हारै ज़रूर।

हाज़ी वी जुठा खाँदै भिछा मौंगदै कुणी रा क़सूर ?
थोड़ा किछ केरू हाज़ी बोहू किछ केरना सा।
थोड़ा किछ हेरू हाज़ी बोहू किछ हेरना सा ॥



३८. वौण लाआ ता रोज़ी कमौआ

शुणा ड़ै लोको ! प्रदेशै री सरकारैं। नौंऊंवीं स्कीम चलाई।
'वौण लाआ ता रोज़ी कमौआ' सा ऐ सेभी लोका बै भाई ॥

हिमाचल थी वौणा रा राज़ा। ऊँईं पांधै प्रदेशै री कमाई।
पर वौण काटी काटिया नवाड़ै। हाज़ी नी ओज़ी रात बिहाई॥

भारी उद्योगै रा औखै नी धोर। तूँईं केरिया सा ऊँईं राज़ोर।
उथड़ै ढौग डुघै नाल, झाँऊँशे भियाँऊँशै रैस्तै
किहां मारनी ठोर ॥

रेला, मौटरा सड़का ता काचै भालै री कमी।
मुशकल एणा-ज़ाणा।
फौला फरूटै रै मालक आसैं। नफ़ा दिल्ली आलै कमौणा ॥

वौण सी म्हारै ज़िणी-ज़िऊग।
एहै सी ओम्हारी सून्है री खानी।
ऐहै धाचणै-पालणै आसा। इन्हा पिछै देणी बैहणी ज़ानी ॥

'वन लगाओ। रोज़ी कमाओ'।
री स्कीम सा आसा बै नौऊँवीं नौखी।
ज़िमी वी मेलणी, बूटै वी मेंलणै। मज़दूरी वी ऊँईं न चोखी ॥

सरकारै री ज़िमी सरकारा रा ढऊआ-टक्का !
किर्ष पौहरा म्हारा।

पौहरे री दिहाड़ी वौणै री आऊदानी वी म्हारी !
हुआ पौंवारा ।।

गरीब-गुर्बा बैं रोटी बेल्है बै कौम ता बेरोज़गारा बै नौकरी ।
सरकारा बै धन यात्री बै सुख-शान्ति
भौरा सेभिए रक़मै री टोकरो ।।

वौण लाई लाइया थकी हेरा म्हारी प्रदेशै री
सरकार सभी भ्रान्तिए ।
ज़ंगल ता पठेए पर लागैंदै बुटड़ू वी
उजाड़ै आसै चोर घातिए ।।

वौण झौकड़ ज़ंगल वी काटै ।
प्रदेशै री सरकार नाँगी केरिया डाही ।
चटकदी सारी धौर्त माटी,
उज़ाड़ केरिया जैण्ढी टोटली खोपड़ी डाही ।।

वौणा रा कटान बुटै रा गनशान जंगली
ज़िऊआ रा सफान केरिया डाहू ।
ढुआना गराना रगड़ाना संघै हरियाली
बंज़र बणाई गाश गुवाऊ ।।

तबाही मचाई नाल-खोतल्ल पाए ।
ता गाषा पाणी न ज़िमी लौहसदी लागी ।
सली परै रै ढेर पाए, द्रौपदी रा चीर हरण केरू ।
काली हौसदी लागी ।।

ठारा करड़ू आसै भगाइया डाहे
ऋषि-मुनि रै वासा रा केरू खलासा ।
चोरी री लकड़ी बाहरै बेंचिया खाई ।
"ओ शाबाशा भाइयो शाबाशा" !!

भुखै भाज़ड़ा साही लूटमार मचाई।
केरी कमाई कोठियाँ पाई।
वन विभाग जंगली बणै।
संघै संघै मन्त्री रलै। जनता रोंदी कमाई ॥

'दोतका रहाशूंदा सोन्हा घौरा बै आऊ'।
ऐबै पौऊंदा सा केरना यहाऊ।
'वन लगाओ। रोज़ी कमाओ' री स्कीमा संघै।
लोड़ी ऐबै आसै मन पतियाऊ ॥

६ ६

३९. गुरु नानक भगवाना रा प्यारा

ज़ैबै बोला लो नानक ज़ौमू उठू देशान निहारा।
ऐण्ढै चमकू देशान ज़ंण्ढै झीशका भ्याणसरू तारा ॥

भगवाना रा थी सौ भगत न्यारा।
तैभै थी सौ भगवाना बै प्यारा।
बाबा कालू बै तैबै फिकर फैमू।
किहां केरला ऐ आपणा गुज़ारा।
सदाए भालणा ज़पदा माला।
पौढ़ना गूढ़ना वो छौड़ू सारा ॥ ज़ैबै ......

तरकीब केरिया कलुऐ तेइबै।
बपार केरनै बै ढैबुए धिनै।
एक एक केरिया हौथा न ढैबुए गिणै।
भुखै-भाणै तेईब्रै रैस्तै न मेलै।
तेइयै ते तिन्हा बै बौंडिया धिनै।
ऐंदी घेरै भी तेइयै मणकै गिणै ॥ ज़ैबै ......

"होछा नी कोई बैडा नी कोई।
सेभै सी बराबर", ऐ पाठ पढ़ाऊ।
"सेभै माँहणू एकी लोहू मासा रै।
छोता-जाति-पाति न नी किछै डाहू।
इमानदारी सा दुधै री धारा।
बेइमानी न निकला साड़ै लोहू"॥ ज़ैबै ......

भाई लालो री शुको मठेलिया।
शुधै दुधै री धारा कौढिया दैसी।
मलिक भागो रै पकवाना न कौढ़ू लोहू।
गरीबा मीरान फ़र्क एतराऐ साज़ी।
तरसाइया माता कमौंदै बोहू।
द्रोही सा तुसा बै परमेशरै री॥ ज़ैबै ......

"सेभी रा परमेशर एक सा नी बोहू।
हिन्दु मुसरमाण ता होर वी एक सी"।
तेई रै बिहणी रूपै थी नानक मोहू।
"रामा रा नाँ ज़पा ज़िन्दड़ी जाणी बेखशी।
रैली बणिया रौहा दसणा नी घणासा।
ऐ ज़िन्दड़ो सा दूई रोज़ा रा तमाशा"॥
ज़ैबै बोला लो नानक ज़ोमू उठू देशान निहारा।
ऐण्ढै चमकू देशान ज़ैण्ढै झीशका भ्याणसरू तारा॥



४०. मुँएँदै रा राष्ट्र

(घनाक्षरी छन्द)

हिन्दुस्तान मुँएँदै रा एक राष्ट्र ज़ौखै लोका,

ज़िन्दै बी नी देंदै शुकी-रुखी रोटी फशका ।
नेता राज़ान राजै नेता बेटे न बाद बेटा ,
ऐहै केरना थी-लोक राज़ा रा को थी छ़ेका ।
ज़िन्दैन नी श्रृंगार मौरि समारोह हज़ार ,
केरा सी खून खराबा मौरिया राम राज़ा ।
गरीब जनता भुखी पाणा कर्ज़ा बे सहाभा ,
छिह छिह मौड़धूड़ी बै हवाई ज़हाज़ा ॥

जिन्दै मौरदै निहाल़णै ता भुँएँदै री पूज़ा ,
ज़िन्दै न नी फूला रा डोल्हरू मौरिया हारा ।
'राज़ा राज केरै, परज़ा सुखी रौहै' ऐ नारा ,
रौहू सदा, ज़ुणिए ऐकै नपाऊ पुआड़ा ।
हौरी-भौरी फ़सला ठाठ-बाठ हेरी आखरै ,
बाहरकै गोरू ऐज़ी ऐज़िया पौए ज़वाड़ा ।
'आपणी आपणी पौई द्रुई बैहणियाँ नौई ,
ऐ वी ता धूपा हेरिया पिठ फेरिया बेठा ॥

रोज़ लौड़दै रौहणा गुह मूच वी नी धोणा ,
ज़िन्दै न नी याजु बावू री सेऊआ केरनी ।
'खाँदै ख्रा-मौरदै मौरा , आई बौत नी पुछ़णी ,
झिकड़ै टौल्है नी धोणै ता ख़िदा नी सींहणी ।
शुणाड़ै ! मौरिया खिची खिंचिया लेरा मारनी ,
नाती भद्रा केरिया दस तेहरा केरनी ,
दान-पुन केरिया माहिकी वार्षा ता चवर्खा ,
श्राद्ध केरनै पिण्ड देई वणना उत्रणी ॥

भारतै रै लौकै री शान्ति ऐणै नी देंदी क्रान्ति ,
म्हारै नेतै चौहड़ै पाँधिए लाआ सी बौता ।

सौरिया वी ते म्हारै ताल, पाँधै धूड़ शेटिया,
ढंगा सबै बुद्धि बै म्हारी पाथा सी कबौता।
जुगा जुगा न ओरू आपुन रौही झिक-मिष,
सौरिया वैरी रै मुँहा न (बी) पंचरत्न पाए।
भम्यालै री झिकै विदेशी शदाए, उल्टै पाए,
पिछलौ घेरै आपणै वी हुए उल्टै पाए॥



४१. मतबली यार

शोभली सार। लूटी बार बार॥
गुण नो गाँदे। लुटदैहै जाँदै॥
भौत खाणा हाण्डरा। द्रोही बटलूँ हीं री॥
ऐजी ऐजिया। इन्है बणाणै लाएं दै॥
धौर बार, ज़िसी बेचिया आसै पछतान्दै।
म्हारी या री बिथा खार भार॥
रौहणा कुलू न गुण पिछलै गाँदै मतबली यार।
केरदै नी ठारा करडू री ज़ै ज़ै कार॥



४२. बाली ता रामा रा संवाद

(घनाक्षरी)

सौत ताड़ै रै बूटै बै बिन्हिया बाली बै लामा,
जैबै रामा रा तीर बज़ू छातीन तेइरी।
"सुग्रीव भाइया तेरै हौथा न तानी थी बाण,
बोहू मत्है घुलू ए ए नी हुई गत मेरी।

किछ्की कपट कमौऊ सा तैं औज़ मूँ संघै,
झ़ैं औज़ ऐण्ढी मेरी तैं बुरी दुर्गति केरी।
भाई भाई रै झ़गड़ैन लागा साड़ै मूँ हेरी'
कौसकी त्रेधै आदमी री बखै हेराफेरी" ।।

ताँबै आए सामने तौखै राम ता हड़ूमान,
रामैं बोलू, "बालिया करनी रा फौल़ मेलू।
तैं आपणैं बड़ै भाई रा राज़-काज़ छड़ाऊ,
तैई री राणी भगाई दुष्टा ता पाप केरू।
लछमणा बै हेर होछ़ा भाई सा मेरा केण्ढा,
एई जुगा न नी मेल़णा होर भाई ऐण्ढा।
की कमौऊ ! की बतौऊ नेल़णी चै हिए सज़ा,
पाप केरिया नीड़ै मेल़दा किछ़ वी मज़ा" ।।

"शुणड़ै रामा मैं को खोऊ थी तेरा दस ज़रा ?
की छ़ोत थीड़ै आसरै मामलै न ऐणै री ?
पाप कमौऊ तैं ज़ैबै गोझ़ुड़या तीरै, मारी,
ज़ैबै तू छत्तरी राज़ा थी तू सामने एन्दा।
आपणै तीरा संघै मारदा होंदी खरी खरी,
तैबै ता बुझ़दा हाऊँ, सा बहादुरी तेरी।
शुण बिना हक़ै तैं मेरी राणी दुःखी सा केरी,
चिड़ू, गोरू जंगली ज़ीऊ नी पौई नातैं री" ।।

लछमणा बैं हेर भाई भाभी पिछ़ै तेइए,
व्याहता ज़ोई घौरा भीतरै डाही सौ रोई।
पेहिला फर्ज़ दुहरू रा औधै अंगा संघै सा,
ज़ैबै तेइबै झ़ूरी नी थी शादी किबै केरी ?

नाती-पोती कनूनै री मर्ज़ादा माँहणू बै सा,
आसै पूँछा आलै ̣ नी होंदै सहोरै सहोरी।
जौड़ा आलै ̣ न माँहणू की ? भगवान् वी डौरा सी,
मतबला री तैंइयै हेरा-फेरा सी ।।

निर्गुण राम नी आथी दशरथा रा बेटा सा,
राम अक्खरा रा उल्टा साड़ै 'मरा' मुंआंदा।
मौरिया सभी बै राम मेला सा सभी दुःखान,
ऐण्ढा औज़ा ढौई जुगा न ओरू सा हुआँदा।
होंदै सीताराम भगवानै रै अवतार ला,
सुन्है रै हिरणा पिछै ̣ किज़ी बैड़ै भैगदा।
राज़ घराने रै टब्बर सराहणै पौआ थी,
रायसी न ढौल नी केरी कौढ़ा थी चमड़ा ।।

ब्रह्मा, विष्णु शिव देऊ देवतै सराहिया सी,
आपु आपु बोला सी मुँभै मना हाऊँ बड़ा।
जुणिए पुराणी नीति छौड़ो तिन्है मान पाऊ,
हौथा ज़ोड़ने आज़ा सा हाज़ी तौखैहै खड़ा।
होर ता होर लोक तन्त्रान वी भारतान सा,
सौहै पुराणी चाल नैतै ईश बणैदैं सी।
गरीबै रै बाल-बच्चै ̣ भुखै मौरदै रौहा सी,
नेतै री मौती न अरबा रा खर्च केरा सी ।।

भगवान् सौहै सा जुणी हागै लक्ष्मी ता सत्ता सा,
सारी नौकरशाही कनून तिन्हारा हामी।
एकी दूई संघै नशाफ हुआ तैबै डिण्ढौरा,
डिण्ढोरै पांधै शरबा रा खर्चा परेशानी।

नेतै री मौड़ धूड़ जनतै रै शिहरा पांधै,
मुँआ ता भारतरत्न नेता खून खराबी।
गरीबै रै शौरनू जूठा खाँदै नेतै ढावदै,
बाँदर बुबू लाज्रा बै बाहरै ठौर लाणी।।

कौसी युगा न एकी राज़ै या सेठै शाहूकारै,
आम लोकै री थोड़ी भलाई री गल सोची।
सौ सभिए भगवान् मैंनू तेई री पूज़ा केरी,
मंदर मठ बणाए केरी ओज़ी ओ ओज़ी।
धूप बौती भकाइया मौथा रगड़दै रौहै,
बार बार भेंटा चढ़ाई पेटा बै नी रोटी।
मौरिया वी ढावदै रौहै, बड़ी बड़ी जाचा सी,
गरीब घौरा न वी कदी ते ज़न्म लैया सी" ?

रामै बोलू, "सत्त वचन झ़ूठ नी आथी ज़रा,
सत्ता पांधै ज़ाणै आला मूँ साही भटका सा।
हाऊँ नी आथी राम भगवान् हाऊँ बेटा ज़ेठा,
संघासना रा हक़ मेरा-दुष्टै पाऊ फेंटा।
जोरा आलै रा ज़माना साड़ै की राजा की प्रजा,
आसै धर्म भीरू दुःखी जनकै रै नी बेटा।
बोहू सुखी बोहू दुःखी अमरै सा भंड़ास,
धर्मी, गरीब जुगा जुगान ओरू ऐ रौंदा"।।

बालिए बोलू, "हां दीन दुःखी रा की उपकार,
की त्याग की सेवा इतिहास की ता राश की ?
हौछै नी बैडड़ै होणा ता बैडड़ै कौम होणै किहा,
होछै बै खाणै आलै राज़ै-शेर, नशाफ की।

नशा।फ केरनै आलं एहै कर्त्ता-धर्तावी ए,
रझ रझ एकता केरी वौणै रै जिऊए।
स्कीमा वी सोची कई बड़ड़ै संघै नी पेश चौली,
नेता राज़ै बणै इन्है ज़ादाए लोहू पिऐ" ॥



४३. मिलावटा रा सैमा

गरीब भुखै मौरदै लागै।
अणगिणत दुःख झेलदै लागै।
इन्हा भाओ-भत्तै लो संघै।
गरीब भुखै मौरदै लागै ॥१॥

नाज़-कनाज बेचणा लाऊ।
घिऊवान ग्रीस प्यारना लाऊ।
कैहर ढाऊ गुर्बा संघै।
गरीब भुखै मौरदै लागै ॥२॥

किछ़ होश केराड़ै भाइयो।
थोड़ा जोश केरा भाइयो।
किछ़ ता दया केरा भाइयो।
इन्हा बाल बच्चे लो संघै ॥३॥

मिलावटा रा सैमा लागा।
रिश्वता रा ज़माना लागा।
गरीब-गुर्ब ता मिटदा लागा।
दुष्टै रैं बुहारा संघै ॥४॥



४४. चौ़ला पोढ़दै जाणा

होछ़ी भीणै सुभधुआ ।
चौ़ल पौढ़दै जाणा लो ।।१।।

सिभै देश निक्सै आगै ।
आसा म्लेछ नी रोहणा ओ ।।२।।

लिखी पौढ़िया भलै बणना ।
नपौद नी रोहणा ओ ।।३।।

देश आपणा शोभला शोभला ।
परदेशा किज़ी बै ज़ाणा लो ।।४।।

हौल़ कदाल़ बोलदा लाइया ।
कशी नाज़ पुज़ाणा ओ ।।५।।

बेईमानी नी केरनी बोला ।
पापा मोंझ़ै नी ज़ाणा ओ ।।६।।

आपणी खुशी रा कौतणा बुणना ।
आपणी खुशी रा लाणा ओ ।।७।।

दिहाड़ रात बोला एक़ केरिया ।
देशा सौरदै ज़ाणा ओ ।।८।।

होछ़ी भीणै सुभधुआ ।
चौ़ल पौढ़दै जाणा लो ।।९।।



४५. देश स्वर्ग बणाणा ओ

आसा देश आपणा स्वर्ग बणाणा ओ ।
किर्श केरिया सज़णा-सवारना ओ ।।१।।

ओ पीढ़ी बरशोड़ी न ओरू।
इन्है परदेशिए लुटै आसै।
ऐबै देश आज़ाद आपणा ओ।
आसा देश आपणा स्वर्ग बणाणा ओ।।२।।

ओ औज़ा ढौई सभै आसै।
घौंणी घौंणी निंजा न सुतै।
ऐबै सोइया नी आसा रोहणा ओ।
आसा .... ।।३।।

बोहू लुटै इन्है फिरंगिर ।
थोड़ै ता थोड़ै इन्हा सेठै।
ऐबै सैमा ऐण्ढा नी रोहणा ओ।
आसा.... .... ।।४।।

ओ बोहू थी ओज़ क्लान्त।
गरीब-गुर्ब देशा न म्हारै ।
ऐबै ऐण्ढा नी कोई रोहणा ओ।
आसा .... ।।५।।

ओ देश सा आसा सेभी रा।
कौसी होरी रा नी आथी।
आसा मिलि पौरसू प्रसेदा बहाणा ओ।
आसा .... ।।६।।



४६. देशा सौरदै ज़ाणा

हाड़ै मेरै देशै रै भाइयो।
देशा सौरदै ज़ाणा ओ ।।१।।

थोहड़ै पैदा केरा शोहरू ।
बोहू नाज़ै रै दाणै ओ ।।२।।

ऊझै चमकू सर्गा रा तारा ।
ता बुन्है हिमाचल सारा ओ ।।.......
नाज़ नी केरना माँहगा-२ ।
आसा शोरनू नी रुआणै ओ ।।३।।

चोर बज़ारिए जमा खोरिए ।
देश ता केरू कंगाल ओ ।।
दीन दुःखी री दैय्या केरा ।
माता लोहू बै पींदै ओ ।।४।।

गरीब लोका ता पिशिदै लागै।
प्यारै ता प्यारै नाज़ै ओ ।।
आपुन तुसै एका केरा लो ।
इन्हा दुष्टा बै सधेरा ओ ।।५।।

टुप बेशी नी सोहणा एबै ।
देशा जगाँदै ता उठा ओ ।।
नौऊवें जुगै री नौउंवी गैला ।
नपौढ़ा रा ज़माना नौठा ओ।।६।।

जफ्रड़ माँहणू बै धौंस दसा सी सभिए ।
ऐज़ा सभी मिलिया पौढ़दै ज़ाणा ओ ।।
हिक्ट लागा रोज़ रोज़ तुसरा मुंभै ।
माता सौंदै घौणी वौणी निज़ै ओ ।।७।।

तमाकू लुगड़ी शराब सैगमा हागै ।
बोहू ज़ोई बोहरू व्याधि ओ ।।

ज़िम्हो बेची नी शराबड़ा मारना।
बेची भुनी माता बणदै बकड़वादो ओ ॥८॥



४७. चौला सैंईज़ा बै ज़ाणा

चौला सैंईज़ा बै ज़ाणाड़ै लोको।
चौला सैंईज़ा बै ज़ाणा लो ॥१॥

ठण्डड़ी २ बोला बागर चौलदी।
ठण्डड़ा सा ओ नौंई रा पाणी।
उत्थड़ै २ बोला घौर सी ऊझै।
बुन्है सी नाज़ै री सेरी ओ ॥२॥
चौला ....

देश सा बोला सैंईज़ा रा शोभला।
औखै पाण्डू ऋषि रा बासा।
ओ घौणै २ सी ज़ंगल आखै।
झ_रिये गौलै मेलदी धारा ॥३॥
चौला ....

भौलै भालै ता सी लोका आखरै।
देऊ देवी रै सी प्यारै।
हां लोको उथड़ै धारठू ज़ाइया।
भाला सैंईज़ा रा नजारा ओ ॥४॥
चौला ....



४८. तैरा नखरा लिशकू

पिपला हालगी कसैंईंणिए रूपैं ।
तैरा नखरा लिशकू जेठा शाढ़ै रै धूपै।।१।।

तेरै कौने रै गोखड़ू झ़ूलदै लागै ।
शुण! ज़वानी रै चोर हौआसी सिभै।।२।।

एसा ज़िन्दगानी न मेरा नी कोई ।
मूं झ़ुरना तौभै जुगा २ ढौंई ।।३।।

कौखै कुणी संघै ढुणनू इन्हा घौरै रै झड़ुहलै ।
ज़िन्दड़ी हिशदी लागी पता नी किबै सुल्हे सुल्है।।४।।

कुणी रैस्तै औंढणा थी–
कुणिए नैंई- ।
कुणी बिझू वौणा न रहाशै–
कुणी पेईड़ै भुलै ।।५।

पिपला हागली कसैईंणिए रूपै ।
तेरा नखरा लिशकू जेठा शाढ़ै रै धूपै ।।६।।



४६. शाफड़ा रा शवाल

हाऊँ सा शाफड़ा रा शवाल ।
न वौण-झ़ौकड़ न फूला रा बाग ।।

न किलणिऐ कोतिदा न कदाल् ।
न कोईं पोहुता औज़ न काल ।।

स ता कौसी एणा न ज़ाणा।
कुणी किहांता ता पुछणा हाल !!
कौसी रै नी ओ पोहुंचिदा।
न खोजू, न ता हेरा खोज़िदा ।।
मेरा ख़ियाल ! मेरा खियाल !
घिरदी कुज़ै री झिढ़ न शराल ।।



५०. कुलुवी गज़ल

झ़ूरी री झोका पाँधै प्यार मेरा।
यार मेरा ज़ौली ज़ौली ओ नौठा।
झ़ूरी री..............................।।

बार बार मनाऊ बोहू पतियाऊ।
कौखै रह्णाशू, कुणिऐ की खियाऊ।
झ़ूरी री..............................।।

मूँ ता मौरी ज़ाणा तिन्हा पीछ़ै।
माफी चो मौंगी मैं पर, मनी निछ़ै।
झ़ूरी री..............................।।

तोपदै ज़ाणा औज़ काल नी शूई।
खाई लोड़ी बहणी बराघै-रीछ़ै।
झ़ूरी री..............................।।

थोड़ी ज़ैंही बलागी पीछै रूठा।
प्यार आसा दुहरू रा आथी नी झ़ूठा।
झ़ूरी री..............................।।

झूरी री झीका पांधै ।
यार मेरा ज़ौली ज़ौली नौठा ।
प्यार मेरा ज़ौली ज़ौली नौठा ।
झूरी री झीका पांधै ।।



५१. भाग जागँ

हांइऐ शोभीलऐ हिमाचलान ।
लागा उठदा निहारा ।।
रोजकै रोज म्हारै प्रदेशै रा ।
लागा बणदा शोभला नज़ारा ।।
उत्थड़ै २ हिऊए रैं शिखर बुन्है ।
होरै जंगला री माला ।।
कोइंचै २ सा पौधरा देश वी ।
बोहू गौलं मेलिदी धारा ।।
ग्रां २ पौड़दी लागो जाचा ज़णीचा ।
नौचदै मढ़ी हेरा थाचा ।।
भान्तन, भान्ता सा पहाड़ी बाजा गाजा ।
सनाई-नोपती रा ताल बड़ाए ताज़ा ।।
प्याशै बौर भोरी सी सेऊ सड़का ।
नौ जवानै री सी होरै भड़का ।।
कुणी २ नलकै लागै बिजली पुजी ।
हिमाचली लागै बणदै सुखी ।।
ठौग डुंखरा न वी गाडी चौली ।
गौहरिए पीठी री खौलड़ी खोली ।।

नपौढ़ ओघ पौढ़दै-लिखदै लागै ।
लिखै बाचँदै निकतै सी आगै ।।
बडे २ कारोबार उद्योग सम्हालदै लागै ।
हेराड़ैं लोको गरीबै भाग ज़ागै ।।



५२. नो दुःख सोहणा

बेटड़ी को मरद पौढने घर्टि की ज़ीणा ।
आमा, बापू, भाई पौढ़ना पौढ़दै जाणा भीणा ।।
मण्डी वी पौढ़ू शिम्बला-सोलन वी पौढ़ू ।
हाँड़ै मेरै कुलू रैं लोको आसा पिछैं नी रौहणा ।।
पौढ़ने लिखणै री नी उम्बर होंदी ।
लिखी वाचियानी पौड़दा, दुःख सौहणा ।।



५३. ज़ी ! केरना की

भगवानै ज़ैबै वणाऊ थी माहणू ।
टोल्ही पांधै थी तैवै शुकणै डाहू ।।
हाक पाई–"ओ माहणुआ । ओ माहणुआ !
'तेइऐ बोलू, "ॐ' "नौई रैं बौढ़ा धूँ" ।।
गर्जी पांधै ता बोला सी सब आसै "जी" ।
ज़ुणी भगवानै आसाबै ज़िन्दड़ी धीनी ।
तेई री माहणुए जोंघ्रा मिनी धिनी ।
झ़ै बोलू थी, "ज़ी" "मूं तेरा केरना की ?



५४. ऐबी केरा सो मौज़ा

सिभै भारती ज़ादीरी लड़ाई न थी।
ऐबी हेसरू लाणै आल्ं वीनी थी॥
पौज़ा घिशदै, ढौलिदै मौरदै होरा थी।
ज़ुणा फांसी पांधै चढ़ै ते ऐबी नी थी॥
सरदार केरा सी मौज़ा लौड़दी रौहा सी फौज़ा।
गोली खाआ सी सपाही ऐबी केरा सी मौज़ा॥



५५. क्षणिका

एक कनून।
एक वर्ताव।
नी केरना खून॥
शुणा केरा चुनाव।
खुर्सी री तैंईऐं।
नी डाहणी दाब॥



५६. झ़ूरी

(पहाड़ी पोप सोंग नोपती संघै या आरकैस्ट्रा)

झ़ूरी ता हौआ सा बुरी (२)।
बाहरैन भोतरै तुरी (२)॥
सोठी समालिया डाहा।
शोभ सा ऊंईंबै खाआ॥ झ़ूरी......

नातो-पोती नी ज़ाणदी ।
खरा-खोटा वी नी भाल़दी ।। झ़ूरी·······
श्यामा, श्यामा! रामा, रामा ।
शूका-रूखा ! धामा, धामा ।। झ़ूरी·······
ज़ात-पन्थ ! साधु-सन्त ।
नी जाणदी– आदि-अन्त ।। झ़ूरी·······
प्रेमी-प्रेमिका ! ईश होआ सी ।
एकी-दूजै पाँधै ज़ान देया सी ।। झ़ूरी····
या री झ़ूरी चोचा संघै ।
बा री झ़ूरी मीचा संघै ।। झ़ूरी·······
राधा कृष्ण ! कृष्ण राधा ।
सीता राम ता राम सीता ।। झ़ूरी·······
झ़ूरी न खोट नी होंदा ।
जुग जुग सन्बन्ध होंदा ।। झ़ूरी·······
ऐ ता कौसी बै नी झेलदी ।
तोपी, तोपिया नी मेल़दी ।। झ़ूरी·······
ऐ ता बपार नी आथी ।
ऊंईंरा यार नी आथी ।। झ़ूरी·······
आमा-बापू ! बापू-आमा ,
हे माँ! हे मा!! ओ माँ! ओ माँ !! झ़ूरी····
सभी न माँ बै हेरा ।
ऐसा तत्त्व घनेरा ।। झ़ूरी·······



५७. झ़ूरी री गाथा

(पहाड़ी पोप सोंग)

"माड़ी, माड़ी झ़ूरी ।
गाढ़ी गाढ़ी झ़ूरी ।
तौ संघै सा" ।
"कौखै जैंह सा" ! "आखै जैंह सा" ।
माड़ी माड़ी झ़ूरी ॥२॥

कालज़ा मेरा ।
झाऊं २ पटिका सा ।
दिलड़ू न वी -
धक २ हौआ सा ।
ज़ैबै टू मुँभै -
झ़ूरिए ! मेला सा ।
माड़ी माड़ी झ़ूरी ॥

घड़-घड़िए ऐण्ढा कि बै -
हौआ सा ।
तू वी ता फूलैरी -
डोल्हरी सा ॥
दिहाड़ी राती तेरिए -
झौंख रौहा सा ।
नींज मुंभै -
कौखै एज़ा सा ॥ माड़ो माड़ो..............
ओ मेरिए झ़ूरिये !
कौखै नौठी मूँ छ़ाड़िया !
मूँ ता मौरी २ ज़ाणा ।
घौरान लागी ज़ाणा शहाणा ।
पता नैंईं तौ पिछ़ै !
कि बै हुआ काणा ।

दिलड़ू जौली २ जाणा।
मी उथड़ी हागै पुजी २ जाणा॥

माड़ी २ झ़ूरी। गाढ़ी २ झ़ूरी॥
थोड़ी २ झ़ूरी। नौऊँवी २ झ़ूरी॥

आमा बापू।
या बा वी –
मौरी मौरी नौठै।
केला कज़िऊआ –
घौरा न सा।
ज़िमी-जैगा वी,
बे थाह सा।
तेरी केल्ही,
कमी सा।
पता नैंई किबै तू-
रूशा सा॥

माड़ी २ झ़ूरी। गाढ़ी २ झ़ूरी।
नौंउवीं २ झ़ूरी। थोड़ी २ झ़ूरी।
कुँवारी २ झ़ूरी – तौ संबै सा॥
कौसी बै बैंई।
दिलड़ू मैं –
धीना दा सा।
तू वी सा –
कुँआरी २ सा।
ओ मेरी झ़ूरिऐ।
ओ मेरी बुरिऐ।

मूँ घौरा तेदै ।
किहां पेशणा ।
मूँ बहणी -
मौर मौरी ज़ाणा।
माड़ी २ झ़ूरी । गाढ़ी २ झ़ूरीं ।
थोड़ी २ झ़ूरी । नौंउवीं २ झ़ूरी ।
कुंआरी २ झ़ूरी । कुँआरी २ झ़ूरी ।।
दिलड़ू मेरा वो ।
तौ संघै सा ।
नींज मुंभै वी ।
कोखै एज़ा सा !
राति २ सुपने न ।
तू मेलग़ सा- ।
रोई रोइया- ।
झिकड़ू भौरा सा ।
कोखै बै ज़ानू !
मेरै भलै कसैइयाँ ।
या बा नाति-पोति संघै।
माड़ी २ झ़ूरी । गाढ़ी २ झ़ूरीं ।
थोड़ी २ झ़ूरी । नौऊंवी २ झ़ूरी ।
कुँआरी २ झ़ूरी ! कुँआरी २ झ़ूरी ।।
"चौल दूर परदेशा- बै झ़ूरियै ।
आसा दुही चलै २ जाणा ।
माड़ी २ झ़ूरी । गाढ़ी २ झ़ूरी ।
थोड़ी २ झ़ूरी । नौऊंवी २ झ़ूरी ।
कुँआरी २ झ़ूरी । कुँआरी २ झ़ूरी" ।।

"तौखे जाइया की खाणा !
आमा-बापू नाति-पोती न जाणा।
पिछा छूरी रा माड़ा होआ सा।
झूरी ता जी काणी होआ सा।
झूरी पिछे शोहरू-शौरनू रा।
आसा केरना नी कबाड़ा।
भेद - भाव ता,
सरकार वी केरा सा।
हरिजन डी० सी० वी।
आपणे चोचा रा व्याह,
बाहमण चौकी दारे री -
मीचा संघे कौखे केरा सा !
भाल-शुण केर मेरे बझिया।
तेरा मेरा व्याह ता।
नीं होणा सा।
झूरी ता।
दूई रोजे री।
होआ सा।
फिरी ता ज़ानी बै।
खेजा होआ...सा॥
माड़ी २ झूरी। माढ़ी २ झूरी।
थोड़ी २ झूरी। नौंऊंवी २ झूरी।
कुंआरी २ झूरी। कुंआरी २ झूरी॥
तेरी मेरी। झूरी।
मेरी तेरी। झूरी।
जुगा २ बै रोहणा सा।

फैंभै कैंभै ।
तू मुंभै ।
मेला २ केरी ।
दिलड़ू पाँधै हौथड़ू तू ।
मेरै फेरा केरी ।
दिलड़ू ठण्डा २ ।
ज़ाई केरी केरी ॥
हाऊँ सदा सा ।
धौणिया तेरी २ ।

राश २ झ़ूरी । खार भार झ़ूरी ।
फारी २ झ़ूरी । प्यारी २ झ़ूरी ।
केरा सा । मेरै धौणी बझ़िया ।
मेरै भी ....
हेर थुर थुरी । हौआ सा ।
हाऊँ सा...............
धौणिया सदा -
सदा तेरी २ ॥
राश २ झ़ूरी । खार-भार झ़ूरी ।
फारी २ झ़ूरी । प्यारी २ घ़ूरी ।
थोड़ी नैंई..............
देश देश झ़ूरी ।
तौ संघै सा ।
कालज़ा मेरा वी-
धक २ केरा सा ।
ओ बझ़िया ।
मेरे बझ़िया ।

ओ धौणिया ।
मेरै धौणिया !
ओ सोणिया !
मेरै रोणिया !
पाणा नी —
आसा कज़िया ।
रौहणा आसा ,
सदा ! सदा ! सदा !
बैणी - बैणिया ।।
राश २ झ.ूरी ! खार-भार झ.ूरी ।
फारी २ झ.ूरी । प्यारी २ झ.ूरी ।
देश-देश झ.ूरी । धार-धार झ.ूरी ।।

(दूहै कठै गाआ सी)

ओ माड़ो २ झ.ूरी । ओ गाढ़ी २ झ.ूरी ।
ओ थोड़ी २ झ.ूरी । ओ नोऊंवीं २ झ.ूरी ।
ओ कुँआरी २ झ.ूरी।ओ कुँआरी २ झ.ूरी ।।

(ज़ुदा २ गाआ सी)

ओ राश २ झ.ूरी । ओ खार-भार झ.ूरी ।
ओ फारी २ झ.ूरी । ओ प्यारी २ झ.ूरी ।
ओ देश २ झ.ूरी । । ओ माड़ी २ झ.ूरी ।।
ओ मिठी २ झ.ूरी । खट्टी २ झ.ूरी ।।

(दूहै कठै गाआ सी)

होंदी नैंई.................... ।
कदि वी पूरी.................. ।



५८. पोप सोंग

डोण्ट वरी ।
किबै होली खरी ?
गम नौट टेक हौंसला ।
मार ढघौंसला ।
हेरा - फेरी -
जुणिऐ केरी ।
भोगू सुख, सुख ।
दुनिया हेरी ॥ ....
फंकशन ।
करेपशन ।
उद्‌घाटन ।
उच्चाटन ।
भाषण धुंआ धार ।
ढिस - पटाक ।
मार - काट ।
भौरुवी खाख ॥..................
खून - खराबा ।
बाहलुऐ ।
पिया शराबा ।
धोखा - धड़ी ।
केरा केरा ।
घड़ घड़ी ।
चलाणै मिशन ।
खाणी कमिशन ॥ ....

आका - माका ।
नोचणा गाणा ।
ढोल - ढमाका ।
ज़ोखै बजू ढोलकू ।
तौखै मियाँ मोलकू ।
नीला, पतीला वसीला ।
तुम हम हम तुम ।
लाआ औग दफ्तर गुम।। ....

वाईन विमन एन वैल्थ ।
घपलै करालै उप ।
बलाग नैंईं दबादब ।
लालै हैवन एन हैल्थ ।
माल सारा हड़पा हड़प ।
मौरै गरीब तड़फ तड़फ ।।

डेलीकेट कार हो ।
बिऊटीफुल नार हो ।
डिक्की में मिनी ।
बीयर बार हो ।
एटी री रफ्तार हो ।

ड्रीम लैण्ड रा वाटर फौल हो ।
बजै नगारा ऐन ढोल ।।
करना टविस्ट, शेक, शेक, शेक ।
वाल रूप डांस रोक एन रौल ।
मचाएं ऊधम हैवन एन हैल ।।

५६. अम्बरैं रै बादल़

ए अम्बरैं रै बादल़ ।
किबै नी बोहरदै ।
ज़ीऊड़ू पटाह हुआ ।
निहाल़दै निहाल़दै ॥१॥

दु:खा सौंहदै सौंहदै ।
बीती पिढ़ी बरशोढ़ी ।
लीडर खाँदै हलुआ बाँडै।
शोहरू म्हारै भुखै डाण्ढै॥२॥

ज़ादी मेल़ी ता मेल़ी ।
गरीबाबै कादी मेल़ी ?
पेहील लुटै शेतु भाइए ।
ऐबै शेती खादी काइए॥३॥

राज़ सा म्हारा ।
भुखै सी आसै ।
ए ढोसा आल़ैं -
भाल़ा सी तमाशै ॥४॥

बडै बणाइआ -
नौंचा़ सी आसै।
धीनै नी वोट - ता -
बाहा सी घणासै ॥५॥

घड़घड़िए बोटा मौंगदै ।

सदा झौटिदै भालू आसे।
देश लुट्टु लीडरै प्लीडरै।
रौहै भैईंठी केरदै आसै ॥६॥

विरोधी दलै रै राज़ नशाणै।
तौखै लोहू रै नालै बगाणै।
सारै वोटर डराइया धमकाइया।
तौखै मिल्ट्री भेज़िया वोट बणाणै।

ए अम्बरै रै बादल।
किबै नी बौहरदै।
जीऊड़ू पटाह हुआ।
निहालदै निहालदै ॥७॥



६०. हौसदी खाक

शोभला बर्ताव शान्ति स्वरूप।
हौसदी खाक चिल्कदी धूप।
मैला माहणू कुणिए नो जाणू।
रति नी घमण्ड देवा रा माहणू ॥१॥

हौसदा × × खाकड़ू
शोभला बर्ताव शान्ति-स्वरूपा।
हौसदा खाकड़ू चिल्कदी धूपा।
रति नी घमण्ड-जायरू पाणी।
रूपै री राणी कुणिऐ नी ज़ाणी॥



६१. कुल़ ू रा राम राज़ा

राम राज़ा राम राज़ा ।
राम राज़ा राम राज़ा ।।
औज़ सा सहाज़ा काल सा सहाज़ा ।
कुल़ ू घौरान सेभ किछ़ सा ताज़ा ।।
राम..........................
जैगा जैगा सी जाचा ज़णीचा ।
सेभ, नौचदै गंदै चोचा मीचा ।।
राम..........................
विदा लागी बोला दसमी सर्ग विज़ा ।
तलागड़ी शाड़ान भौरुवी चीज़ा ।।
राम..........................
चौहु कूणी बोला मौउज़ा लागी ।
बोला ज़ानी रा कीसा धीज़ा ।।
राम..........................
देश, देऊ देवतैं हौंथड़ ू जोड़ी ।
धौंतं तौल्ही ठारा करड़ ू रा बाज़ा ।।
राम..........................
ठाकर निकलैं रणकु चणकदा बाज़ा ।
दसमी ठारा करड़ ू रा सहाज़ा ।।
राम..........................



६२. पौढ़दै ज़णा

पौढ़दै ज़ाणा पौढ़दे ज़ाणा बौला पौढ़दैं ।

नपौढ़ा चिठी नी बाचणी पौत्रा नी पौढ़ना ।।
ज़ीणा न पौढ़ा रा ज़ीणा - कज़ीणा ।।
धनै धनै ज़ीणा पौढ़ै दै रा ।।
नपौढ़ा नी पौथी पौढ़नी एकी हौछी रा काणा ।
आसा न पौढ़नी रौहणा चौला पौढ़दै ज़ाणा ।।
ज़ीणा बोला पौढ़ै दै रा ।।
ज़ीणा न पौड़ा राज़ीणा कज़ोणा ।
धनै धनै जीणा पौढ़ैं दै रा ।
गला शोभली बाता बोला शोभाली ।
सौऊखा दूरा दूरा रा ज़ीणा ।।
ज़ीणा बोला पौढ़ैं दै रा ।
ज़ीणा न पौढ़ा रा जीणा कज़ीणा ।।
ज़ीणा बोला पौढ़ैं दै रा ।
पौढ़ै जोंदरै नपौढ़ लागा सा काणा ।
पढ़ाई रा धन सभी न नमाणा ।।



६३. गीत बाँठड़ा

(लोक तथा मिश्रित गीत)

नड़ाना भराउ आज़ी पाणी वै चौली ।
आराशी बिसरी बाई -
बाई भाउआ कम्बला आराशी विसरी बाई ।।
नड़ाना भराउ आज़ी पाणी बै चौली ।
मोंझ़ै मोंझ़ै बेठा देउसर झ़ै गड़ा पाई ।।
पाई भाउआ कम्बला मौंझ़ै २ बेठा झ़ै गड़ा पाई ।। नड़ाना.......
हौथड़ूए धोंदिए मुण्डकुए धोंदिए आराशी विसरी बाई ।।

भाभी रा होच्छा देउअर बड़ा पचिक़ड़ा।
मौंझ़ै मौंझ़ै बेठा बोला झ़ैगड़ा पाई।
पाई भाउआ कम्बला बेठा झ़ैगड़ा पाई। नड़ाना''''॥
पाणी न धाणी आणु शोखै अति आई।
नुहारी न दपौहरी आणी बोला भाभिए।
बेठा छेतान वोला रोंदा कमाई। नड़ाना''''॥
हौथड़ु ए....................
कमाई वोला नौंआँचिए भाभिए।
लोड़ी साए तू बराघै वोला खाई।
खाई वोला नौउंआचिए भाभिए लोड़ी बराघै वोला खाई।
नड़ाना....॥
हौथड़ु ए....................
होती थीए हाऊँ हौला वोला बाँहदा।
तैं ता नीए पुछी बोला बौत न आई।
न आई बोला भाभिए न बौत न आई। नड़ाना''''''॥
हौथड़ु ए....................
कौखै थोए ऐबै ढौई भाभिए।
देउअरा पाँधै तौभै दया नींए आई।
दया नीए आई तौभै बौला भाभिए। देउरा पाँधै ''''''॥
हौथड़ु ए ....
नड़ाना भराउआज़ी पाणी बै चौली।
मौंझ़ै २ बेठा देउसर झ़ैगड़ा पाई।
पाई भाउआ कम्बला मौंझ़ै २ बेठा झ़ैगड़ा पाई। नड़ाना''''॥
हौथड़ु ए धोंदीए मुण्ड़ु ए घोंदीए।
आराशी विसरी बाई।
वाई बोला भाउआ कम्बला आराशी विसरी बाई॥

६४. गील भौऊँरू

(लोक तथा मिश्रित गीत)

[लामण]

एक गायक	श्रोतागण
	(प्रेरणा व सहानुभूति जतलाते हैं)
ओ.......... (१०) ।	ओ.......... (३) ।
ओ.......... (१०) ॥	ओ.......... (३) ॥
छौ़ली खाई तेरै बान्दरै बान्दरै ।	
काऊणी खाई तेरै तोतै ओ.... ॥	शाबाश ओ शाबाश ॥
झ़ूरी छूटी बोला पौरली धारान।	(एक स्वर में)
क़ैण्ढै हुए मेरै मौथै ओ.... ॥	बड़ा दुःख पाऊ हो मेरिए ज़ानिए (एक स्वर में)
ओ.......... (१०) ।	ओ.......... (३) ।
ओ.......... (१०)॥	ओ.......... (३) ॥
छौ़ली खाई तेरै रिछ़ै ओ रिछ़ै ।	
कोदरा खाऊ(पाड़ु)तेरै गोरुए ओ....॥	शाबाश ओ शाबाश
झ़ूरी री दाहिए बोला कौकड़ी फूटी ।	(एक स्वर में) ।
राती रोई रोइया झिकड़ू भौरुए ओ.. ॥	मेरी खरिए तैंब्रै की केरना (एक स्वर में)
ओ.............. (१०) ।	ओ.......... (३) ।
ओ.............. (१०)॥	ओ.......... (३) ॥
बुन्है धिरै बोला तेरा नगर नगर ।	
ऊझै बोल ए ठाऊवा ओ... ॥	शाबाश ओ शाबाश
राती मेली़ बोला सुपने सुपने ।	(एक स्वर में)

ढौक्कू माँजै रा पाउवा ओ.... ।। ओ मेरिए झ़ूरिए
(एक स्वर में)

ओ............... (१०) । ओ........... (३) ।

ओ...............(१०) ।। ओ ....(३ ।।

जोचड़ी खाई तेरै बाँदरै बाँदरै ।

माह खाए बोला तेरै मुशै ओ.... ।। आबाश ओ शाबाथ

झ़ूरी नोठी बोला मौरिया मौरिया । (एक स्वर में)

लाल थोथरू ता रोई टुशै ओ.... ।। ओ मेरी खरिऐ
बड़ी विपता पौईऔ ।।

ओ............... (१०) । ओ........... (३) ।

ओ .... (१०)।। ओ .... (३) ।।

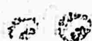


६५. झंझोटी (झ़ूरी) बाम्हणू

(केवल एक ही गायक/गायिका)

मनै री बोला मना न रोही !
मनै रो कुण बुझ़ला !!
कुणी संघै ढुणतू बिथा दिलैरी ?
पता नी कुण शुणला !!
सोठी-सोठिया लो रात ब्रिहाई !
सभी रा मन कोज़ला !!
हेरी हेरिया लो होछी बी थकी! (फुटी)!
कुण दिला न पेशला !!
ढौली आई लो जुआनी बीसारी !
लागा कौखै कौखै भुला !!

व्होहू ज़ाज़ात की केरनी बोला ?
मन नी ज़ोखैं उजला !!
तेई माँहणू संधै की चौणनी बिथा ?
जुण मना रा काला !!
मनै री बोला लो मना रौही।
मनै री कुण बुझ़ला ।।



६६. झझोटी (बेबशी) बामहणू

शह्राई भाली बोला शान्दरा केरू।
दवाई-बूटो, टाण-माण वी केरू।
देऊ देवो वी पुछै रझ (कशी) रोहू नी जोश।
सीझउटी हिशदी लागी कुणी बै देणा दोष ।।
लाज-कारी केरी-केरिया हेरू ।
उआरने केरिया छुण्ड वी सारा नवेरू।
कुकड़-पेहरू राटिआ नी मिटणै क्लेश !
देश की प्रदेश करनी भरनी रै प्लेश !!



६७. जैइण्ड-डफ

(गीत)

जाणा माशटर लायकै रामा।
आसा पौढ़दै जाणा लो ।।
नपौढ़ माहणू बोला जैइण्ड-डफ।

पौढ़ू लिखूंदा स्याणा लो ।।
काला आखर मँहिषी बराबर ।
एकी हौछी रा काणा लो ।।

लिखी-वाचिया अक़ल ढाबा ।
बिहणी अकली नज़ाणा ओ ।।
लिखणा-वाचणा अंगा रा गहणा ।
पोथी विदिया(गूणी)जीजू राणा ओ।।
पौढ़ी लिखी मीच कोयला वैणी ।
काऊड़ा वैणू नपौढ़ याणा ओ ।।
ज़ाणा माशटर कमल कान्ता ।
आसा पौढ़दै ज़ाणा लो ।।



६८. जिहरू

[Catharsis of Pent up Energy of Sex
Here --......Sex.........Restricted]

हो होड़ै जिहरुआ ।
हो होड़ै जिहरुआ ।।
जिहरू शोहरू रघुनाथ ।
सभी संघै आसरा नाता ।। हो........
हौरी धारा पाँधै कौकड़ बाठा ।
तेरी ज़ै ज़ै कार हो दुर्गा माता ।। हो........
नगरा पिछ्वै बोलणा ठावा ।
पौढ़दी लिखदी ज़ाई भाउआ ।। हो........
झिहरू शोहरू शिरढ़ गाड़ा ।

कौसी रानी केरना माड़ा ।। हो ......

झिहरू शोहरूऐ मारू भौंगी रा शड़का ।
ठारा करड़ु ऐ पाऊ सा धूम-धड़ाका ।। हो ......

शाढ़ा महीनै फूली घियाईं ।
सोढ़ी-टोपी डाहणी नाईं ।। हो ......
झिहरू शोहरू झाकदै द्वारै, द्वारै ।
लिण्ढै री खेषड़ी नेई बरालै ।।
झिहरू-शोहरू चौऊंरी बिहाली नौठै ।
जो लोड़ी काली-ज़िमी लोड़ी नाली ।। हो ......
धारा पाँधै आऊ राम शौर ।
व्याह केरना ता औरै मौर ।। हो......
जुठ पौई तुसरी कूणी २ ।
छेकै दया देवी री धूणी ।। हो......
जिहरू-शोहरू लरां केलुऐ ।
आबादी बधी माँहणू पेल ु ऐ ।। हो......
झिहरू-शोहरू शुरु-परीणी ।
भुखै नेतै आँजा तरीणी हो ।। हो......
शाढ़ा महीनै फूली घियाईं ।
राज़ चलाणै रै लछण नाईं ।। हो......
झिहरू-शोहरू उझी-मनाली ।
देशै रै बैकं खाली, खाली ।। हो......
झिहरू शोहरू उटा कसाँदिए ।
नेतै री धूड़ चोल्ही पाँधिऐ ।। हो......
ओ नेता लोकै झीं-झाँपड़ी पाई ।
ज़गा २ लोहूरी नौदी बगाई ।। हो......
पार्टी आलै जनता वै खांदै जाणा ।

मँहगाई बधी खाणा की लाणा ।। हो.......
कृषक रौहे छेता बै जाँदै ।
बपारी लोका लुटदै जाँदै ।। हो.......
सब्ज़ी मण्डी भूसर नगवाईं ।
नपौढ़ शोहरी ब्याहणी नाईं ।। हो.......
झिहरू शोहरू डोमी-दुआड़ै ।
गरीबै रै शोहरू नाँगै घुआड़ै ।। हो.......
झिहरू-शोहरू नौठै ओछंड़ी, ज़ाणा ।
साक्षरता अभिथानान पौढ़दै जाणा ।। हो.......
झिहरू-शोहरू नौठै ज़ौरी मलाणा ।
नपौढ़ माँहणू एकी हौछी रा काणा ।। हो.......
झिहरू-शोहरू सोमसी काल्हा ।
ज़िमी बेचीड़ै ऐबै की खाला ।। हो.......
झिहरू शोहरू नौठै माहुल हाटी ।
आपणी बोली छौड़ी बणै राठी ।। हो.......
ओ बोटा पिछै लागी घीमा-ढीम्ना ।
माँहणू बै गोली गोरू रा बीमा ।। हो.......
ओपौढ़-जोंदरै नपौढ़ टाटा-नाण्ढा ।
पढ़ाई रा नो होंदा बाण्डा-सहाण्ढा।। हो.......
झिहरू शोहरुए खौंजे ज़भांनी रै तालै ।
लिण्ढै रो खेशड़ी बोला नेई बरालै ।। हो.......
झिहरू शोहरू नौठै जोता ज़लोड़ी ।
आसं देशै री एकता डाही लोड़ी ।। हो.......
झिहरू शौहरू आए जोता ज़लोड़ी ।
सोढ़ी खाणै आलै देशै रै कोढ़ी ।। हो.......
झिहरू शोहरुऐ टपू ज़ोत ज़लोड़ी ।

काफरा रा राज़ छेकै मुक्कू लोड़ी ।। हो ....
झिहरू शोहरुए ऐबै ढौकी आरी ।
नज़ुथै मलाज़म देशै री बीमारी ।। हो ....
झिहरू शोहरुऐ ऐबै ढौकू आरा ।
भ्रष्ट हतींदी पार्टी बै खोषड़ै मारा ।। हो ....
झिहरू शोहरू आए गोघड़ै धारा ।
ओ देशा न एक कनून म्हारा नारा ।। हो ....
झिहरू शोहरू पोहुतै पेच्छा धाठा ।
सेभी रिश्वत खोरै रै नाक कौन काटा।। हो ....
झिहरू शोहरुए ढौकू कराहड़ू ।
मन्त्री सन्त्रिए सा देश नवाड़ू ।। हो ....
झिहरू शोहरू लागै भुनदै धाणा ।
परदेशी ज़ाति कौखै बै ज़ाणा ।। हो ....
भारत या सा सभी री एक ज़ायी ।
हिन्दु मुस्लिम-सिख ईसाई सोहरै भाई।। हो ....
झिहरू शोहरू खोली खोली ।
वोटा पिछ़ै लोहू री होली ।। हो ....
जिहरू शोहरू नौठै पाँहुणै फेरुए ।
ज़ादीन ओरू नेतै रै डाँढ नी भौरुए ।। हो ....
पार्टी आलै सेभै रिंघल-राई ।
खुर्सी पिछ़ै लड़ाआ सी भाई भाई ।। हो ....
ज़िहरू शोहरू हामटै धारा ।
मंदिर मस्जिदै री तैईयै लेरा पुकारा ।। हो ....
आसै राज़ै कौढै ता केरी कमाई ।
लीडर लोकै मौड़ धूड़ चौहड़ै न पाई ।। हो ....
मुँएँदै नेतै री करोड़ै री गति ।

गरीब-गुरबै रै हुई भुखै अति ।। हो ......
समाजवादै री केरी की गति ।
ओ लिहरी नेता करोंड़ोंपत्ति ।। हो ......
बहुजन हिताय बहुजन सुखाय री-
बदली मति ।
धर्मनिर्पेक्षै री केरी दाऊरी-
ता गति सति ।। हो ......
देशै रै धर्म निपेक्षै की सा पछियाण ?
थोड़ै री तैंईंयैं बोहू री लैणी ज़ान ।। हो ......
शाढ़ै री बूटोन बेठा झरका ।
पोला खुली लागा धड़का ।। हो ......
शाढ़ै री बूटीन बेठा गुर्घता ।
करनी आपणी तुसै आयु भुगता ।। हो ......
ओ पौढ़ना गुढ़ना लैबड़ै ओठै ।
मार कदाल् नाज़ै रै कोठै ।। हो ......
नपौढ़ लोको ढौका पौटी-स्लेट ।
पौढ़ी लिखिया किज़ी री कटेट ।। हो ......
ओ पशमी लोई न तुरू कम्बर ।
पौढ़ने लिखणै री नी होंदी उम्बर ।। हो ......
बैंडै बैंडै बेठी कटेट ।
आई घड़ी पौए माँजै हेठ ।। हौ ......
झिहरू शोहरू नौठै कूट वाई स्टेट ।
दयाली निभी चाक्टी लागी-
पौए लमलेट ।। हो ......

६८. सुण्ड (सहकारिता) (१)

एकी संघै एक - ता ।
दूई संघै गियारा ।
सेभ मिलिया औंटलै ता ।
खुशहाल होणा देश सारा॥१॥
एकी बै एक ।
दुजै बै दुजा ।
ज्वारी संघै ।
सहारा सा पुजा ॥२॥
प्लेध ज़टज्वार ।
बाँका बुहार ।
सौहूखा कौम ।
प्याशै नुहार ॥३॥
सौहूखा कौम ।
छेकै नबेड़ा ।
ना कौम-धड़ौम ।
ना उथ्ड़ा गेड़ा ॥४॥
मौरना - ज़ीणा ।
व्याह ता बत्तर ।
थोड़ा परसिन्हा ।
ना सहतर-बहतर ॥५॥
एफ चूंज़ एक पांख पराणी सीख ।
दैसै री लकड़ी एकी रा बोझ़ ।
किबै मोड्णी शाहूकारा न भीछ ।
सच़! एकी री फिकर दैसै री सोच़॥६॥

७०. सहकारिता (२)

(घनाक्षरी छन्द)

'मिली-जुलिया केरने कौम' रीत सा पराणी,
ऐहै रीत सहकारिता बुझणी - बुझाणी।
'मिली-जुलिया हौआ सी कौम बड़ै',गल स्याणी,
तूंई री तैईऐं सहकार सभा वणाणी।
गियारा मिम्बरा संघै केरा जाण हछियाणी,
हिस्सा-पत्तिए शाहूकारा न ज़ान बचाणी।
शुणा बे-रोज़गारी मिटाणी कबौतै नी पाणी,
कारोबार चलाणै प' सबसिडी नी खाणी ।।७।।

सहकार क्षेत्रा न भुठी विवरै री नी रीश,
कहावत सा-'ज़ुणी री झीश तेई री रीश'।
शुणा मेली संघै नौचा केरनी नी झीक मीष,
नौउंची सभा बणाआ-की कौड़ ! की पत्तीश।
हेरा अक़ल केरा तुसै भलै री केरा रीश,
'एकता केरा' ठारा करड़ री ऐहै सीख।
ओज़ी कमदमे बाज़ी बरी, नी भौरनी फीस,
डिण्ढ-स्वांग छौड़ा 'विद्रोही' री सा ऐहै भीछ ।।८।।

सहकारिता संघै हौआ सी बड़ै बड़ै कौम,
सरकार वी देया सा खरा ढउवा-धेला।
ए बैंक वी देया सी रक़मा, चलाणै बै कौम,
व्याज वी थोड़ा ता कई सहूलता सी मेला।
केल्है-कलाचै बड़ै फौमा न पौड़ा सा धड़ौम,
एकी पांखै नी मारिदा फड़ा, की केरै केल्हा।

संघै कदम बढ़ाआ रात दिन केरा कौम,
ज़ैबै होला गोंठी न धेला तैबै रोज़ै मेल़ा ।।९।।



७१. दियाली

(लघु नाटिका)

दूई दुहरुए दियाल़ी मनाई
बिहणी चारैं ज़िन्दड़ी निभाई।
झ़ूरी थी दुही न खासिए बड़ी,
कदी नी हुई आपुन तड़ा तड़ी ।।
झ़ूरिए माह शौघणैं डाहै,
धोई धोइया तैबै पिशणै लाए।
औग ज़ालि़या तौउए पांधै,
वड़ी जुन्नो संघै तौल़णैं लाए ।।
रोटी वी तौलि़ भाज़ी सब्ज़ी वी,
बणाई तवै भौरलुन डाहै।
पिछ़ली घेरैं एक बड़ा ता एक होछा,
दूई बौड़ै बणाए ।।
बड़ा बौड़ा थी आपणी तइंऐं ता,
होछा थी लाड़ै री तइंऐं।
तां बै त्रकालै री घेरै खसम आऊ,
रोटी खाणै री तइंऐं ।।
"बड़ा बौड़ा मूं खाणा एई बै,
खाणै बै मुँभैं दै, मुँभै दै" ।।
"ए नी तौभैं खाणै बै देंदी,

तू बहणी नौइए दै नौइए दै" ॥
"खाणा ता मूँ बडाए खाणा,
होछा नी खाणा बड़ा दै, बड़ा दै।
बड़ा बौड़ा नी देली ता मूँ मौरी ज़ाणा,
मुंभै बौड़ा बड़ा दै" ॥
"तू मौर बहणी एकी घेरै हाँऊँ नी देंदी,
तौभै बड़ा बौड़ा"।
"एहलै तबै हाँऊँ मौरदा लागा,
या ता दै मुँभै बड़ा बौड़ा" ॥
"उठ ड़ै उठ मैं लाई नी ता चादर खोटणी,
ता मूँ सा रौंदै बेशणा।
उठ ड़ै उठ ढाबुए ड़ेशी पड़ेशी इन्है लाऊ,
सा फुकणै बै नेणा" ॥
"इन्हा दै मौज़िए फुकणै बै नेणै खाणा,
मूं ता बड़ा बौड़ा खाणा"।
"छौड़लै हठ पजाऊ शमथानी पांधै,
लाऊ इन्हें फुकणा ज़ालणा ॥
छौड़ लै छौड़, छौड़ रुशणा खा होछा बौड़ा नी,
ता बसताइणा तौ।
हाऊँ चौली सा घौरा बै हेरी,
बिहणी मौतिए सा मौरना तौ" ॥
ठीगै वी ढौकी औग लाइया तेईबैं,
तबै शौहली पांधै बशाइया।
"होछै बड़ैए खानू ! होछै बडैए खानू"!!
केरी आइया ता देइया ॥
ज्रां सेक लागा शौहली न उठिया,

घौरा बै दौऊड़ सभी लोका पिछैं ।
लोकै बुझ भूत आऊ आसा बै खांदा,
ठोर मारी एकी दुजै पिछै ॥



७२. भारत या

(गीत)

तौभै चाहणै आला ।
मुंभै – मूं छौडिया ।
परमेशरै री दुनिया न ।
मुंभै – मूं छौड़िया भी ।
कोई हौर वी हौला ।
परमेशर नी केरला ॥१॥ तौभै.......

हाऊं तौ भेए भारत या ।
एतरा बोहू चाहा सा ।
होर कोई एतरा झुरला ता ।
मूं ज़ौली जोली मौरना सा ॥२॥ तौभैं.......

" ॐ तत्सत् "

(१)

शाढ़ी झेची

(लोकगीत इन्नर सराजी)

घौरा बै फीरै ओ शाढ़ी गे झेचिए ।
सी धाना री पीऊँ आली सेरी लो ।।
सी धाना री पीऊँ आली सेरी लो ।
शाढ़ी गे झोचिए धाना री सेरी लो ।।
मात बौसदी गे कुल् बै छाड़िया ।
ऐंढी शोभली धौर्त नी गे हेरी लो ।।
घौरा बै ....
ठण्डड़ी गे बागर ठण्डड़ा गे पाणी ।
सुर्ग कुल् गे म्हारा सुर्ग गौऊँणी ओ ।।
घौरा बै ....
शोभलै पाणी घौणी घौणी वौणी ।
आ गैता रौही मरज़ी गे तेरी लो ।।
घौरा बै फीरै ओ शाढ़ी गै झेचिए ।
सी धाना री पीऊँ आली सेरी लो ।।

(२)

चाहै गौर्म

(लोकगीत इन्नर सराजी)

बाबू रैं होटला गे चाहै गौर्म ।
हीरा लाड़ियै गे चाहै गौर्म ।।

साथरा बछाऊगे बौड़ा नौंर्म ।
हीरा लाड़िएगे चाहै गोर्म ।।
हेरनीं शोभली शोभलेगे कौर्म ।
हीरा बोला लाड़िएगे चाहै गोर्म ।।
सेऊवा केरिया कमौऊगे धौर्म ।
हीरा लाड़िएगे चाहै गोर्म ।।
भाउँती मैला भाउँतागे चौर्म ।
हीरा बोला लाड़िएगे चाहै गौर्म ।।
बाबू रैं होटलागे चाहै गौर्म ।
हीरा लाड़िएगे चाहै गोर्म ।।
मौखरी [गौलेगे लौऊ मोर्म ।
हीरा लाड़िएगे चाहै गोर्म ।।
बाबू रैं होटलागे चाहै गौर्म ।
हीरा लाड़िएगे चाहै गौर्म ।।



(३)

बिथा लै शूणी

(लोकगीत)

ओ म्हारैं मन्त्री कुन्जी लाला ।
बिथा लै तू शूणी ।। म्हारैं.......
केती वौर्षा न शुणी नी जुणिए ।
ते उत्थड़ै ढौगै रै गूणी ।। म्हारैं.......
मीरा बैं धिना बेठर बेठर २ ।
गरीबाबैं पिपली री धूणी ।। म्हारैं.......

खीर खाई इन्हा फिरंगिए लो।
छीब बणाएंदै थी लूणी ।। म्हारै.......
जे गला केरनी थी भाखिए।
ते हौछुए लैई सी ढूणी ।। म्हारै.......
डण्डै रा राज़ डोलिए घोच ।
जनता री लैया तुसै शणी ।। म्हारै.......
म्हिका पिठी रै केरनै नैंई।
कुणी कुणी री लोड़ी शूणी ।। म्हारै.......



(४)

म्हारै पण्डता राज़ कृष्ण गौड़ा

(लोकगीत)

म्हारै वज़ीरा राज कृष्ण गौड़ा।
मना रा सैचा नी दिला रा काला।
म्हारै वज़ीरा राज़ कृष्ण गौड़ा।
कादी नी मारी फौड़ा ।।२।।

ऊभी सा शोभली खराहल सा बाँका।
ठुरदी लागी मोटरा कारा।
म्हारै लीडरा राज कृष्ण गौड़ा।
तू लीडर सेभीन वाऊला ।।
सेभी लोकै लो पैन्टा तड़ाई।
शौऊ शौठ लो मारुती आई।
म्हारै मन्त्री राज कृष्ण गौड़ा।
तू लीडर सेभीन वाऊला ।।

भौला पाणी फूलै री हारा ।
कौखै न केरना गोरू गुआला ।
म्हारै मन्त्री राज़ कृष्ण गौड़ा ।।
तू लीडर सेभीन वाऊला ।।
सेभी रा आदर सेभी री गौर ।
सेभी री बिथा शुणदा ज़ाला ।
तू लीडर सभीन वाऊला ।।
म्हारै वज़ीरा राज कृष्ण गौड़ा ।
मना रा सैचा नी नी दिला काला ।
तू लीडर सभीन वाऊला ।
म्हारै लीडरा राज कृष्णा गौड़ा ।
कादी नी मारी फौड़ा ।
कदी नी मारी फौड़ा ।।

(५)

कैण्ढा शोभला ज़ीणा

[लोकगीत]

धनै ग्राऊँज़ी कैण्ढा शोभला ज़ीणा ।
धनै, धनै ग्राऊँ आँज़ी....... ।।
ज़ीणा बजारा रा ज़ीणा कज़ीणा ।
धनै.................................।।
जीणा ग्राऊँज़ी चिड़ू चगारू रा ज़ीणा ।
धनै......................................।।
ज़ीणा बज़ारा रा धाकै-मुक्कै रा ज़ीणा ।
धनै......................................।।
जीणा बाजारा रा बुरी बासा रा ज़ीणा ।

धनै...॥
ज़ीणा ग्राऊँजी हौरे छेता रा ज़ीणा ।
धनै ....॥

[दूसरा भाग]

दिल रौहा सा हौरा भौरा, गाऊँजी घौरा ।
वज़ारान गाडी हेठै माँहणू सी मौरा ॥
गाऊँज़ी शान्ति रा बासा ठण्डा ज़ाइरू घौरा घौरा ।
सौहरा पौड़दा रौहा सा हार्टे टेका रा दौरा ॥
धनै ग्राऊँज़ी कैण्ढा शोभला ज़ीणा ।
ज़ीणा बज़ारारा ज़ीणा कज़ीणा ॥
धनै .... ।
धनै ....॥



(६)

कुल्ह प्याशा

वेद रामा सत्त प्रकाशा ।
कमल कान्ता कुल्ह प्याशा ॥
रघुनाथा/रघुरामा कुल्ह प्यासा ।
विद्रा दसमी, लागा तमाशा ॥.......
शाला टोपी रा लागा तमाशा ।
वेद रामा बोला लागा तमाशा ॥
टोपी पजामा तेरा लबासा ।
वेद रामा सत्त प्रकाशा ॥.......

कंस मामा, मारू घणासा ।
कृष्ण-सुदामा, धीना दलासा ।।.......



(७)

हाऊली कटै/हाऊलिए

एक गायक	बहुत से गायक
जोतड़ू लंघू !	हाऊलिए !!
बोसदै ज्राणा !	हाऊलिए !!
दसमी लागी !	हाऊलिए !!
काहिका लागा !	हाऊलिए !!
नौचदै ज्राणा !	हाऊलिए !!
हिऊंए रे पूणै लागै !	हाऊलिए !!
कठै सोणा !	हाऊलिए !!
दिलड़ू मेलू !	हाऊलिए !!
झ़ूरी ता लागी !	हाऊलिए !!
झ़ूरी ता मेली !	हाऊलिए !!
खिचड़ी खाणी !	हाऊऊिए !!
ठण्डी बागर चौली !	हाऊंलिए !!
ओ ठण्डा ज्रायारू पाणी !	हाऊलिए !!
मनु री मनाली !	हाऊलिए !!
ओ ज्रादी मेली !	हाऊलिए !!



(८)

हा लामा लोरा (ढिला हेसरू)

हा लामा लोरा ! हा लामा लोरा !!
घौठैं फसू टोरा ! हा लामा लोरा !!
लोमा हेसरू ! हा लाया लोरा !!
ढिलै ढौऊंसी ! हा लामा लोरा !!



(९)

हेसरू

हेसरू बोला ! हे सार !!
ज़ोर नी लाँदै ! हे सार !!
छौकरै गाज़ी ! हे सार !!
मिहणी दारो ! हे सार !!
जोर ला आड़ै ! हे सार !!
आगलै ओ ! हे सार !!
पिछलै ओ ! हे सार !!
भौंझलै ओ ! हे सार !!
छौकरै ओ ! हे सार !!
एह पजाई ! हे सार !!
हां ! हां !! हां !!! हां !!!! हां !!!!........



(१०)

हुशा (काहिका इत्यादि में)

हुशा ४ ! घौहरी देउए री पन्द्रह नुःशा !
एक मनाणी हौरा रुशा !!
हुशा ४ ! शिरढ़ काहिका हुशा ४ !!
हुशा ४ ! हुलकी लागी हुशा ४ !!



(११)

एज़ै मेरी महामायी ए

ओ झ़ूण, मूण केरदी।
एज़ै महामायी ऐ ॥ ओ ....
शेश किबै नैंई पेरदी।
ओ मेरी महामायी ऐ ॥ ओ ....
सुख किबै नैंई फेरदी।
ओ मेरी महामायी ऐ ॥ ओ ....
वीर किबै नैंइ वौरहदी।
ओ मेरी महामायी ऐ ॥ ओ ....

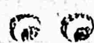


(१२)

लाल्हड़ी गीत (ढीली नाटी)

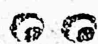
लाल्हाड़ी एज़ै मेरी लाल्हाड़िए।

ठुणक २ एज़ै मेरी लाल्हाड़िए ।।२।।
ओ दमसी ज़ाणा मेरी लाल्हाड़िए ।
लाल्हाड़ी एज़ै मेरी लाल्हाड़िए ।।२।।
दसमी की केरणा मेरी लाल्हाड़िए ।
लाल्हाड़ी एज़ै मेरी लाल्हाड़िए ।।२।।
नौचदै ज़ाणा मेरी लाल्हाड़िए ।
लाल्हाड़ी एज़ै मेरी लाल्हाड़िए ।।२।।



(१३)

आई लोड़ी पाणी रै नाला शिवदासिऐ ।
आई लोड़ी पाणी रै नाला केरै तेरै सो ।।२।।
मेली लोड़ी खाड़ै रै बज़ारा शिवादासिऐ ।
मेली लोड़ी खाड़ै रै बज़ारा तेरै सो ।।२।।



(१४)

झिऊँ चिड़िए बोला झीऊँ चिड़िऐ ।
चिठै दौंढ़ड़ु वोला तुंगै री बीड़िऐ ।।२।।
ठेल्हरू पाँधै बेशणा लो ।
औण्ढणा रोपै री बीड़िऐ ।।२।।



(१५)

ढोलै रा ढमाका

हा लाऊ ढोलै रा ढमाका ।

ज़ीवणु दूई रा बड़ा बाँका ।।
ठण्डी बागर जोतड़ू लंघधी ।
ठण्डा ज़ायारू पाणी ।। हां ·······
झिकड़ू धोणं बं डोड़ै रे बुढ़ड़ू ।
बीड़ी तुगं री लाणी ।। हां ·······
ध्याड़ी च गणा धानै री सेरीन।
राती रोहणा फाटा ।। हां ·······
सेभै मौज़ा कुलू देशान म्हारै।
कौसी नी गला रा घाटा ।। हां ·······
सुखै री मौज़ा लुटी परदेशिए ।
दुःखा रा कुथलू म्हारा ।। हां ·······



(१६)

मूं ज़ाणा जाचा बै ।
बोला ज़ाचा बैं ।
लाणा चितरा पौटू ।
मूं ज़ाणा जाचा बैं ।। मूं ·······
बोला जाचा बै ।
लाणा रेशमी धाठू ।। मूं ·······



(१७)

हीऊँ लागा जीऊँरा बोला जीऊँरा ।
चौलै उझी बै ज़ाणा हीऊँ लागा जीऊँरा।

मूं लागी खाणे री बोला खाणे री।
खाणा मरी रा खोपा ॥ हीऊँ......



(१८)

म्हारे चीनी साहिबा कत्तौडैया।
मुंभे लागी तेरे मौरने री डौर ॥ ....
जादी की मेली हुआ खून खराबा।
रखेज मारी हिन्दुस्तानान्न दौड़ ॥ ....



(१९)

दाणे हागे बै मोटर आई।
गीरू झेचियै बोला मोटर आई ॥........
मारी-काटिया नी होंदी कमाई।
गीरू झेचियै नी होंदी कमाई ॥ .. ....



(२०)

झेचै री शोहरी बड़ी शकीना शकीना।
शिम्बले बजारान औण्ढदी मीमा ॥
गोंठी न नी ढैबुए लाणी थी पीना।
झेचै री शोहरी बड़ी शकीना ॥
नौउंवीं सरकारै री नौउंवीं स्कीमा।
माँहणू बै गोली ता गोरू रा बीमा ॥........



(२१)

(ढीली नाटी)

ओ खेलिदो एज़ै मेरी भाउआ रूपिऐ ।
ओ खेलिदी एज़ै मेरी भाउआ रूपिऐ ।।
ओ जोंघाड़ू शौल़ै मेरी भाउआ रूपिऐ ।
ओ छोशिया देनू मेरी भाउआ रूपिऐ ।।
ओ किझी रै तेलै मेरी भाउआ रूपिऐ ।
ओ गुही रै तेलै मेरी भाउआ रूपिऐ ।।



(२२)

ए आए ते कोटकै ए आए ते सराज़ी ।
नौउंवें धानै री नौहुली केरी
होरै शागै री भाज़ी ।।



(२३)

उमा बतिए चौंखिए ।
दिल कुणी वै देणा लो ।। उमा.......
शिरढ़ लागा काहिका काहिका ।
घौरा किझी बै ज्ञाणा लो ।। उमा.......



(२४)

होछै भाउआ जाल्फुआ आसा पौढ़दै जाणा लो ।
सिभै लोका निकतै आगै आसा पिछै नी रोहण लो।।



(२५)

किझी रो तेरी कलगी ड़ै भौंरा !
किझी रा तेरा चोओला़ ओ !!
चिड़ू मनाल़ै री कलगी रै भौंरा।
शेती ऊना रा चोओला़ ओ ।।



(२६)

ज़ोंघा बै सुथण ता दै गूरा दै गूरा।
टबरा बै नी तुड़का बाहरै सी हूरा हूरा ।।
ओ वामा न नी झिकड़ू जोंघान नी सुथण।
धियाढ़ रिड़का सा राती घौरा सा तूरा तूरा ।।



(२७)

एज़ा खेलिणा सिंह-शियाल़ ।
तुसै मूशै ता हाऊँ बराल़ ।।.......
एकै केरा हेड़ा तुबकिए।
हौ़रै बछाँदै ज़ाआ ज़ाल़ ।।........
सिंह नी खाँदै गाह-पौच।
की हीऊँद की भरयाल़ ।।........



(२८)

(द्रुत नाटी)

नैईं ज़ाणा शोहरिऐ ।

बुध्दू धोणी रै कौमा लो ॥२॥………
पातला फैंभड़ा ।
धियाड़ा सिकला लौमा लौ॥………
आपू तू छोटका ।
शोठा तेरा लौमा लो ॥………



(२९)

हूई दियलियै हूई ।
म्हारै फाढ़ै न भेड़-बौकरी सूई ॥
तुसरै फाढ़ै न कुत्ती-सुगरी सूई ।
हूई दियालिए हूई ॥



(३०)

राम-रावण लोड़दै लागै,
रावण पौऊ बोला लोमा ।
झ़ूठै री हार हुई,
सत-तप आऊ कौमा ॥



(३१)

ढोलकी बाज़ी लोड़ी ।
बाज़ी लोड़ी महाराज़ ॥ ढोलकी ………
राज़ी लोड़ी महाराज़ ।
ढोलकी बाज़ी लोड़ी ॥



(३२)

कौहू धारै रीऐ दहलुआ ।
धारा जाचा बै ज़ाणा लो ।। कौहू ......
होरी जाचा बै चितरा चाधरू।
धारा जाचा बै लूँगी लो ।। कौहू ....



(३३)

फूलकै चाणै बिरिऐ/सुभधुआ ।
कांशी रामै रै डेरै ।। फूअकै.......
निहाली - निहालिया थकू ।
कौखै थी एबड़ी घेरै !! फूलकै ....
कोठी ता नी गौमी लो ।
धीनै किझी बै फेरै ।। फूलकै ....
दोहड़ू बूणी रखणा सुभधुआ.......



(३४)

सहाज़ै रै धिहाड़ै मोड़ी बिसरी ।
हाँज़ी तेथै री तैंइए मिशुऐ ।।
सुलिऐ शोहरू ज़ोणै बे सहाबै ।
हेर ज़िमी नी एणी विस्कै विस्वै ।।...........



(३५)

झाऊँ तीणै भाभिऐ झाऊँ तीणै ओ ।
चीतरा चाधरू झाऊँ तीणै ओ ।।

लोका रा शोहरू दै ज़ीणै भाभिए।
दै ज़ीणै ओ दै ज़ीणै ओ ।।.........



(३६)

घिउआ तेलिया झ़िऊआ।
तेरा नखरा नमाणा ।।



(३७)

घूघती बोला घूघती ।
धानै री सेरीन चूगती ।।........
कैण्ढी शोभली चीड़िये।
नौचदी उत्थड़ी बीड़िये ।।........



(३८)

चिड़ू रा चोकण जाटू रा भौत।
दिलै बन्तिए दिलैदार ।।२।।........
रूपै री राशी दिलै री मौत।
दिलै बन्तिए दिलै री मौत ।।.........
दिलै री नी बौत - कबौत।
नी दिलै री पूछणी जौत ।।
छौली री रोटी आलू रा चार।
दिलै बन्तिए दिलैदार ।।



(३९)

झूरी लाणी बोला ऊझी मनाली।
होली बरणी तू जाति री काली॥
बाल्ह फूकू रूड़िए बोला रूड़िए।
ऊझी सदा हरियाली ॥ झूरी.......
बीसणा बोला लो ऊझी मनाली।
शोभली धूपा - छाऊं एं री जाली॥
झूरी ....



(४०)

कौहू धारै री दहलुआ।
राज़ी जतरा लोड़ी लो॥



(४१)

विदा लागी बोला दसमी।
चौला शाड़ा बै ज़ाणा॥
शाड़ा औण्ढणा-राती रौहणा शाड़ा।
होटला न रोटी खाणी मोरान ज़ाणा॥....
दसमी तिवरी फुकुवी लंका।
जवान दिलै री फुकुवी लंका,॥........
ठारा करड़ू री नी मानता रोही।
नी रोहू सौ पराणा खाणा-लाणा॥........
खाई पिया सेभ तीतर हुए उठी पैंइठा।
बपारिए कुथल, भौरै ग्राहुंज़ी तेआ भैंइठा॥........



(४२)

हाईऐं बोला ऐ गेहिरिए ।
आपु बोला लो झीफा आन्धरै ।।
मोरू नौठैं ठींगै रैं जुआड़ा ।
छौली खाई तेरी बान्दरै ।।.........



(४३)

आली काया थी मेरी ।
दुधै रैं ड़ै दौंदड़ू ।
चानू-मानुए घेरी ओ ।।
ऐंण्ढा की हुआए ।
रामकिऐ भाभिए ।
कुणी विपतै घेरी ओ ।।



(४४)

नौवीं २ बेठी सरकारा ज़ान मेरिए ।
चूटी बोला ज़ेलान गुलामी री ताराओ ।।
नौंवी २ चोली स्कीमा ज़ान मेरिऐ ।
उथड़ा २ नेणा देश सारा ओ ।।



(४५)

बेटी हुई बडड़ी बडड़ी ।
छ़ेका शाहूरैं भेज़ा लो ।।



सोपती री धुन—
(द्रुत नाटी) (नोपती–शहनाई)



(४६)

नौई पारली शोहरिऐ।
तेरा थिफटु डंगा लो ॥.........
शोभला तेरा खाणा-लाणा।
तोभै ग्रोष्टा लाणा लो ॥.........
ढुघी नौई टपुई नि:छी।
बौढ़ै २ ज्ञाणा लो ॥



(४७)

ओरू २ ता सिकै मेरी बामाणिए।२॥
ओरू २ ता सिकै मेरी बामाणिए।
कला केन्द्रान भौऊँरू गाऊ।
दूई बामाणिए ॥.........
हूई झ़ूरी री गला ढुण।
मेरी शोभली गाणिए ॥.........



(४८)

लाल चीड़ियै घौरा बै ज़ाणा घौरा बै।
घोला घौरा बै जाणा वोला घौरा बै ॥
घौरा ज़ाइय की खाणा मेरी चिड़िए।
गेहूँ रा दाणा, गेहूँ रा दाणा गेहूँ रा॥



(४६)

चिड़ू रा लैणा बोला ज़लम ।
बेशणा बोला उत्थड़े डाला ।।
उत्थड़ै डाला मेरी जानिए ।
बोला बेशणा उत्थड़ै डाला ।।



(५०)

कँढी चुटी तू काली हांटिए ।
सारा नेऊ डोभी दुआड़ा ।।



(५१)

राम सिंघै री गेहरिए ।
बोला ठाणै आन्धरै ।।



(५२)

केल्है ता नैईए सोईदा ।
शाटा नाला रा शेला ।।



(५३)

विदा लागी बोला दसमी दसमी लो ।
चौला तलागड़ी शाड़ा बै ज़ाणा ओ ।।
ठारा करड़ू रै दर्शन केरनै लो ।
सुख नमाणा ज़िन्दड़ी न पाणा लो ।।



(५४)

लम्बाँरू दूई रा मेरै लूम्बारूआ।
घिऊआ घटि नी खाँदा लो॥ लूम्बारू.......



(५५)

निर्मण्डा री पिपलिए।
सदा हौरी हौरी लो॥



(५६)

ओ मेरै हौरै डण्ढलूआ।
ओ मेरै हौरी डण्ढलिए॥



(५७)

शहाई भाली वोला सुन्नरा केरू।
सीझ उटी हिशदी लागी रोहू नी जोश।
दवाई-बूटी, टाणा-माणा वी केरू।
कर्म आपणै,सुख-दुःखा रा कुणी वै दोष!!



(५८)

ओरली धारा न चौरली बौकरी २।
पोरली धारान वीणा॥
तौ निहालदै, निहालदैया खापरा हुआ।
ओ ऐबै किहाँ मूँ ज़ीणा॥



(५९)

म्हारै वोला लो वेद रामा ठाकरा।
लाड़ी लाई लोकै रुआणी ओ॥



(६०)

भेड़ाचारी बोला बौफरियै ।
ओ माँहूँ नागै रै वौणा लो ।।.......
माँहणू बैणा बोला छोकरैयो ।
भ्याणसरा उठी नी सोणा ओ ।।



(६१)

घौरा न भेज़ी शोभी टालटी ।
गोभी नीटालदी लिण्ढा भालदी।।



(६२)

लाणा चान्दी रा ।
ओ ज़ूटू मणिए । ज़ूटूए तेरै सो ।।



(६३)

गिरू पाणी री ज़ूनी ।
बौखै म्हारै गराऊँ आँ ।।



(६४)

लाड़ी शहाऊँ लिऐ ।
तेरै मौथै, री विन्दी ।
कैण्ढी बाँकी सज़दी ।।.......



(६५)

कला शोहरू लागा रोंदा।
कला शोहरू बागा रोंदा॥



(६६)

मोंझ़ बज़ारान झ़ौड़िया पौई।
बाबु लोकै री ज़ो ॥२॥.......



(६७)

नाथू री बागान फूलू पुदीना।
भाग देईऐ डोल्हरू धीना॥



(६८)

घौरा बै ज़ाणा सवित्रा।
चौ़लै घौरै बै ज़ाणा लो॥.......



(६९)

सीता लाड़िए सीता लाड़िऐ।
सिखड़ू ज़ोड़ू लोमी ढाढ़िऐ॥



(७०)

बाल्ह फूकू रूड़िऐ बोला रूडिऐ।
चौ़लै ऊझी वै ज़ाणा॥



(७१)

दासी लाड़िऐ पौट्ट बुणूना धारा ।
ज़िन्दैन नी धीना फूलारा डोल्हरू ।
मौरिया फूलै री हारा लो ॥ ......



(७२)

भाणज़िऐ सड़कै सोई रौणा ।
एकी साँज़ट्ट पाँधै ॥



(७३)

ओ मेरियै गोलिए !
ओ मेरी बन्दूकै !
शामा मारू लोकै री झीकै ओ !!



(७४)

हौरा बगिचड़ू रैड सेउआ रा ।२॥
ऊझी नी बौसणा कौम खेउआ रा ॥२॥



(७५)

नाइलूनै री चैपली चूड़ीदार पजामा ।
छ़कै केर भाभिए जाचा बै जाणा ॥



(७६)

हौरी डालिऐ बासणिऐ ।
आई लोड़ी बोला धानैरी सेरी ॥.......



(७७)

झेची शोभली ऊझी मनाली री।
रीश नैंईं बोला साली री साली री।।



(७८)

चोलै, टोपै कलगी कूल ू रा बाणा।
चौलै बोला प्रीमिऐ कूल ू वै जाणा।।



(७९)

कौना बै गोखड़ ू कुणिए वै धीनै थी!
ओ अो २ झ ू रिए तौभै धीनै थी।।
जोंघा बै सुथण कुणिए धीनी थी?
ओ अो २। झ ू रिऐ तौभै धीनी थी।।



(८०)

आगै न नौचलै बान्दर बान्दर!
पिछै न नौचलै मूणी।
छेका कौत गाणिए।
घेसा ऊनै री पूर्णी।।
ढुणनी थीं किछ गला।
जुणा नीऐ ढूणी।।.......



(८१)

सेऊ बागै री पूनिए।
गोरुऐ चोड़ी तारा।। सेऊ.......

आपु नौठी तू छौली रै छैता ।
(ओ) गोरू नौठै ठींगे रैं जुआड़ा ।।



(८२)

होछ़ै बैडै भाई री सायलि ओ ।
कुल छोड़ी चम्बै किबै ज़ाणाओ ।।
शुणा २ मेरै भाई खरा अलियो ।
माह छौड़ी भाज्ञी किबै खाणीओ ।।



(८३)

कार शेटी हणोगी रै नाला ओ !
ओ लता ठाकुरा म्हारै बज़ीरा ओ!!
कोठी पाई राँघड़ी नाला ओ ।
ओ लता ठाकुरा म्हारै बज़ीरा ओ!!



(८४)

ओरै वी ऐ गम्भरा ।
पोरै वी ऐ गम्भरा ।
मौंझै २ गम्भरा बाई ।
मौंझै २ गम्भरा बाई ।।



(८५)

म्हारै देउआ बोला शिवज़िया ।
तेरी ज़ैया ज़ैया कारा ओ ।।२।।.......

चून्हे धिरै बोला खाड़ा बज़ारा।
ऊझै बोला भेरवली धारा॥



(८६)

ओ देवी रेणुका रेणुका।
द्वार आए तेरै लोका॥.......
अर्ज़ी केरै म्हारी पूरी।
ओ देवी रेणुका रेणुका॥
आशा रौही म्हारी अधूरी।
ओ देवी रेणुका रेणुका॥



(८७)

चामुण्डा धारा रिऐ भगवतिऐ।
पाई लैणा दर्शण तेरा भलिऐ॥.......
भला, भला, भला भला केर भलिऐ।
चामुण्डा धारा रिऐ भगवतिऐ॥.......
बार बार द्वार एणा आसा भलिऐ।
चामुण्डा धारा रिऐ भगवतिए॥



(८८)

ओरै दै भाभिऐ मेरी दाची।२॥
देउआ नरोइयणू पाणी पाची।२॥
पिढी सा तेरी सुथण ढिली गाची।
ओरै दै भाभिऐ मेरी दाची॥



(८९)

नौउवीं कराहड़ी रा बिण्डा ओ गाडीं ।
नौउवी कराहड़ी रा बिण्डा ओ ।।.......
मेरी रिपोट मात देंदा ओ गाडीं ।
मेरी रिपोट मात देंदा ओ ।।.......



(९०)

घौंरा पिछूँ बूटड़ी झाँघटी घौंणी ।
आई लोड़ी ज़ाल्पा एदीं किबै नैंई ।।
भूखै री बौक्तै शोखै फुटी कौकड़ी ।
संघै आणी ज़ायारू पाणी बोला ।
भाऊआ विदिया सैंघै आणी ज़ायारू पाणी ।
सैंघै आणी ज़ायारू पाणी ।।



(९१)

तू शोहरी बाहलै री ।
हाऊँ उझी रा झेचा लो ।।
बेटी हुई बोला बडड़ी २ ।
छेका शाहुरै भेज़ा लो ।।



(९२)

हाइंयैं बोला लो मौहरिए ।
खोड़ै रै बुटड़ू हेठै लाऊ शड़ाका ।
हाऊँ आणनू नरेलीन तमाकू भौरिया ।
तुसै तां ढौई बेशिया गेहूँ फड़ाका ।।



(६३)

चल मेरी गदणी ।
धाना जो बाढणै ।
सहाऊगी सहाऊगी ।
ज़ाणा ओ ज़ाणा ॥२॥



(६४)

टिकमै रामा पटवारिया ।
बन्दोवस्त लागा लो ॥
ओ मलाज़म बोला सरकारिया ।
माहवारी हौंदैया सौढ़ी लो ॥
सोढ़ी खाइया बैणू हज़ारिया ।
ओ कौमा बै बोला बमारीलो ॥



(६५)

घौरा पिछ़ै पौऊ जंगल ।
ओ गाड़ी बूटी टाँकाणी ॥
मूँ एणा बोला छोड़ी बै ।
ओ गाड़ी बूटी टाँकाणी ॥



(६६)

मोट ता शराब रौहू मेरा ।
खाली क़प तेरा बिम्बलो ॥२॥
बिम्बलो री आई मोटरकार ।
खाली कप तेरा बिम्बलो ॥

बिम्बलो रा लाड़ा ठाणैदार।
खाली कप तेरा बिम्बलो॥
धारा पांधै होटल मेरा।
एन्दी जांदी रौही बिम्बलो॥



(९७)

एक शड़ाका भौंगी रा मारीं।
हिपणी सैंघै लाणी यारी॥
भौंग बेचणी शुड़क शुड़क।
फौरना बै ज़ाणा मुखत॥.........



(९८)

बैंडै साहिबा रिगे बीबिए।
मुंभै लागणा तेरा बूरा ओ॥ बैंड़ै.......



(९९)

बुढल मामा भगतुआ ओ।
चौल चीनी मारदै जाणा लो॥



(१००)

तारा लाड़िए उत्तमीऐ।
चौलै वोला पौढ़दै जाणा॥
हांईऐं तारा गाणिऐ।
पौढ़दै - लिखदै ज़ाणा॥



(१०१)

आगै ता आगै चौ़ली।
डोलमा सेवका ।
पिछै कालिज़ सारा ओ।
आगै ता आगै चौली॥



(१०२)

शुणै शुणे कान्हा लाड़िए।
उत्तमी ए पौढ़दै लिखदै ज़ाणा॥



(१०३)

सोह केरै गे बाह्मणिऐं।
सदा नी भर ज़वानी तेरै सो॥



(१०४)

तुला लाड़िए तुला लाड़िए।
ठौरा मारी सोऊआ पारिए॥
तुला लाड़िए तुला लाड़िए ।
जेठिया दड़ाऊ ठुँगी कराहड़िए॥
शुणै शुणै तारा लाड़िए शोभलिए।
तेरै लागा दौंदै रा चाऊआ॥



(१०५)

लाल चीड़िऐ सेरी बै ज़ाणा।
वोला सेरी बै ज़ाणा वोला सेरी बै॥



(१०६)

उड़ी ज़ाणा बसन्तिऐ तेरा रुमाल ।२।।
तेरैं चान्दी रै काँटे ता एतरी मज़ाज़ ।
अगर होंदै ए सुन्है रै ता केरदी कमाल ।।
उड़ी ज़ाणा बसन्तिए तेरा रूमाल ।२।।



(१०७)

जोड़ी मौगरू मीझैं तल़ाई ।
सुखै री मौज़ा टीकरै बाई ।।



(१०८)

बेली रामा गुड़ू गुड़ू रा बाज़ा ।
बेली रामा गुड़ू गुड़ू रा बाज़ा ।।



(१०९)

गुठा केल्है लागा थी ।
बुद्धी सिंघै री कताबान ।
खेवा चौलू भरती ।
जाणा हीरा दासिऐ ।।
एक छुटी याणी बालगा ।
दुजी छुटी बुढली आमा ।
पौंजा बीरा वै ।
देणै ज़ोऊलै बौकरू ।
खेवा लोड़ी घौरा बै फिरू।।



(११०)

आंगा फुली मालती ।
चुँघी कुणो दुहरूऐ ?
धारै २ मौती केरी औण्ढणा।
धारा पौड़ले खोभै ।
नालै २ केरी औण्ढणा।
तेई ज़ाइरू पाणी रै लोभै ।।



(१११)

दुई दूहरू रा कैण्ढा प्यार।
घोणी घोणी मौसरै री दाल।।



(११२)

बुन्हे धिरै जौउली माहुला ,
उझै खड़े शराचा ।
जौखै बेठै तें झ़ री रै रौथड़ ,
हुई बिहुणी देऊऐ री ज़ाचा ।।



(११३)

तुली शहाऊली चन्दू गोऊ काला।
हँसे लागा तोपदा फागड़े डाला ।।



(११४)

ओ लाड़ो शानता ।
चोरदाणै रा बेज़ा ।।



(११५)

शूकी धारा रै गोरू ओ।
आमा मेरिऐ नेंईं चारिदै ॥



(११६)

आपु ता थिऐ तू शोभली।
तेरा लाड़ा काल़ा भलिऐ ॥



(११७)

म्हारै भाणजा गोकल नन्दा।
गीन्दू आली खेला ओ ॥



(११८)

म्हारै ठाकरा सत्त प्रकाशा।
कुल़ू केरू पियाशा ओ ॥
शाला टोपी रा लागा तमाशा।
कुल़ू सदाए जाचा ओ ॥........



(११९)

म्हारै बज़ीरा गौड़ा ओ।
कैदी नी मारी फौड़ा ओ ॥



(१२०)

एसा डेहरी हेरी कुण बौसला।
साधू बौसला एसा डेहरी हेरी साधू बौसला॥



(१२१)

सेऊऐ रा सी:ज़न लाणा बोला गुड़िऐ।
सेऊऐ रा सीज़न लाणा तेरै सो॥



(१२२)

शुणै नूपिए ओ लाड़ी नूपिए।
लोका रा शोहरू मारू मुकिऐ॥



(१२३)

ऐण्ढी की उठी ओ नाथिए।
ऐण्ढी की उठी ओ।
बोतला फुटी ओ नाथिए।
बोतला फुटी ओ॥



(१२४)

ओ धौणी नी बुझ़दा गरीबा रा ज़ौर।
ओ गरीब नी बुझ़दा धौणी रा घौर॥
ओ निकमी लुआदी रा की पुछ़णा हाल।
ओ हिक्का बै हिक्कट दिला बै कदाल़॥



(१२५)

एक दूई लोड़ी आपणै शोहरू।
थोहड़ै ज़ैं शोहरू बाँकै ओ॥



(१२६)

तौभै देणा वोला रेशमी सूट ।
बौसै भलिऐ बौसै भलिए ।।
ओ बौसै भलिऐ बौसै भलिए ।
ओ बौसै भलिए बौसै भलिए ।।



(१२७)

हौथड़ु ए धोंदिऐ मुण्डकुए धोंदिए ।
आराशी बिसरी बाई ।।



(१२८)

थोड़ा २ पूछ ओ ठाणेंदारा ।
देवा देवी कुणिए मारी ओ ।।



(१२९)

पाणी रा लोटा ओ भाई रामा ।
पाणी रा लोटा लो ।।
समा ओ खोटा ओ भाई रामा ।
समा ओ खोटा ओ ।।



(१३०)

धारा पाँधै जंगल शांघटी घौणी ।
घौणी लाड़ी नीरमा छमछड़ु कुआ।।
होछी तेरी जीन्दड़ी तो केतरै ज़ीणा ।
ज़ीणा लाड़ी नीरमा छमछड़ु कुआ।।



(१३१)

धारा पाँधै शोभला माता रा मन्दर।



(१३२)

भेखली धारा रिऐ भगवतिऐ।



(१३३)

ज़ीलै गार्डा ओ ।
लाड़ी ता शोभली कमला।।



(१३४)

हिन्दुस्ताना बै ज़ादी मेली ।
फूट पाइया फिरंगी भगी नौठै इंगलैंड ।।
झौशुंए ऐगं ली इंडियन लै ली।
कौखै होला सौ म्हारा इंगलैण्ड ।।



(१३५)

झेची मामिए ओ।
लुड़बड़ाँदी दाचो ।
चौलै बोला गाहूबे ज़ाणा ।।२।।



(१३६)

नौटंकी गीत

बुढल मामा लागी ।
पेटा दाह - पेटा दाह।

बडी नुहशै छौशिआ दै ।
होछी नुहशै लौतै बाह ॥१॥



(१३७)

पूइदै री खापरो रै ।
पेटा दाह - पेटा दाह ।
दुआई री तैंइयैं भेजूंदा सा।
तूइं बै ओकती ।
खट्टी छाः खट्टी छाः ॥२॥



(१३८)

कुंगू डोरी बाहरत-बाहरा ।
माघा महीनै बाहरत बाहरा ।
खिचड़ी खाँदैया बाहरत बाहरा ।
कुंगू डोरी बाहरत - बाहरा ॥



(१३९)

"चुट जलाड़िये चुटै चूट ।
तौभै देनू सुनै रा थूप ।"
"नैइं चुटणा-नइं चुटणा ।"
"तौभै देनु गुगल धूप ।"
"नइं चुटणा - नइं चुटणा ।"
तौभै देनू मौलै पा थूप ॥"



(१४१)

महा देंऊऐ री हेसणिऐ।
देऊ पुजू रींगू रै बागा लो ॥
ओ थोड़ै पुछै देऊ देवतै।
बोहू मौथै रै भागा लो ॥.......
ओ कौसरी केरनू निन्दिया २।
कौसरी केरनू श्लाघा लो ॥
ओ झ़ूरी रहाशी कुणी देशावै।
एबै कुण तोपणा खागा लो ॥.......
ओ कौण्ढी बेठी नू बिहूदी लो।
खड़ी हुई बिहागा लो ॥.......
ओ मिली जुली रौहा मेरी हेराणिऐ।
नी चोड़ना झूरी रा धागा लो ॥.......

(१४२)

हार गुँधै मालणिऐ।
पैंसै देणै चार ॥ ......

(१४३)

पिणी पिछ़ै बोला पिणसू २।
चौहुकी पिछ़ै मलाणा ॥.......

(१४४)

ऐंढै ता नी मौरना थी सेसू पुहाला।
भेड़ै शेटै पात्थर हेठै ॥.......
भेड़ा चारी चन्दरू सेठै।
ऐण्ढै तानी मौरना थी सेसू पुहाला ॥.......
ओ सेसू नौठा गाज़ी ब्रोला मौरिया।
कैण्ढै हेरदै परमेशर बेठै ॥.......

(१४५)

बोला लछी रामा बाह्मणा ।
नारदू नौई रै बौढ़ा ।।.......
खून केरू लछिए ।
पौऊ आपू वी नौई रै बौढ़ा ।। .. ....
किता होला तू घौरा रा लाडला ।
किता होला तू घौरा न डौरा ।।.......
न सुख केरू पेऊकै न शाहूरै घौरा ।
सूर चाक्टी पी-बाह्मणै नागणी रै सौरा ।।

(१४६)

लाहूली पिणै २ री लागी ।
रयंग री बागर ठण्डड़ी लागी ।।.......
सिग २ मिगू चम्बैता पाँगी ।
लाहूली पिणै २ री लागी ।।.......

(१४७)

पांगी पौको थांगी ।
लाहुल पौकू ज़ीरा ।।
मन रखणा धीरा ।
ओ धीरा ओ धीरा ।।.......

(१४८)

सुल्है नौच म्हारै धौणिया ।
सुल्है नौच साहिबा ।।.......
अगिऐ काटी भेड़ा बौकरी ।
पिछिऐ खोली खोला ।।.......

(१४९)

म्हारै बोला लो हरी कूटा ।
पीऊँनी मिमै बन्दोवस्त छूटा ।।....

(१५०)

तू ठैगी अछरिऐ तू ठैगी ओ ।
कम्पणी रै बाबुए तू मारी ओ ।।

(१५१)

कोढ़ा २ कोट मेरै गदिया ।
रुहमै २ सीणा भला ओ ।।........
मुखुमुलै रा थान मेरी पूर्णा ।
रुहमै २ सीणा भलिऐ ।।........

(१५२)

भाभी रा देऊरा बड़ा बेऊरा ।
सोन्हा की खाणा बोला लेहुरा ।।........

(१५३)

हांड़ै मेरै रुपणू पुहाला ओ ।
भेड़ा मूंई घौरा किहां ज़ाला ओ ।।........

(१५४)

छैं केरलै छेलुआ ।
दौहरै नाला ।।........

(१५५)

नीलमा बोला नीलमा ।
शाड़ा लागा सिलमा २।।........

(१५६)

महाराणी त्रिपुरा सुन्दरी ।
रौथ पिढ़ुआ लागी दसमी ।।........

(१५७)

रेलमा रंग बदले।
रेलमा री आई मोटरकार ॥रेलमा॥........

(१५८)

भाई साहबज़ी ! भाई साहबज़ी।
केलंग का बिजली झीलीमीली ॥........

(१५९)

ओ थिपू, चित्रा पौटू दै सरला।
मूं भी नौचदै ज़ाणा मेरी लाल ढुंगिऐ ॥........

(१६०)

पौटु आलिऐ भाणज़िऐ।
पौटू लाणा की साड़ी लो ॥........

(१६१)

ठण्डा जायारू पाणी।
एक घड़ी बेश सजना ॥........
आसा नौचदै ज़ाणा।
एक घड़ी बे सज़ना ॥
कुल्‌ू कीजिश बाणा। ....
कुल्‌ू पौढ़ू रा वाणा ॥........

(१६२)

ऐज़ै म्हारी मनाली बै ओ।
आसा ठण्डड़ी लाणी ओ ॥

(१६३)

की सौदा लेणा ड़े साहिबा।
की सौदा लेणा ॥

हींगं मसाला ड़ै साहिबा ।
हींगं मसाला ।।

(१६४)

झू़री तुरी आँधरै बाहरै ।
तोड़ी बोला पिण्डै न सारै ।।
लिण्डु कीड़ैं रै चटकै २ ।
लोमी सराली़ रै फेरै ।।

(१६५)

धारा पांधै बोला पिपणी बाज़ो
डुघै नाला़न ढोला लो ।
कुलू़ देश बोला शोभला लागो
देश दुनियें हेरो लो ।।

(१६६)

धनै २ बोला कुलू़ री घाटी ।
मुख मुलै री धौर्त शोभली माटी ।।
एज़ दिलड़िए जाचा बै जाणा ।
कुलू़ घौरा २ देऊऐ री नाटी ।।

(१६७)

जाचा बै जांदी हौथा झलांदी ।
ऐंदै जान्दैया कौकड़ो खांदी ।।
कलिजुगै री होछणी २ शोहरी ।
लागी घौरा बौसदी जांदी ।।

(१६८)

इन्हा शोहरी बै ऐण्ढा की हुआ ।
शोभली शोहरी बहकदी जांदी ।।

लागा निछी कौसी कौमा न रेऊआ ।
बागे री चिड़ी फूला २ उडदी जांदी ।।

(१६९)

गला तेरी मिठी मिसरी ।
होछी तेरी निछी २ ।।
झूरी मेरी किबै बिसरी ।
झूरी मेरी किबै बिसरी ।।

(१७०)

शोभली शोहरी कुणी री सा ।
आमा बापुए बोलूंदा सा ।।
तोपेई कोई शोभली छोकरी ।
व्याह तबै आसा तेरा केरना सा ।।



कुछ प्रसिद्ध हिमाचली गीत

(१)

शिव कैलाशों के वासी ।
धौले धारों के राजा ।
संकट २ हरणा ।।
ओखी २ घाटी प्रभुजी ।
बिगड़ा जे पैण्डा ।
समझ २ पग धरना ।।

(२)

हे कांगड़ा धौली धारा ।
मय्याजी मन्दिर बनाया ।।

ऊँचे २ पर्वत मय्या।
भवन जे तेरा।
शेर भरा ललकारा॥
मय्या जी बैकुण्ठ बनाया।
हे कागड़ा.................॥

(३)

रेणुका महा माइऐ २।
बोऊ तेरा जागरा रेशु।
तेभै केरू वांका देशु॥

(४)

तेरी बंसी रा नज़ारा।
ओ कृष्णा तेरी वंसीरा॥

(५)

आगै बोला कृष्ण चालु।
पिछै गोपियां रा जालु॥

(६)

सैंहा जी कैसी बांकी घड़ियाँ।
गूगा राणा जनभैया॥

(७)

विपदा निवारण भगवान्
चिन्ता मन तारै।
काहै को चिन्ता करै॥

(८)

महल बणाया ओ मोहणा,
तेरी सौके दा।

काला उड़ी ज़ाणा ।
ओ पिंजड़ा काली रैणादा।।

(९)

घिर २ आऊदियां ने ।
मेरै चम्बे दियां धारां ।।

(१०)

गल सुणी जा अड़िए तिजोमेरी सौंह
चौड़ै मैदाना डुंघी जे घाटियां
देऊवा रे मेलै सौऊगी नचणा रा चाव ।।

(११)

निर्मण्डा रिऐ बामाणिए, ।
पया बर्खा रा छाला अड़िऐ ।।

(१२)

राजै दिऐ बेड़िए ।
सोतण तू मेरिए ।।

(१३)

धारा माथा लागो खोपरी मामा ।
.... ।।

(१४)

निहलमा भई निहलमा ।
.................................।।

(१५)

अगंना में बोलै काला का ।
सईयां आवो न मोरै द्वारै ।।

(१६)

उड़ी जाइयां कागा लइजाके संदेशा ।
कंत घरा उच्चियां गढ़िया ।
मैं ता मरोड़ूँ तेरी कालियां चूड़ियां ॥

(१७)

माए नीं मेरिए ।
खेडण दे दिन चार ॥
कतदी कतादियां पूणियां जे टुटदियां ।
तगड़ियां ते दिन चार ॥

(१८)

गंगा दे नहौणै जो जांदा ओ ।
मेरै मोहणा वृथा लैंदा लोटकु ।
काछा लैंदा धोती ओ ॥

(१९)

पिया संग खेलाँ मैं होरी २ ।
मेरिए सकिए नड़ाने ॥

(२०)

जा २ कागा लाइके संदेशवा ।
अज मेरे कैंता जी घर अऊणा ॥

(२१)

गलां होई बीतियां ।
घआड़ुए पछाड़ए ।
कजो झाँकादी……… ॥

(२२)

आण भरणा ओ मोहणा ।
तेरै भाइऐ री कितिए ।।

(२३)

बारा जे बर्से कंत घर आया ।
आई बैठा मरुऐ दी छाया ।।

(२४)

पार बोलो ढकारी रिढ़ुआ ।
नाला बोलेया शुक्रुआ मेरा ।।

(२५)

सांढु रे मदाना झीलारापाणी ।
.... ।।



कुलवी नाटक

पोषा मिहनै री दियाऴी

पहली झांकी

दूई पोत्रू : ज़ुणा दसा न बाराह वौर्षे रै हौआ सी आपणै खापरै दादु बै बोला सी) : दादुअा ! दादुआ ! दियाऴी कैण्ढी हौआ साड़ै ? आसै नी भाऴी दी। आसा बै दसड़ै !

दुजी झांकी

दादू : ऐण्ढा केरा तैत्रै दुहिए पेहिल खूब घियाना पाआ ता आपणी या न भौरलू भौरिआ बौड़ै-रोटी आणा।

दुहै पोत्रू : ऐह लैड़ै दादुआ, आणै बौड़ै-रोटी ! खा ता खिया। (त्राहै माऊल़ खाआ सी ता खूब घियाना वी पाआ सी।) ऐबै केरना की ड़ै दादुआ ? दस आसा वै तू।

तीसरी झांकी

दादू : शुणा तुसै दुहिए मुंभै किरड़ै भीतरै पाआ। ता हाऊँ ज़े ज़े वोलनू—सौ. सौ बोलदै ज़ाइत। जां खूब शघड़ा पौड़ला ता मुंभै पीठीन चै क़िआ शैघड़ै फेर घुमाँदै ज़ाइत।

दुहै पोत्रू : (दुहै आपणै दादू बै पाली, पालिए किरड़ै भीतरै पाइया पीठीन चँका सी) हाछा दादुआ ! चोल तैबै तू की बोला सा ?

चौथी झांकी

दादू : हो होड़ै हो, हो ! हो होड़ै हो, हो !
दुहै पोत्रू : हो होड़े हो, हो ! हो होड़ै हो, हो !!
दादू : हुई दियालिए हूई ।
पोत्रू : हुई दियालिए हूई ।।
दादू : ओ शुणाड़ै ! म्हारै फाड़ै न भेड़-बौकरी सूई ।
पोत्रू : ओ शुणा ड़ै ! म्हारै फाड़ै न भेड़-बौकरी सूई ।।
दादू : पारलै बेढू रै फाड़ै न कुत्ती सुंगरी सूई ।
पोत्रू : पारलै बेढू रै फाड़ै न कुत्ती सुंगरी सूई ।।

[तां बै दादू रै किरड़ै रै सौण्ढै खूबा सी ता सौ बोला सा सचिए । पोत्रू बै धोखा लागा सा झँ दादू ज़े ज़े बोलणा सा सौ २ ए बोलणा पौंऊदा सा । दूहै पोत्रू तेई री दाही बै नी खिज़दै । इसी दादू रै दादू नज़र ऐज़ा सी । पर पौत्रू कौखै मना सी । दादू रोणै बै हौआ सा । हारी-फारिया किरड़ै न बाहर छलाँहग मारा सा ता शोठै लैइया पौक्षू बै बुरी २ गाली ठोका सा । पर पौत्रू वी तैण्ढा २ ए केरा सी । खरै केरिया । ढिमिया सी आपुन । लेरा-कचीचा संघे ग्रां रै लोका ढाबिया सी । बोला सी झँ मुशै आयी शाहै पराणः बराली-बै हुआ खले-उड़ा । सौ ए सा:ब आखै हौआ सा । ग्रां रै लोका फिरी तिन्हा ब जांझा सी ।]

पांचवी झांकी

दादू : आइया हो सौण्ढा खुबू ।

दुहै पौत्रू : आइया हो सौण्ढा खुबू ।।
दादू : आइया ड़ै मौरा ।
दुहै पौत्रू : आइया ड़ै मौरा ।।
दादू : तुहरै या बा रै खाणै ओ ।
दुहै पौत्रू : तुहरै या बा रै खाणै ओ ।।
दादू : दाह उठी ड़ै मेरै ।
दुहै पौत्रू : दाह उठी ड़ै मेरै ।।

[दादू शहाकड़ू भौरिया गाल्-द्रोपड़ देंदा ज़ा सा ता दुहै पौत्रू वी तैण्ढै २ बोलदै ज़ाआ सी । ऐण्ढै तरह खलेउड़ा बधदा ज़ाआ सा ज़ां ढौई ग्रां रै लोका नी दुही पौत्रू बै समझ़ाँदै] ।



(लघु एकांकी)

बड़ा बौड़ा

पहली झांकी

[औंधी जंहीं ब्रे सै रें दूई दुहरू सी । लुआदो नहिंदै सी । आपुन बडी झ़ ुरी सा । दियाली रा दिहाड़ा सा । झाँफू मौला रा किर्डा रोपै न पेरिया घौरा पुजा सा । ता तेई री झ़ ुरी 'कौहतू' दियाली रै तौल़वी रोटी, बौड़ै बणादी लागीं दी सा ।]

दुजी झांकी

झाँफू : ओ कौहतुआ ! ओ कोहतुआ !! की लागींदी सा ए केरदी ? (सरोई वैज़ाआ सा)

कौहतू : हाऊँ सा डै बौड़ै रोटी पकादीं लागींदी चूली हागै । एज़ भितरै-ता तौतै २ बौडै रोटी वी खा ।

त्रिजी झांकी

झाँफू : (भितरै तुरदैया) की ए कौहतुआ तेरी चूली ता सा ठीक ! (दियाली न ठठा चौला सा । केरासी)

कौहतू : (तैंथू हौंथा न लैइया) खौषड़ै मारना थी ईं तूतामूँ । तौभै लौज़ शर्म वी सा की नेंई ?

झाँफू : नैईऐं झ़ ुरिए। मैं ता तेरी लेसुवी-टुशवींदी सरोईं री गल केरी। तेरा आपणाए ख्याल तेरी आपणी चूली धीरै जाआ सा ता हाँऊँ की केरनू। (शर्मिया सा दयाऊणी)।

कौहतू : ओ ड़ै ओ ! तौ होली दियाली़ मनाणै री लागीं-दी। औज़ नगर गनेड़ झ़ै सा।

झाँफू : औज़ ता लाणा सा ग्रांई खिचिआ जिहरू।

कौहतू : फुकै थीं तुसै मरध ! औज़ उध-कबाध बका सी सेभ मरध। मां, बेटी ता बहणी वी नी लौज़िदै। बाहलि़या सी जैण्ढै। हांज़ बौड़ै रोटी खा। (थाली रोटी ता बौड़ै देया सा)

झाँफू : एई तौऊए पांधै रा बड़ा बौड़ा दै।

कौहतू : ए नी ड़ै हाऊँ देंदी। ए ता मैं आपणी तैंईएं बणाणा लाऊंदा सा। होछ़ै एई खा। ए सा तेरी तैंईयैं बणाऊँदा।

झाँफू : मूँ खाणा ता एहै खाणा।

कौहतू : ए सा ड़ै मैं आपणी ज़ानी री तैंईयैं बणाणा लाऊँदा। ए नी हाऊँ तौभै देंदी। तू केर बहणी किछ !

झाँफू : शुण ! झ़ै ऊंईं बै नी ना देलो ता मौरना मूँ।

कौहतू : तू मौर बहणी एकी घेरै ऊंईं बै नो हाँऊ कदी देंदी।

झाँफू : केर सवाहे। (कौन्हा पांधै दुहे हौथ डाहा सा)

कौहतू : सवाहै ड़ै। जाती तू राटू। (हौथै रा शारा फेरा सा)

झाँफू : हाऊं लागा सा ओए झ़ूरिए तबै मौरदा।

चोउथी झांकी

(धौरनी वाहुड़ी पांधै लोमा पौड़ा सा)

कौहतू : उठ ड़ै उठ। केरै नखरै। हाऊँ ता रौज़ी तेरै इन्हा स्वांगान। खा होछा बौड़ा। (चकदी लागा सा)

झांफू : तू मौज़िए बहणी शेती चादर खौट।

कौहतू : मूँ सबाहे खौटणी सा शेती चादर ता बेहणा सा हेरी रौंदै।

झांफू : तू मुंभै बड़ा बौड़ा दै। तां ढौईं नी मूँ उठगा।

पौंजवीं झांकी

(कौहतू शेती चादर खौटा सा ता लेरा मारदी बेहा सा पर वड़ा बौड़ा नी देंदी)

कौहतू : मैं लाए ड़ै ग्राईं शदाणे। उठ ! खा होछा बौड़ा।

झांफू : नईं मूँ खाणा ता बड़ा बौड़ा खाणा ते बहणी मुंभै शोहली पांधै किबै नी फुकलै।

कौहतू : मूं केरना ड़ै सचिए ऐण्ढा। खा होछा बौड़ा।

बडा बौड़ा नी हाऊं देंदी तू मौर बहणी बिहा घेरै । उठ ड़ै उठ !

झांफू : नईं खाणा मूँ ता बड़ा बौड़ा खाणा ।

छौवीं झांकी

कौहतू : (ग्रांईं बै शदा साता शुड़क कौना न बोला सा) पर झांफू नी उठदा ता रोंदी वेहा सा) लोका वमाणन पाइया ।

सौतवीं झांकी

फूकणै वै नेया सी ता शोहली पांधै डाहा सी शुड़क कौना न बौला सा) ।

औठवीं झांकी

उठ ड़ै उठ । लाई हा मैं औग तड़ाणी ।

झांफू : तू बड़ा मौज़िए औग । मूं खाणा ता बड़ा सौ बोड़ा खाणा । होछा नैंईं ।

नौवीं झांकी

कौहतू : लै तवै तड़ाई मैं एबै औग । ऐबै तेरै दादु वी तौभै नज़र एणै । हाऊँ ठुरी सा घौरा वै । (ए सब ग़ला शुड़क २ वोला सा)

दसवी झांकी

झांफू : ज़ाँ बै झांफू बै सेक लागा सा । शौहली पांधै न छलांग मारा सा ता ज़ोरै २ बोला सा ।) होछै

बडहै खानू ! होछै बडहै खानू । (शमथानी हागै होछै बड़ै लोका हौआ सी आएँदै । ते बुझा सी झै मुड़दा हुआ ज़िन्दा । ए कोई भूत सा जुण बोला सा झै हौछै बडहै खानू । सब डौरै लाइया दौड़दे दौड़ेदैया आप-आपणै घौरा पुजा सी । तांबैं झांफू वी पुजा सा घौरा ।

ग्यारवीं झांकी

कौहतू : किढ़ै ! आऊ तू गोठू बणिया बौरा बै ॥

'निभू'



(लघु एकांकी)

धगड़

卐 卐

(लुआदी नहिंदै औधी ब्रेसै रै दुई दूहरू सी। दुहै एतरै कमज़ूश सी झ़ै कौसी बै पाणी रा टिपू नी पियाइया राज़ी। ज़ैबै वी कोई पाहुणा एज़ा सा ते ज़ोरै २ झ़रिंगा मारदैया लौड़ा सी ता ढिमिणा कौढा सी। ढिस-पटाक केरदै २ घौरान बाहर निकला सी। दुहै तां ढोई घौरा नी तुरदै ज़ां ढौई पाहुणा नी भैगू। एकी घेरै एक पाहुणा ऐज़ा सा तोई सघैं की बीता सा सौ तुसै हेरा।)

पहली झांकी

झगड़ू : सोन्हा की खाणा सा ड़ै ?

भादरू : घीऊ ता खिचड़ो।

झगड़ू : मूँ ता खाणै दाणै वेढ़वैं सिहड्ड।

भादरू : पुछा ए किज़ी वै सा ए। तू मेरी ता शुणदी नैंई।

झगड़ू : ओ ड़ै ओ। परसिन्द ता तू भी केरा सा ना।

भादरू : ओए ओ ! तबै तण्ढाए केर।

झगड़ू : हाऊं लागी सिहड्ड बणादी। चोपड़ वी सा नोहू रोज़ा न ओरू काढ़ने वै हुआंदा। ता तेई वी कादनूँ। तू गोरू बे गाह-पौच दै ता छून-पाणी वी केर।

भादरू : तौ ता नीए छून पाणी कराणी ?

झगड़ू : लौज़ ड़ै लौज़। (सिहड़ू बणादी लागा सा)

भादरू : काल नीए औज़ '

झगड़ू : फेटै मौर ड़ै। तौ हागै ता मिकम सिन्धी री गला होआ सी। छेका केरी। तौतै २ दाणै वेढुवे सिहढू न हौआ स्वाद।

दूजी झांकी

(दुहै आपणै २ कौमान लागा सी। भादरू गाहूपौत्र देइया एज़ा सा)

भादरू : (बाहरै पौटड़ी पांधै वेशा सा) आणताए नरेली न तमाकू मौरिया।

त्रिजी झांकी

झगड़ू : एह लै तेरी ए या। ता ठऊँ २ केरदा रौह। (नरेली न तमाकू भौरिया आणा सा)

भादरू : केतरी बलाग सा ए। मेरै ता घिउऐ री ब्रासा संघै लाला लागी औलदी।

झगड़ू : एकी तमाकू री बलाग साड़ै। (आन्धरै ज़ाआ सा)

चोउथो झांकी

भादरू : (तमाकू प्रिया सा। थोड़ी देरी ब्राद) ऐतू ए।

झगड़ू : कुणी हागै ड़ै तेरी तेसा या हागै। (ठठा केरा सा)

भादरू : तौन ता हुजतै हेरिया साए । मेरा मतबल खांदा ऐनू की नेईं । (गल वदला सा)

झगड़ू : सिहढू ता बुआल । चौपड़ रौहू काढ़नै वै ।

भादरू : हाऊं आऊ जंगल पाणी जाइया ।

पौंजवी झांकी

झगड़ू : लैंघी मूँ वी साड़ै आई दी । (दुहैं बाहरै जाआ सी ता झगड़ू सरोई वैं एजा सा ता भादरू तमाकू पिया सा)

भादरू : किए हुई तयार ।

झगड़ू : कुणी वै लागांदा ड़ै तू बोलदा ?

भादरू : तौभे मोऐ - सरोई बैं बोलू मैं ।

झगड़ू : एड़ै एज़ ! छेका केर । (जाआ सा सरोई वै)

छौहवीं झांकी

(जां ग्राह खाखीन पाआ सी तावें एक पाहुणा ऐज़ा सा) ।

पाहुणा : ओ घौर आलै ओ ! ओ घौर आलै ओ !! (दुहै दुहरू नडिप निहारै न बाहरै निकला सी)

दुहरू : कुण सा ड़ै ? की कौम सा ?

पाहुणा : ढौल आई सा ओ भणोइया ! ढौल आई सा ओ दाइए ।

दुहरू : ढौल ड़ै ढौल ! राज़ी-बाजी ता सा ड़ै ।

पाहुणा : हमै सब सी ताऊण्डै तकड़ै उरमपुरै काड़णी आलै । ताम्है ठीक-ठाक ता सीं !

झगड़ू : हाऊं आणनू नरेलीन तमाकू भौरिया ताम्है

वेशा । (झगड़ू तमाकू भौरिआ आणा सा ता दुहै पींदे लागा सी । झगड़ू थोड़ी देरा बाद महा-भारत शुरु केरा सा) ।

सौतवीं झांकी

भादरू : झगड़ुआ । ज़ाता औग भौरिया आण ता चिलमा न । ए ता हिठी ।

झगड़ू : (चिलम हौथा न लैइया) । कि ड़ै! गोरू वै गाह पौच धिना की नईं ?

भादरू : नईं ओ नईं । लुणुआदा नी आथी ता देणा कौन?

झगड़ू : तेरी या रै खसमा । जा एबैज़ा । जवाड़ा सेरीवैं ता गाह आण लुणिया ।

भादरू : तेरै बाबै री ज़ोइए । तैरी होछी फुटींदी सी । एवैं निहारैं न ज़ाणा मूं गाह लुणदै ।

झगड़ू : ज़वै तौभै पेहिल बोलू थो । तौंन हेंरिदा नी थी ?

भादरू : तू दस तैं रोटी-पाणी केरी की नईं ?

झगड़ू : घौठै री कुल्ह थोड़ै हौढ़ै ड़होसींदी । मूँ पिशण किहां पिशणा थी । घौरा न पिठा ता न चाउल । ता न भाजी न दाल ।

भादरू : तैवै दिहाड़ी केरदो की रौहीए ?

झगड़ू : तेरी ते कौहत भेड़ा ता नुआली कुणी चारनी थीं ड़ै ? तेरै तेई बाबा एणा थी ?

भादरू : घुठणून ज़ौं ता पिश। पाहुणे वै झ़ै ता रोटी खिया !

औठवीं झांकी

झगड़ू : ज़ौं सिए कौ ? हाऊँ चौली पेऊकै वै (बुहार चकिया भादरू रै चौढ़ पांधै मारा सा)

भादरू : (भादरू झिकिया सा ता मुसल चैका सा ता चौढ़ै न ढौका सा झगड़ू वै)। तेरै बावै रीं ज़ोइए चौलींदी कौवै ?

झगड़ू : (झिका संघै शोठै रा पटाका मारा सा) मूं कि ड़ै तेरी नोकरन वणिया रौहणा। हाऊं चौलीं आपणी धर्म वहणी हागै।

भादरू : (मुसल् मारा सा) एह लै तवै। हारै खा होर खा। (दुहै लौड़दै २ दूर भगा सीं)

झगड़ू : एवै ता मूं, तौ भौरिया बी नी ड़ै एणा !

भादरू : गोरू किए भुखै मारनै। तू ता सा परसतण। हांऊ चौलू गाहा आणदा। (किरड़ा दाची चैका सा ; (दुहै एकी दुजै पिछै भागा सी)

नौवीं झांकी

पाहुणा : (सोचा सा मना न) ऐबै की केरनू ! कौबै ज़ानू। रात बी बड़ी पौई। रस्तै न चोरा-डाकू री वी डौर सा। तबै एण्ढा केरनू औखै रात काटनू। होर केरनू की। शेला वी बड़ा सा।

द्वारी ताकी वी बन्द केरी नौठै। ज़ुहरी न गाहू री लोली जोंन्दरै रौहनू तुरिया तबै। रात ता काटणिए पोई लोमै सफरान भुख वी बड़ी लागींदी थी। मेरी खरिए कौबै जानू ? (ज़हरी न तुरा सा)

दसवीं झांकी

झगड़ू : ज़ाता ड़ै हेर ता पाहुणा भगू कीं नईं। (शुड़क बोला सा)

भादरू : (शुडक ज़ाआ सा ता एज़ीया बोला सा) मूँ न ता नीं हो हेरुवा। तू हेर भला ज़ाइया।

झगड़ू : (टुा टुपै जाआ सा ता हटी एजा सा) झाकू ड़ै मैं। पोऊड़ै पांधै कोइये नी आथी बेठां दा। नौठा हौणा। खासी बलाग हुई। (पाहुणा शुणदा रौहा सा शुड़क)

भादरू : चौल तबै झुरिए। खाअम ब्याली।

ग्यारहवीं झांकी

झगड़ू : हेरी हाऊं कैसी नार-चकी बुहार (आपणी शेखी लागा सा दसदी)। (पाहुणा आगै २ सिका सा)।

भादरू : हेरू हाऊँ कैसा बुसल-चकू मुसल (आपणी भादरी दसा सा)। (पाहुणा दरवाजे हागै पुजा सा)। जों दुहै एक २ ग्राह घिऊवा न चोकिया सिहड़ू रा मुंहां न पाआ सी। तां बै

पाहुणा टुपा-टूप दुई दूहरू रै मुण्डा हागै खड़ै होइया बोला सा)।

बारहवीं झांकी

पाहुणा : हेरू हाऊँ कैसा धगड़-बछाऊ हैठे वगड़ ।

: निभू :

' ॐ सतसत '



कुलुई एकांकी —

डुल़कणू

स्थान : घर का वातावरण

पहला दृश्य

शुक्रू—ओ किमतुआ ! किमतुआ-कौ नौठिए तू ?

किमतू—आई ड़ै-आई । आपणै एई शौंधै वै धिख-राम ता देया कर !

शुक्रू—ओए ! ओ गोरू बै गाअ धीना कि नैंई ?

किमतू—आपु दै ड़ै । मेरै नी देईदां हाऊ हुई तौ हागै झैण्ढी हाल़ण ।

शुक्रू—किबै ! बज़्हिहाणिए, औज तू थमरुइं दी किबै सा ? झुरी संघै ता मैला ढुणनी बुझ़दी यै नैंई ।

किमतू—झुरी संघै गैला केरने वै तू मेरा लगाए की सांड़ै ?

शुक्रू—किबै तेरा खसम होला न हाऊं ? मांण्हू साही ता तैं गैला ढुणनीए बुझ़िदी ऐ नेंई पता नी कुणीरा चेट्रू सा तोबै शौतांदा लागांदा ? हांऊ जैण्ढै तेरा बैइरी सा !

किमतू—खैसम झ़ै होंदा तू-सा सून्है रै डुल्कणू नी देंदा ? छो शोहरू ज़ौणै तौ संघै ! पर औज़ दोई डुल़कणू नी देऊऐ तेरे बोलै ?

शुक्रू—किबै ए हज़ीं ला मौरू तेरा ?

किमतू—सौ धीना ड़ै तैं ठींगा बै ! मेरी तैंइयें तैं की झैं केरू ? पौंज़ा शौऊआ रा जेऊर थी केरूंदा शटामा लिखदी घेरै। सौ तंग ता धिना नीं ? लुब्धुऐ आपणी जोई सुब्धू सु-है संघै पींउली केरी।

शुक्रू—देनु न देनु ! पर केरनू की। इन्हैं झिगटैए मारू।

किमतू—औड़ै ओ छौ शोहरू हौणै ढौई नी धीनै फिरि किड़ै तौ शौहली पांधै पुजिया देणै ?

शुक्रू—तू कि अ खापरी हुई ? हाज़ी ता ज़वान सा।

क़िमतू—ओड़ै ओ पिछले खैसमा संघै भी पौंज़ शोहरू ज़ोणै पर तेंईये वी किछ नी धीना। तैभै ता तौभै बौसी थी हांऊ। ज़वानी न नी लाऊ-खाऊ तैबै किड़ै बुड़िदी घेरै लाणा-खाणा ? तेरी ता ऐहै मरज़ी होली। तौ संघै ता जिन्दगीऐ बर्बाद सा। सम्हाल ऐसा शोहरू री फौज़ा ता गोरू-बौच्छू ता भेड़ा बाकरी-हांऊ ता चौनी तेऊकै बै। हांऊ हुई उमर भर इन्हा लिहरै झलांदी :

दूसरा दृश्य

स्थान— घर का आंगन

शुक्रू—प्रतापुआ ! ओ प्रतापुआ !

प्रतापु—किड़ै बाबुआ ?

शुक्रु—हांड़ै बेटैया-गोरू बै गाअ ता देड़ै तेरी सौ या ता नौठी रूशिआ पेऊके बै।

प्रतापु—रेबतु, डुगलु लिह्तु ता ब्रेस्तुए बी सा झीं-झापड़ी पाईंदी (चारों बच्चे खूब झगड़ते हैं आपस में और स्टेज पर आते हैं। किमतू भी थोड़ी देर में वहां पहुँच जाती हैं। और शुक्रू और प्रतापु उन्हें देखने जाते हैं)

चारों बच्चे-ऐहू या मातै ज़ांदी-बाबु ता आसै मकाणा ए। (किमतू को पट्टू से पकड़ते हैं तथा खूब रोते हैं।)

किमतू--ध्रौहड़ा ड़ै तुसरै तेंई बाबा बै।
(सब चले जाते हैं और उतने में शुक्रू जो अन्दर चला गया होता है-मंच पर हुक्का गुड़गुड़ाते हुए प्रवेश करता है। तभी शुक्रू का मित्र रामदास आता है)

रामदास—किड़ै शुक्रूआ ! कि हाल-चाल सा ?

शुक्रू—राम ! राम ड़ै बाहिड़ा !

रामदास—राम-राम भाई ! राम-राम ! औज़ तू मौथा ढोकिया किबै सा बेठांदा ?

शुक्रू—की दैसनु ड़ै बाहिड़ा ? दिहाढ़ी थो बज़िहै रै मौला बोहंदा, त्रकालै ढोई निह्च्छै छौड़ी बोला नबाड़िया-ज़ा। एई बौषैं री थी आखीरी बग़ार देणैबै। तेसा बनाड़िया ए आऊ थी ऐबै पै। पर बौझिए वी सी ऐंढै झै सारी कसर कौढ़ी। पीठी रा बी निकता लोषड़ा। सौन्हकी घेरै नी चाही बै बी पुच्छू।

रामदास—लोचूआंदा ता सा ना पर औज़ किच्छ खासै गप सा। एबड़ा दु:खी मैं नी तु कंदी बी बुझू।

शुक्रू—ब्रेस्तुआ ! ओ ब्रेस्तुआ !

ब्रेस्तु—की ड़ै बाबुआ ?

शुक्रू—तमाकू ता आण लै मौरिया (तम्बाकू भर कर लाता है पीते हुए) काल राति न बाहिड़ा आसै आपू दूहरु न बादुए तुंई पीछे लाई तेसै औज़ पेऊके बै ठौर।

रामदास—बादुए किज़ो पीछै ड़ै ? (तम्बाकू पीता है तथा खांसता है)

शुक्रू—हांड़ै बाहिड़ा बोहू वौर्षा न औरू थी सौ डुलकणू मौंगदी लागींदी-ता शटामा लिखदी घेरै थी पौंज शौऊरा जेऊरे देणा फेरुं दा। ता ते नी मेरे बोले देऊए मुंभे लागी एबै झौंख ! पता नी एली बी कि नैंई। एकी धीरै लिहतू ज़वान हुई दी सा। धौरा रा बेहणा मौठा।

रामदास—तेरा बेटा ज़ालफू कौ सा ड़ै ?

शुक्रू—तेई रै वी सा काला न ओरु डांढा न दाह निकती दी-औज़ सा ग्राहणू मियें हागै भेजूंदा सा ओकती री तैंईयें। हटदैया एणा सा तेई 'या' बौतिए।

रामदास—जालफू री या बौतिए कि तेरी या बौतिए ड़ै ?

शुक्रू—नैंई ड़ै जालफू री या बौतिए। तू ता गाज़ी ठैठै पौऊ।

(डुगलु लखड़ के साथ प्रवेश करता है)

डुगलू—बाबुआ ! हांऊ ता चौलूड़ै पिशणा पिशदा घौरठा हागै ।

शुक्रू—पशदा ता चौलू पर इन्हा नुआली बै बी ने चारनै बै ।

डुगलू—हाच्छा तैबै झीफा जोन्दरे रोहतू चारदा हौरतै ता ए टेकदीए नैई ! (जाता है)

रामदास—जुवान ज़ोई लोड़ी हौआ सा गाज़ो पतिआइया डाई ।

शुक्रू—सौ ता सा-बोला गोंठी न धेला-ता ज़ोई लौड़ो थी ठेला । आपणी लाड़ो बै सुन्हें रुपै पीऊली केरना कुण नो चाहँदा ?

रामदास—ऐंडी शोभली जोंई तौभै फिरी मेंलणी बी नैई ।

शुक्रू—बोला सो झै शोभली ज़ो हौआ सा खतरे लायक ।

रामदास—खैतरै लायक ना नैई खैतरनाक बोल ।

शुक्रू—हांड़ै आसै सी ना नपौढ़ ओघ ।

रामदास—हाच्छा हांऊता ना चौलू । मुं सा कौहू धारै रै टेकु मिये संघे कौम । हैटदी घेरे आऊ ।
(जालफू का प्रवेश)

शुक्रू—किड़ै बैटैया-तेरी दाह कैंढी ?

जालफू—हांड़ै बाबुआ तेई खसैईए दूईयै पूड़ी भ्रिनी ओकती री खाणे री देरी कि एकै भौगरी छुटी शोध्रनो री दाह दुह नौठी सीधी पाकिस्नाना बै ।

शुक्रू—किड़ै तेरी सौ या किसी ।

जालफू—सौ भी आई ड़ै बाबुआ, पर सौ सा मौंला खोलदी खुड़ा न ।

(शुक्रू खुशी के साथ खड़ा होकर आवाज़ लगाता है) धन भाग भाई ! देऊ नागै पेज़ी होली । किमतुआ ! ओ किमतुआ !

(किमतू पीठ में गोबर का किलटा उठाए प्रवेश करती है) 'किड़ै ? की गल ? झौंकुआ ता नीं थी ? डुलकणू देई तू नी ता मैं 'तू राढू ।

शुक्रू—ज़ा ज़ा आँपणा कौम केर । शिरढ़ काहिका आऊ ऐवैं नैड़ । तंवे होली गल ।

(ग्राम सेवक का प्रवेश)

ग्राम सेवक—की ड़ै शुक्रुआ की हाल-चाल सा ? तकड़ा ता सा ?

शुक्रू—ढौल आई सा होज़ी ! (झुक कर नमस्कार करता है)

ग्राम सेवक—(उत्तर देते हुए) ढौल । तेरै केतरै शोहरू-शोरनू सी ? पौंज की छौह ?

शुक्रू—छौंह सी ज़ी ।

ग्राम सेवक—तेरे ग्रां न बोहुऐ लुआदी नी होणें रा डाक्टरी प्रेशन केरू । तू किबै नी केरदा ? बोहू शोहरू हौआ सी ज़ानी बै झिगट ।

शुक्रू—पेहिले किबै नी जी बोलू ? इ ऐण्ढा वी हौआ सा । हौआ ता होली एई सैमें न कैई गैला पर-आसा ओघा बै की थोघा ।

ग्राम सेवक–केरना तौ तैबै प्रेशन की नेंईं ?

शुक्रू—हां जी ! किबै नेंईं । किमतू ता हांऊं दुहै सी आसै घड़-घड़िऐ सुज़णै न तंग हुएं दै ।

ग्राम सेवक–लै तैवै तोभे खुशखबरी शणानु ।

शुक्रू—कैढी खुशखबरी जी ? (अपने बेटे को आवाज़ देता है) 'ज़ाल्फुआ ! ओ ज़ाल्फुआ !

ज़ाल्फू—की ड़ै बाबुआ ?

शुक्रू—तुमाकू आण ता ड़ै लोमी ठुट्ठी न भौरिआ । ग्राम-सेवकै होरै खुश-खैबरी लाई शणाणी ।

ग्राम सेवक–किबैड़ै तैं नी शुणी ? (उतने में ज़ाल्फू का प्रवेश)

ज़ाल्फू—हांड़ै बाबुआ सौहरा न एकी जीपा न धौंतरू जेहें लागांदा थी–तूंईं नी थी क़िछ्की बोलणा लाउदा । किछकी २० सुतड़ी पोड़गड़म जैंहें शुणुआ मूँ न ।

ग्राम सेवक–हां ! हां ! ठीक बोला सा तेरा बेटा ज़ाल्फू । औज म्हारैं मैंत्री होरा नी तोड़ा रै पैटै बोंडणे ता शिरड़ सैड़का रा उदघाटण बो केरना सा । किबै ड़ै तौभै नी ढौन हुई ।

शुक्रू—नेंईं ओज़ी ।

ग्राम सेवक–ता २० सूत्तरी प्रोग्रामा रै मुताबक २० फाइदै सी गरीबा बै पज़ाणै लाएंदै । तूईं रे मताबक मज़ारे मालक बैगै ता ज़िमी रै करज़ै माफ हुए । एक ता बगार निभी ।

शुक्रू—होर की-की सा झी इन्हां २० सुत्तड़ी न बौहूं वा ?

ग्राम सेवक–तै बौहलदा लैणैं बै, ता बेज़ै ता खादी लैणैं बैं करज़ा ता नी लैऊंदा ?

शुक्रू—किबैं झी बौहलदा लैणै वै थी–एक हज़ार रपैय्यै लैं दै।

ग्राम सेवक–ऐबै हेरी इन्हा ढैबूए देंदा। ऐंढै एहै कर्जै ता माफ हुए। धौरा ब्रणाणें बै, जरसी गाई ता हौला बोलघा लैणै वै कर्जै मेलणै ता होर बोहू किछ सा। गरीबै रै ता पौऊंब्रारै हुंए ड़ै।

शुक्रू—हां जी! मैं ता पौंज़ शौऊए री पेहिलो किशत थी तयार डाहि दी। किमतुआ! ओ किमतुआ! लैए शुण। खुश-खैबरी धाफा न झै पौंज़ शौहू रपय्यै सी डाहें दै तूईं रै तू आपुबै डुल्कणू आण माघू सनयारा न लैइया।

ग्राम सेवक–ए गैला केरी त ना तुसै फिरी ऐबै। चौला एवै ज़ाणा आसा राहीसण सेऊआ हागै। ता होर नौऊंई-नौऊंई गैला शुणा तुसै ऐबै तौखै मैन्त्री होरा न। तिन्हा दसणी ए सेभै गल्ला तौखे।

(शुक्रू प्रसन्न होकर यह गीत गाने लगता है तथा उसका परिवार भी उस गीत में शामिल हो जाता है)।

ओ आगै तौ ओंढैं ओ इन्दरा/पिछै औंढली बिन्द्रा ओ।
आसै सी तौ संघै-संघै/छौड़ी आसै घौणी निन्द्रा लो॥
ओ आगै...............

देशा बचाणै रा हेसरू लाऊ/इन्हा गरीबौ री तैंइएं लो।
ओ आगै .... ॥
बीहा सुतरै रा सुत्तर फेरू/दीन दुःखी री तैंईएं लो।
विपतै रे चेटू-भूत दूर भगाए/पेठी सुख शान्ति री गैंगा लो
ओ आगै .... ॥

— : इति चामुण्डा अर्पणमस्तु : —

' ॐ तत्सत् '



तृजा खण्ड

कहाणी

(१) रिछ ता माहणू

कोसी समै री गल सा ! एक माँहणू नौठा बौणा न छिड़ी आणदा । जां सौ छिडी रा भरोट्टू कछोइया धौरा बै लागांदा थी एन्दा-तांबै तेइऐ एक रिछ हेरू ।

विझ वौणान ता रौहू सौ जंघबड़ंघा दौड़दा । पर जां हेरू तेइऐ झ एबै बचणै रा मोंका नी रौहू । तेइऐ भरोट्टू शेट्टू ना फ़ेटै ता झटपट धौरनी लौमा पौऊ ता आपणा शाह रोकू ।

रिछज़ा नेड़ पुज़ू, तेइऐ सौ आपणै शूंठा संधै सिंघू सारैन । रिछा बै बाशह हुआ झ ऐ मुआंदा सा । द्रौढ़ने बै ता रौहू नी । (रिछ जिन्दै माहणू बै द्रौढ़ान सा खांदा नी आथी । ढौगा भ्याऊ शेटा सा)

रिछै हेरू, ऐबै की केरनू एईं रा । तेइए सौ उथड़ै ढौगा पांधै नेऊ शैटणै बै । जां सौ माँहणू न आगै होइया लागांदा थी भालदा झ ढौग उथड़ा सा की नेईं । तांबै तेईं माहँणुए सिम्भरी हौछिए हेरू । तेइएं ठोक एक लोता रा पटाका ता सीछ-राछ शेट्टू ढौगै भ्याऊं डुहौ नालान ।

ऐण्ढी तरह हिमती संधै तेइए थारै रिछै शेट्टू ता आपणी जान बचाई ।

(२) गोंठू ता गिदड़

एकी समै री गल सा एक थी गिदड़ ता एक थी गोठू। गिदड़ रोज़ बौड़ै-रोटी पकाइया डाहा थी दिहाडी एज़िया खाणै बैं ता तबै ज़ाआ थी सौ कौमा हागै। एक गोठू रोज़ शुड़क चाणै तेसरै बौड़ै-रोटी खाइया भगा थी।

एक रोज़ सौ ज़ां दिहाड़ो घौरा बै रोटी खांदी आई, तेसै की हेरू झ़ै बौड़ै-रोटी ता कोई खाइया नौठा! भुख ता बड़ी थी तेसा बै लागींदी, पर केरदी की। सौ भुखिए कौमा पांधै भी नौठी।

दुजै रोज़ बी ऐणढाए हुआ। ऐण्ढा केर दै २ या बोहू दिहाड़ै निकतै। पता निःछा लागी झ़ै बौड़ै-रोटी कुण खाइया ज़ा सा!

एक रोज़ तेसै स्कीम सोची। तैदी सौ तिसै कौमा हागैन डेरै (घौरा) बै आई। गोठ आंधरै तुरिया शुड़क रोटी खांदा लागांदा थो। तदी तेई बै भगणै नी मेल़ू।

गिदड़िऐ पता लाऊ झ़ै आंधरै सहा कोई शड़शड़ात केरदा लगांदा। तेसै शूका बाड़ ता गाह आपणै डेरै फेर आणिया लाऊ।

हाका पाई, "ओ डेरैया। ओ डेरैया!!" कोई निःछा शुणी। ज़ोरै २ बोलदी लागी, "ओज़ा ढौई ता ए डेरा रोज़ हाका शुणा थी औज़ किनै निःछा शुणी! फुकणा पारै मूँ ए डेरा। तेई डेरै रा केरना ए की ज़ुण हाकी नी शुणदा।"

गिदड़ हौआ सा बड़ी चलाक! तेसै बोलू, "येक बार भी हाक पाइया हेरनू फुकणै न पहिल-कोई शुणला ता। ओ डेरैया!" गोठू ए केरी डौरै लाइया, "ऊँ"। गिदड़ियै

पछियाणू, "आछा ता तू साड़ै माऊऐ रैया खस्मा ! तैं एतरै रोज़ हाँऊ रोज़ भुखी मारी !"

तेसै तड़ाई झिकै लाइया औग। गौठू दियाऊणा जौलुदा २ ज़ंगला ब्रैं भगू।



(३) लेणै-देणै रै सम्बन्ध

एक बार लड़ाई लागी। सभी फौज़ी बै हुकम हुआ लड़ाई बै ज़ाणैरा।

सब आपणा २ सोठा-सभाला केरदै लागै। एकी जवानै टिकम रामै आपणी सारी कमाई फौज़ी कटीनै रै ठेकेदार नन्दू हागै जमा कराई। तेई दियाऊणै रै आगा-पिछा ता कोई थी नी।

जवानै बोलू, "ऐही ठेकैदारा झै ता ना हाऊं लड़ाई न बचिया आऊ ता मेरी सारी रकम वाफश केरी। झै भाल नौठा मुँआ गोली लागिया ता रकम रौही तौभै।"

तांबै विगुल बजू ता पलटना सँधै सौभी नौठा।

बोहू अरसे बाद ज़बै लड़ाई बन्द हुई। किछ नौठै-भुंऐं ता किछ बचिया पलटना संछै बाफश आए। तिन्हा मौं झै सौ जवान भी थी। सभी जवान बै आप आपणै परिवारा संछै मिली जुलिया ऐणै री लोभी छहो मेली।

टिकम रामै एन्दी घेरै जां आपणी रकम नन्दून मौंगी। नन्दू ता बाबा कतईमुकरुआ। गल निभी नभायी। बोहू-अरसै बाद भी लड़ाई लागी। तेइऐ भी तण्ढाए केरू। ऐई फेरै टिकम-राम ना लड़ाई न शीद हुआ नन्दुए नन्द बुझी।

नन्दु ठेकैदारै रै लुआद नैईं थी होंदो। एइँ फेरै तेईँरै एक चोच बी हुआ। बड़ो खुखी मनाई। चोच जां जवान-पतान्न हुआ। हेरना शुणना एण्ढा झै राज़ कुंअर कौ पाणा !

किछ अरसै बाद नन्दु रा ऐ बेटा हुकम चन्द साथरै न पौऊ। रझ़ २ लाजकारी केरी निछा राम होई ता निःछा राम होई। बड़े २ डाक्टर बैद शदाए। रगेज़ै रै मुलरवान तंग नन्दुए माँहगी न माँहगी ओकतो मंगाई। पर राम जी हुए ए।

हुकम राम कमजोरी संघै थूकै तौल्हदा हुआ। ठेकैदारै लाजकारी केरिया मन पतियाऊ। मौरदो घेरै हुकमचन्दै आपणै बाबू नन्दु न पौंज़ रुपय्यै मौंगै ता ते कौसी होरी जवाना बै घिनै ता आपणै बाबू बै हुकम केरू केरू ? "शुणलै नन्दु ठेकैदारा ! तु जुणी माहवारी री मेरी कमाई बै मुकरुआ थी ना सौ मैं औज़ पूरी केरी। हाऊँ सौऐ फौज़ी जवान टिकमराम सा। औज़ मेरा तेरा सहाव बेबाक। ता हाँऊ एबै चौलू।

मेरा तेरा कोई सन्बन्ध नी रौहू ऐबै" एण्ढै ढुणदै ढुणदैया हुकम रामै नन्दु ठेकैदारै रै फाड़ै न आपणै प्राण धी नै।



(४) भगवान् नेड़ हौआ सा

एबी घेरै लड़ाई लागी ता सभी फौज़ी जवाना बै हुकम हुआ झ़ै शादी शुद्धा ज़वान आपणै २ टबरा बै घौरा छौड़िया एजा ता होरा मिली-जुलिया ऐंजा ता फिरी पन्द्रा-रोज़ा आन्धरै २ बाफश एज़िया लड़ाई बै ज़ाआ।

एकी ज़वानै री जवान ज़ो सुजदी थी ता सौ वी तेसा बै घौरा पंजांदा नौठा।

दुहै रेला न बेठै। सफरा केरदै केरदैया तेई री लाड़ी (ज़ो) पहिली घेरै भारै न हौलकी ता हुई पर दयाऊणी जांदी रौही।

फौज़ी जवान घौरा ज़ाणै वै नी रौहू। किबै झ तेइरी छुट्टी निभी-ऐई तालान।

एकी जंगलै रै स्टेशना न रेल रुकी। तेइऐ लाड़ी खाच कौतिया पौथी ता तेसरै माँऊ डाहै नांगै ता ज़िन्दा चोच डाहू तिन्हा माऊं संघै तड़ाइया। ता आपू बाफश होइया लड़ाई वै नौठा।

दूई, त्रा साला बाद लड़ाई बन्द हुई ता सौ जिन्दा-ज़्रा गदा कम्पणी बै बाफश आऊ। सभी फौज़ी जवाना वै आप-आपणै घौरा जाणै री छुट्टी मेली।

सफरा न सौ तेही स्टेशना पांधै उतरू किबै झ तेईबै आपणी लाड़ी रीं बड़ी भारी याद आई। तेई रै मन नि:छा मारुआ ता सौ तेही खाचा हागै नौठा तेसा वै मिलदा।

तौखै ज़ाइया सौ की भाला सा झै तेईरा सौ चोच माऊँ वी पींदा ला गांदा ता खेलदा पटिकदा वी लागांदा। थोड़ै जैंह रोज़ ता सौ चोचै रा माऊँ संघै रा मोह छड़ांदा रौहू। जबै मोह छुड़कू ता ताज़ी लाशै रै माऊँन दुध निकलना भी आपणै आप बन्द हुआ ता लाश वी शौड़ी तबै ज़ाइया तेइऐ तेसा लाशै रै माऊँ दबाए ता आपणा याणा घौरा बै आणू।

मौरिया वी मारी ममता ता भगवानै री माया पांधै तेई वै बड़ी भारी हैरानी हुई ता सौ भगवाना रा भक्त वणू।

ए हुई बीतीदीं गला सी कोई गप नी आथी। 卐卐

(५) राज़ै रै शीगं

कौसी ज़माने री सच्ची गल सा। एकी राज़ै री चोल्हीन एक शीगं लागांदा थी। ऐसा गला रा पता राज़ै री राणी वै वी नी थी। किबै झ़ै शरमै रै मारै सौ आपणी पघड़ी कदी नी थी खोलदा।

तेई रै नाई बै केल्है थी ऊँईंरा पता जुण तेईरी झ़ामत बणाआ थी। राज़ै नाई बै बोलूंदा थी, "एई नाइया ! झ़ै तैं कौसी संघै दसू झ़ै राज़ै रै शीगं सा ता मूँ तेरा कोल्हू घाण केरनै ध्याणा सा हेरी", राज़ा थी बी बड़ा भारी ज़ालम। दयाऊणै ज़ैंह नाइऐ डौरै रै मारै नी कई साला कौसी संघै दसू। होर ता होर घौरै रै टबरा संघै नाण नैईं दसू किबै झ़ै कौहिचै भेद खुलू ता तबै आई बारी।

एक रोज़ तेई रै बड़ीऐ अति आई। तेइऐ की कैरू झ़ै ज़ंगला न नौठा। तौखै तेइऐ खरा डुघा खाच कोतू ता तूंईं भितरै तुरिया आपणी भड़ास कौढी। "राज़ै रै शीगं। राज़ै रै शीगं।....राजै रै शीगं..............। ज़ैबै तेईरी हलफली बेठी तेइऐ खाच भौरू ता घौरा बै आऊ।

बड़ै अरसे परान्त तेसा ज़गा न एक सनाई रै पौत्रू रा झ़ोट लागा। एकी धणंतर हेसीए एक चान्दी री सनाई बणाई एकी सनियारान ता तूंईं बै पौत्रू तौखैन चौड़ ता आपणी सनाई री पिपणीन लाऊ। तेइऐ बुझ़ू झ़ै मूँ आपणी चान्दी री सनाई सभी न पेहिल राजा साहब बै शणाणी। शाइद मुंभै कोई बड़ा इनाम मेल़ला।

जां सौ पिपणी मुंहा न पाइया पीं २ केरिया नौऊवीं चान्दी सनाई लागाथी बाजदा तां तूंईं न सुर लागा

निकल़दा—"राज़ै रैइ शीगं !" तेइऐ पिपणी सनाई न खोलिया भी मुँहा न पाइया पीं २ केरी ता भी सनाई न तड़ाइया बाज़दा लागा थी—तां भी सौहै सुर, "राज़ैं रैइ शीगं। राज़ै रैइ शीगं।" तेइऐ सौ पौत्रू बदलू होर लाऊ। भी सौहै सुर—"राज़ै रैइ शीगं। राज़ै रैइ शीगं।"

राज़ा जुण राम फर मांदा लागांदा थी। तेई बै आई झ़ीक ता तेइऐ मशहूर बेलू हेसी गोल़ा ढौकू, "तेरी माऊऐ रै खसमा कुणिऐ दसू ड़ै तौभै झ़ै राज़ै शीगं सा। सच्च २ दस, नी ता मूँ एबै तेरा कोल्हू घाण केरनैं ध्याणा।"

बेलू हेसी दियाऊणा राज़ै साहब रै जोंहौ—पैइरै पौऊ। "महाराज ! नारायण ज़ाणै ! कौसिऐ नी दसू। इन्हा पौत्रू न ए सा कोई करामात।" राज़ै सौ पौत्रू रै झोटा हागै नेऊ। भी ट्राई मारी। भी सौ है गल।

तेइऐ सितू नाई शादाऊ। सौ शुड़क जै हैं। पूछू। "किड़ै सितु नाइया तैं खोजू ड़ै बेलु हेसी वै झ़ै राज़ै रै शीगं सा ? मूँ ता तेरी ए करतूत लागा सा हौर कुणी वै पतासा झ़ै राजैं रै शीगं सा। ऐबै मूँ तेरा कोल्हू घाण केरनै ध्याणा। नी ता तू सच्च २ दस किहा ऐ भेद खुलू ?"

दियाऊणा सितू नाई बो राज़ै रै जोंधै पैइरै पौऊ ता तबै तेइऐ सारा किस्सा शणाऊ झ़ै ऐण्ढा २ हुआ तबै जांच-पड़ताल केरने बाद कौ हिंचै तिन्हा दुही रो ज़ान बची।

राज़ै तबै सौ पौत्रू रा झोटर पेचणै धियाऊ।



शुध्दि पत्र

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
३	५	करवा	कखान	१६	१०	भेदु	भेद
४	८	शभला	शोभला	२०	९	दअमी	दशमी
४	१८	शुचा	शुची	२०	९	बढासी	बढासा
५	२	सूघै	सघौ	२०	२३	हारे	होरा
५	९	झौकहूं	झौकड़	२१	१०	धौरै	धौरैरी
६	२२	आस	आसा	२१	११	लोक	लोका
७	२	पौहपा	पौहरा	२७	३	डोला	होला
७	९	आरा	आसा	२८	४	ढोहा	टोहा
७	१६	वाणी	पाणी	२८	१९	केरा	केरै
७	१८	श्वानी	खानी	३०	२३	औलादी	लुआदी
८	४	वणाए	वणाणे	३२	२३	दैबुआ	ढैबुआ
८	६	परभेशरै	परमेशरैरी	३३	१०	आल	आलै
८	१७	चीड़	चीड़ू	३३	१६	लौड़ी यहाऊ कशी	लौड़ी कशी ए यहाऊ
१०	६	सर्गा	सुरगा				
१०	२०	रक्राहली	खराहली	३३	२३	तसरा	तुसरा
११	२	अप्ला	आला	३६	९	धौरै	धौरै रै
११	८	जणा	जाणा	३७	३	आऊ	शाऊ
१४	२	मिड़िदी	भिड़िदी	३७	१७	की	की पै
१४	१४	उबार	उआर	३८	११	शूड़	गूड़
१५	१३	असताण	असताणा	३९	३	फ्ला	पूला
१५	१५	र	रै	३९	६	टोक	टोकै
				३९	१०	श्रृगार	श्रृंगार
१६	३	घुढै	छुढै	४०	१४	बौरा	बौण
१६	४	झ टै	बुटै	४०	१४	फौकड	झौकड़

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
४०	१९	पत्तोड़	पत्रोड़
४१	३	सहौत	सहोतू
४१	१४	भागली	कागली
४२	९	री	सी
४३	८	चाली	चौली
४३	२१	अपने	उपने
४४	१	सिहड्ड्र	सिहड्ड
४४	४	दुख	दुखा
४४	१९	औण्ढण	औण्ढणा
४५	७	सर	सूर
४५	१५	मुण्ड	सादामुण्ड
४७	३	भाइयो	भाइयोकी
४७	८	एक धौर्त	एकी धौर्त
४७	११	भौटिदे	झौटिदै
४७	१३	बरखोडी	बरशोडी
४७	१४	किज़बै	रैंकिज़बै
४८	१०	--गणतन्त्र दिवस	
४९	१०	रीझउटी	सझीउटी
५०	१६	भारत	भारत देश
५१	८	हेरा	डेरा
५१	१८	सौघै	शौंघे
५२	१३	भालै	मालै
५४	१९	कलुऐ	काल ऐ
५५	७	शुकी	शुकी रोटी
५७	१७	—आधुनिक युगै रै	

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्धि
५८	११	नेलणी	मेलणी
५९	४	हेरा फेरा	हेरा-फेरीकेरा
५९	२४	शरबा	खरबा
६०	५	युगा	जुगा
६०	१९	अमरै	अमरैरी
६१	६	सैभा	सैमा
६२	७	नपोद	नपोढ़
६३	४	स्वर्ग	सुर्ग
६३	२३	हाड़ै	हाँड़ै
६४	१७	नौउवी	नौउँवी
६७	२	ता	××
६८	६	भाग जागै	भाग जागै (गज़ल)
६८	१९	बौर	घौर
६८	२३	ठौग	ढौग
६९	४	गरीबै	गरीबैरैं शोभलें
६९	१५	वणाऊ	बणाऊ
६९	२१	मांहणुए	मांहणुए नी
७१	१४	सन्बन्ध	सतबन्ध
७१	२०	मा !!	माँ !!
७२	१०	टू	तू
७२	२२	छड़िया	छछोड़िया
७६	१	तेदै	तेरै
७६	४	मौर	मौरी

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
७६	१८	—	पौड़ी
		२ ज़ाणा	परछिहां
७७	३	छ़री	झ़ूरी
७८	१६	घ़ूरी	झ़ूरी
८१	१०	उप	ठप
८५	२	न पौढ़ा	नपौढ़ा
८५	३	दै	दैं
८५	५	न पौढ़नी	नपौढ़नी
८५	१०	ज़ीणा	ज़ाणां
८५	१२	न पौछा	न पौढ़ा
८५	२३	देउसर	देऊसर
८६	१२	होती	दोती
८६	२१	देउसर	देऊसर
८६	२३	मुण्डुए	मुण्डकुऐ
८८	५	आबाश ओ	शाबाश ओ
		शाबाथ	शाबाश
८९	५	मना रौही	मना न रोही
८९	१०	टाण माण	टाणा-माणा
९०	१८	रघुनाथ	रघुनाथा
९१	१	रानी	रा नी
९१	८	शोहरू	शोहरू नौठे
९४	१२	गुघंता	गुघता
९४	१३	आयु	आपु

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
९५	४	औंटलै	ओंढलै
९५	२२	एफ	एक
९६	७	हछियाणी	पछियाणी
९६	१७	बरी	बुरी
९६	२३	फौमा	कौमा
९७	११	धोइया	धाइया
९७	१५	तवै	तबै
९८	२२	ढ़ौकी	ठौकी
९९	१३	तौ भेए	तौभै ए
१०१	८	छाड़िया	छौड़िया
१०३	१७	ऊभी	ऊझी
१०४	९	नी नी	नी
१०५	५	गऊँजी	ग्राउंजी
१०५	१८	प्यासा	प्याशा
१०७	५	लाया	लामा
१०७	९	हेसरू	तेज़ हेसरू
१०८	२	हुशा	हुशाउद्बोधन
११०	६	चगणा	च़ु-गणा-
१११	६	मै भै	मुंभै
१११	१७	शक़ीना शक़ीना	शकीना
११२	८	गुट्टी	गुटी
११७	२	बरणी	बहणी
११७	१७	शाड़ा	दिहाड़ी
११७	१८	मोराज़	मोटरा
११७	२१	रोही	रौही
११९	१७	हूई	दुई

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
१२१	१५	सीझ़उटी	सझ़िउटी	१४७	८	सी	सी कौतहू
१२२	२	बौफरिये	बौकरियै	१४७	११	उठ ड़ै उठ	कौतहूः
१२२	८	शोभी	गोभी				उठ ड़ै उठ
१२२	१२	लाणा	लाणा	१४७	११	ही	हो
		चा़न्दीरा	चा़न्दी	१४७	१२	बड़ा	बौड़ा
			रा मणिए	१४७	१२	सौ	सौए
१२२	१७	बौखै	बौसे	१४७	१३	बड़ा	ला
१२३	३	बागा	लागा	१४७	२०	झांफू	झांफूः(
१२३	१९	ढाढ़िए	दाढ़िए	१४८	३	ए	ऐ
१२४	७	रौणा	रोहना	१४८	८	बौरा	घौरा
१२५	३	साली	सालै	१४९	९	तोई	तेई
१२५	१०	कुणिऐंवे	कुणिए	१४९	१८	नोहू	नौऊ
१२५	१९	पूर्णा	पूणी	१४९	१९	कादनू	काढ़नू
१२७	२	भेरक्ली	भेखली	१५०	४	मिकम	निकम
१३१	१७	सोऊआ	सेऊआ	१५०	६	ह्रौआ	हौआ सा
१३६	३	भलिए	बौलिऐ	१५०	११	मौरिया	भौरिया
१३६	४	भलिए	बौलिऐ	१५१	११	मीए	नीए
१३६	५	भलिए	बौलिऐ	१५३	१२	हारे	होरा
१३७	१४	झौशुंए	झौखुए	१५३	१५	परसतण	परासतण
१४२	१८	पौक्षू	पोत्रू	१५३	१७	भागा	भगा
१४२	२१	मुशै	मुशैरै	१५४	४	जहरी	जुहरी
१४४	७	रैं	री	१५४	६	दसवीं झांकी	
१४५	९	बहणी	बहणीन			तुरासी)	दसवीं झांकी
१४५	११	थाली	थाल् न				(दुहै शुड़क सरोईबै
१४६	१८	शोहली	शोहली	१५६	९	शौंघै	शौंथै

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
१५६	८	ओए ! ओ	ओए ओ !	१५९	२२	लखड़	खलड़
१५६	११	थमरूइं	घमोरुइं	१६०	३	पशदा	पिशदा
१५६	१२	संघैता	संघैता तैं	१६०	३	बे	बै
१५६	१५	ढुणनीए	ढुणनी	१६०	७	सा	सी
१५६	१६	जैण्ढै	ज़ैण्ढै	१६०	७	डाई	ड़ाही
१५६	१८	तू-सा	तू-ता	१६०	८	न	न नी
१५६	१९	ओज	ओज़ा	१६०	१०	ना	नी
१५६	१९	दौई	ढौई	१६०	२०	शोधनो	शोधणी
१५७	१	मौरू	भौरू	१६१	४	पेज़ी	भेज़ी
१५७	२	घीना	धीना	१६१	७	झौंकुआ	झौंखुआ
१५७	४	जोई	ज़ोई	१६३	१	वौहूँवा	बौन्हूदा
१५७	१६	तेऊकै	पेऊकै	१६३	४	हज़ार	हंजार
१५७	१६	बाकरी	बौकरी	१६३	७	बोलघा	बोलधा
१५७	१७	झलांदी	झलांदी !	१६३	१२	खैवरी	खैंबरी ।
१५७	२०	मुक्रू	शुक्रू	१६३	१२	घाघा	घांघा
१५८	१	देड़े	दैड़ें ।	१६३	१२	झ़ैं	ज़े
१५८	८	चारों बच्चे	चारों बच्चे:	१६३	१२	रपय्यै	रपैय्यैं
१५९	५	मौरिया	भौरिया	१६३	१३	आपुब	आपुबै
१५९	१२	जेऊ़रे	जेऊर	१६३	१५	केरी त	कैरी-त
१५९	१४	घीरैं	धीरैं	१६३	२१	तौ	ता
१५९	१५	मौठा	भौठा	१६४	४	गैंगा	सिंद्रा
१५९	१८	सा	सौ				